About the Book

यह गाइडबुक आपकी प्रतियोगी परीक्षा में सफलता पाने का सबसे अच्छा साधन है। यह पुस्तक परीक्षा के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को कवर करती है और सभी NCERT पाठ्यपुस्तकों के महत्वपूर्ण बिंदुओं को भी शामिल करती है। पिछले वर्षों के प्रश्न पत्रों के महत्वपूर्ण बिंदुओं का भी इस गाइड बुक में समावेश है, जिससे आपकी तैयारी सबसे अच्छी हो सके। हर अध्याय के अंत में, आपको पिछले प्रश्न पत्रों और अन्य विश्वसनीय स्रोतों से चुने गए अभ्यास प्रश्न मिलेंगे।

यह गाइड बुक स्व-अध्ययन के लिए बनाई गई है, जो सभी टॉपिक्स को सरल और आसान भाषा में समझाती है। अगर आप इस गाइड बुक को गंभीरता से पढ़ते हैं और पूरी करते हैं, तो आप आसानी से परीक्षा के 80% सवाल हल कर पाएंगे। हमने यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत मेहनत की है कि यह गाइड बुक आपकी पूरी तैयारी के लिए पर्याप्त है। तो आज ही इस गाइड बुक का गहन अध्ययन करना शुरू करें और अपने सपने को हकीकत में पूरा करने की ओर एक बड़ा कदम उठाएं।

अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें

Buy books at great discounts on: www.examcart.in | www.amazon.in/examcart |

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!
CB2070

HSSC CET
स्टडी बुक
ISBN - 978-93-6054-785-1
9 789360 547851
₹ 499

HSSC CET स्टडी बुक

CB2070

AGRAWAL EXAMCART

HSSC CET

COMMON ELIGIBILITY TEST

ग्रुप C व D के पदों हेतु चयन परीक्षा

सम्पूर्ण पाठ्यक्रमानुसार स्टडी बुक

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

विगत वर्षों के पेपर्स के विश्लेषण चार्ट का समावेश

सामान्य अध्ययन। सामान्य विज्ञान। कम्प्यूटर। हरियाणा सामान्य ज्ञान। गणित। सामान्य हिंदी। तर्कशक्ति। English language

मुख्य विशेषताएँ

1. **संपूर्ण थ्योरी** — पाठ्यक्रम अनुसार सभी विषयों की सम्पूर्ण थ्योरी
2. **1900+ अभ्यास प्रश्न** — अध्यायवार महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
3. **पेपर्स** — 1 प्रैक्टिस सेट एवं 1 नवीनतम सॉल्व्ड पेपर का समावेश

Code	Price	Pages	ISBN
CB2070	₹ 499	631	978-93-6054-785-1

विषय-सूची

परीक्षा से सम्बन्धित जानकारी (Exam Information)

➔ **परीक्षा से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचना (Important Information)** viii
(HSSC CET परीक्षा की सम्पूर्ण जानकारी एवं पुस्तक या किसी भी समस्या के लिए हमारा Helpline No.)

➔ **पाठ्यक्रम एवं परीक्षा पैटर्न** ix

➔ **विश्लेषण चार्ट** x
(विगत वर्षों के पेपर्स में कितने प्रश्न हर विषय के अध्याय से पूछे गये, उस का चार्ट)

Unit-I : सामान्य अध्ययन

1. इतिहास 1–40

- प्रागैतिहासिक सभ्यताएँ तथा मानव विकास
- सिंधु घाटी सभ्यता
- वैदिक सभ्यता
- जनपद तथा महाजनपद
- जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म
- मौर्य साम्राज्य
- उत्तरवर्ती मौर्य काल
- संगम काल तथा दक्षिण भारतीय राजवंश
- गुप्त तथा उत्तरवर्ती गुप्तकाल
- इस्लाम का आगमन
- दिल्ली सल्तनत
- मुगल वंश
- भक्ति तथा सूफी आंदोलन
- यूरोपियनों का आगमन
- भारत पर ब्रिटिशों का प्रशासनिक तथा आर्थिक प्रभाव
- ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध जन-आंदोलन
- सामाजिक एवं जातिगत सुधार
- भारत में राष्ट्रीय आंदोलन तथा स्वतंत्रता के बाद भारत
- कला एवं संस्कृति

2. भूगोल 41–77

भारत का भूगोल

- भारत : स्थान और विस्तार
- भारत की भौतिक विशेषताएँ
- भारत का नदी तंत्र
- भारत की जलवायु
- भारत में प्राकृतिक वनस्पति
- भारत में मृदा
- भारत में कृषि
- भारत में उद्योग
- भारत में खनिज संसाधन
- भारत में ऊर्जा संसाधन
- भारत में जनसंख्या
- भारत में परिवहन

विश्व का भूगोल

- ब्रह्मांड और सौर मंडल
- पृथ्वी का आंतरिक भाग
- पृथ्वी की गति
- अक्षांश और देशांतर
- चट्टानें
- भूकंप और ज्वालामुखी
- पृथ्वी के प्रमुख डोमेन
- पृथ्वी के महाद्वीप एवं महासागर
- वायुमंडल तथा जलमंडल

3. राजनैतिक विज्ञान **78–103**

- भारतीय संविधान का निर्माण
- भारतीय संविधान के भाग, अनुच्छेद और अनुसूचियाँ
- संघ और उसका राज्य क्षेत्र
- नागरिकता
- मौलिक अधिकार
- मौलिक कर्तव्य
- राज्य के नीति निदेशक तत्व
- संघीय और राज्य की कार्यपालिका
- संघ और राज्य विधानमंडल
- भारतीय न्यायपालिका
- स्थानीय स्वशासन
- केंद्र और राज्य संबंध
- चुनाव
- आपातकालीन प्रावधान
- राजभाषा
- भारत में संवैधानिक संशोधन
- भारत में प्रशासनिक निकाय

4. भौतिक विज्ञान **104–126**

- भौतिक विज्ञान क्या है?
- मापन, राशियाँ तथा मात्रक
- गति
- बल
- घर्षण
- कार्य, ऊर्जा तथा शक्ति
- पदार्थ के यांत्रिक गुण
- ऊष्मा तथा ताप
- कंपन तथा तरंग
- प्रकाश
- ध्वनि
- विद्युत एवं चुम्बकत्व

5. रसायन विज्ञान **127–149**

- पदार्थ
- अणु तथा परमाणु
- रासायनिक परिवर्तन
- रासायनिक समीकरण
- आवर्त सारणी
- रेडियोधर्मिता
- अम्ल, क्षार तथा लवण
- ईंधन तथा ऊर्जा के स्रोत
- कार्बन तथा उसके यौगिक
- दहन तथा ज्योति
- तंतु तथा मानव–निर्मित वस्तुएँ

6. जीव विज्ञान **150–175**

- जीव विज्ञान क्या है?
- सजीव तथा निर्जीव
- पादप तथा जंतुओं का जैव वर्गीकरण
- कोशिका तथा ऊतक
- पोषण
- मानव अंग तंत्र
- आनुवंशिकी
- पादप कार्यिकी
- सूक्ष्मजीव
- पादप तथा जंतुओं में अनुकूलन

7. विविध **176–214**

- खेलकूद
- प्रमुख खेल पुरस्कार
- भारत के प्रमुख स्टेडियम
- खेल एवं उनसे सम्बन्धित कप/ट्रॉफी
- प्रमुख खिलाड़ी तथा उनके प्रचलित उपनाम
- अन्तर्राष्ट्रीय संगठन
- प्रमुख स्थान एवं उसके वास्तुकार
- विश्व की प्रमुख गुप्तचर संस्थाएँ
- प्रमुख आयोग
- अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखाएँ
- भारत के प्रमुख शोध संस्थान

- प्रसिद्ध व्यक्तियों के समाधि स्थल
- प्रमुख व्यक्तियों से सम्बन्धित स्थान
- भारत में विश्व धरोहर स्थल
- भारत के राष्ट्रीय चिह्न/प्रतीकों की सूची
- भारत एवं विश्व के प्रमुख पुरस्कार
- महत्वपूर्ण पुस्तकें और उनके लेखक
- महत्वपूर्ण तिथि, सप्ताह, वर्ष एवं दशक
- अन्तर्राष्ट्रीय दशक : संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा घोषित
- विश्व के प्रमुख देशों की राजधानी एवं मुद्रा

Unit-II : गणित

1. संख्या पद्धति 1-5
2. वर्गमूल और घनमूल 6-8
3. म.स.प. एवं ल.स.प. 9-12
4. भिन्न एवं दशमलव संख्याएँ 13-16
5. औसत 17-19
6. अनुपात एवं समानुपात 20-23
7. प्रतिशतता 24-27
8. लाभ-हानि एवं बट्टा 28-31
9. साझेदारी 32-34
10. समय और कार्य 35-40
11. साधारण ब्याज 41-43
12. चक्रवृद्धि ब्याज 44-46
13. समय, चाल एवं दूरी 47-51
14. समतलीय आकृतियों का क्षेत्रफल 52-57
15. पृष्ठीय क्षेत्रफल एवं आयतन 58-60
16. ज्यामिति 61-65
17. बीजगणित 66-70
18. प्रायिकता 71-72
19. त्रिकोणमिति 73-76

Unit-III : तर्कशक्ति

1. अंग्रेजी वर्णमाला परीक्षण 77-78
2. सांकेतिक भाषा परीक्षण 79-83
3. सादृश्यता परीक्षण 84-87
4. वर्गीकरण 88-90
5. रक्त सम्बन्ध 91-94
6. श्रेणी परीक्षण 95-97
7. शृंखला परीक्षण 98-100
8. लुप्त पद ज्ञात करना 101-103
9. गणितीय संक्रियाएँ 104-107
10. वेन आरेख 108-110
11. कैलेण्डर 111-113
12. दिशा परीक्षण 114-118
13. घड़ी 119-121
14. आकृति शृंखला 122-124
15. सन्निहित आकृतियाँ 125-127
16. आकृति सादृश्यता 128-130
17. आकृति वर्गीकरण 131-132
18. कथन एवं निष्कर्ष 133-136
19. कथन एवं तर्क 137-140

Unit-IV : English Language

1. Comprehension 141-143
2. Noun : Kind of Nouns, Number & Gender 144-147
3. Pronoun 148-150
4. Adjectives 151-152
5. Comparison of Adjectives 153-155
6. Adverb 156-159
7. Verb and Subject Verb Agreement 160-165
8. Preposition 166-169
9. Conjunction 170-172
10. Modals 173-174
11. Tenses 175-180
12. Question Tag 181-184

13. Articles 185-189
14. Spotting Errors 190
15. Voices 191-195
16. Narration 196-201
17. Transformation of Sentences 202-207
18. Re-Arrangement of Jumbled Sentences 208
19. Synonyms 209-210
20. Antonyms 211-212
21. Idioms & Phrases 213-214
22. One Word Substitution 215-216
23. Spelling Test 217-218
24. Confusing Words 219-221
25. Cloze Test 222-224
26. Sentence Improvement 225-226

Unit-V : हरियाणा सामान्य ज्ञान 1-64

Unit-VI : कम्प्यूटर 1-31

Unit-VII : सामान्य हिंदी

1. संज्ञा 1–2
2. सर्वनाम 3–4
3. विशेषण 5–7
4. क्रिया 8–10
5. अव्यय (अविकारी शब्द) क्रिया–विशेषण, सम्बन्धबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक, सकारात्मक–नकारात्मक एवं निपात 11–13
6. काल 14–15
7. वाक्य रचना : अंग, रचना व अर्थ के आधार पर भेद, पदक्रम एवं पदबंध 16–19

परिशिष्ठ

गणित

1. सरलीकरण 1–3
2. समंकों का विश्लेषण 4–21

तर्कशक्ति

1. समस्या को सुलझाना 1–8
2. दृश्य स्मृति 9–12
3. खाली स्थान भरना 13–15
4. विभेदन क्षमता 16–18

प्रैक्टिस सेट

प्रैक्टिस सेट-1 1-11

सॉल्व्ड पेपर

हरियाणा CET (ग्रुप C व D के पदों हेतु) चयन परीक्षा, 06-11-2022 (प्रथम पाली) 1-15

अतिरिक्त अध्ययन सामग्री ई-बुक
(Extra Study Material E-Book)

Extra Study Material ई-बुक का Content

- विगत वर्षों (2022) के 4 सॉल्व्ड पेपर्स की ई-बुक
- डिस्काउंट कूपन दिया गया है। उसका उपयोग करें और 'www.examcart.in' से हमारी किताबें सबसे अच्छे डिस्काउंट पर खरीदें।

नोट : **Link Expire** होने से पहले दिए गए **QR Code** को स्कैन करके आप यह **Extra Study Material E-Book** को Download कर लें।

ऐसी पुस्तकें जो कोई आपको बताना नहीं चाहता!

इन अनोखी पुस्तकों ने कई छात्रों को उनके पहले प्रयास में ही परीक्षा पास करने में मदद की है और हम जो कहते हैं, उसे साबित भी करते हैं—इसीलिए हर पुस्तक के कुछ सैंपल चैप्टर दिए गए हैं। हम गारंटी देते हैं कि इन्हें पढ़ने के बाद आपको समझ आएगा कि ये पुस्तकें क्यों सबसे बेहतरीन हैं और क्यों इतने सारे छात्र इनसे सफल हुए हैं।

नोट

पढ़ने के लिए, किसी भी पुस्तक के पास दिए गए **QR Code** को स्कैन करें, उसके वेबसाइट पेज पर **"View PDF"** पर क्लिक करें। अगर पुस्तक पसंद आए, तो **Extra Study Material** ई-बुक में दिया गया डिस्काउंट कूपन इस्तेमाल करें और बेहतरीन डिस्काउंट भी पाएँ!

HSSC (Question Bank)

HSSC (Textbook)

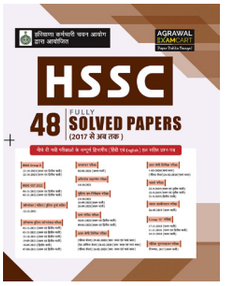

HSSC (Solved Papers)

HSSC (Mock Papers)

अध्याय 1 इतिहास

1. प्रागैतिहासिक सभ्यताएँ तथा मानव विकास

- इतिहास कालानुक्रमिक रूप से पिछली घटनाओं का अध्ययन है। इतिहास हमें उन प्रक्रियाओं को समझने में मदद करता है जिन्होंने प्रारंभिक मानवों को अपने पर्यावरण पर सफलतापूर्वक विजय प्राप्त करने और वर्तमान समय की सभ्यताओं को विकसित करने में सक्षम बनाया।
- **इतिहास का विभाजन:** इतिहास को आम तौर पर तीन समय अवधियों में विभाजित किया जाता है – प्रागितिहास, आद्य–इतिहास और इतिहास।
  - **प्रागैतिहास:** प्रागैतिहासिक काल वह समय है जब लेखन का आविष्कार नहीं हुआ था। इसलिए इस काल का कोई लिखित अभिलेख उपलब्ध नहीं है। प्रागितिहास का हमारा ज्ञान पूरी तरह से पुरातत्व पर आधारित है। पुरातत्वविद् इस काल के बारे में जानने के लिए अतीत के भौतिक अवशेषों जैसे बर्तन, आभूषण, औजार, सिक्के, हड्डियाँ आदि का अध्ययन करते हैं।
  - **आद्य–इतिहास:** यह वह काल है जिसके लिखित अभिलेख तो हमारे पास उपलब्ध हैं लेकिन वे बहुत कम हैं और पढ़े नहीं जा सकते। अतः इस काल की भी जानकारी के मुख्य स्रोत पुरातात्त्विक स्रोत ही हैं। इस अवधि के लिए एक उदाहरण सिंधु घाटी सभ्यता है।
  - **इतिहास:** लेखन के आविष्कार के बाद के समय को इतिहास कहा जाता है। प्रारंभिक लेखन चट्टानों, स्तंभों, ताम्रपत्रों, शिला लेखों, ताड़ के पत्तों और भूर्ज वृक्षों की छालों पर किया जाता था। हालांकि इनमें से अधिकांश साक्ष्य समय के साथ नष्ट हो गए हैं, जो बचे हैं वे सूचना के समृद्ध स्रोत हैं।
- **मानव विकास और प्रवासन:** मनुष्यों के साथ–साथ चिंपैंजी, गोरिल्ला और ऑरंगुटान को सामूहिक रूप से महान वानर कहा जाता है। इनमें चिंपैंजी आनुवंशिक रूप से इंसानों के सबसे करीब है।
- मनुष्यों के पूर्वजों को होमिनिन्स कहा जाता था और उनकी उत्पत्ति अफ्रीका में पाई गई है। इनका उद्भव लगभग 7 से 50 लाख वर्ष पूर्व हुआ।
- मानव पूर्वजों को उनकी शारीरिक विशेषताओं के अनुसार विभिन्न प्रजातियों में विभाजित किया गया है।
  - होमिनिड आधुनिक और विलुप्त महान वानरों की सभी प्रजातियों को संदर्भित करता है, जिसमें मनुष्य भी शामिल हैं।
  - होमिनिन्स (एक प्राणी जनजाति) मानव पूर्वजों और उनकी बहन प्रजातियों के करीबी रिश्तेदारों को संदर्भित करता है जिसमें होमो सेपियन्स (आधुनिक मानव) और होमो निएंडरथेलेंसिस, होमो इरेक्टस, होमो हैबिलिस और ऑस्ट्रेलोपिथेसीन की विभिन्न प्रजातियों के विलुप्त सदस्य शामिल हैं।
  - होमो हैबिलिस (उपयोगी मानव) लगभग 2.6 मिलियन वर्ष पहले अफ्रीका में उपकरण बनाने वाले सबसे पहले ज्ञात मानव पूर्वज थे। लगभग 2 मिलियन वर्ष पहले, होमो इरेक्टस/एर्गास्टर की प्रजाति का उदय हुआ। इस प्रजाति ने 2 से 1 मिलियन वर्ष पहले हाथ की कुल्हाड़ी बनाई थी।
  - होमो सेपियन्स (बुद्धिमान व्यक्ति), पहली बार लगभग 3,00,000 साल पहले अफ्रीका में दिखाई दिया था। ऐसा माना जाता है कि लगभग 60,000 साल पहले ये आधुनिक मानव अंततः दुनिया के विभिन्न हिस्सों में चले गए और फैल गए।
- **प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ:**
  - **निम्न पुरापाषाण संस्कृति:** निम्न पुरापाषाण संस्कृति को होमो हैबिलिस और होमो इरेक्टस प्रजाति के मानव पूर्वजों द्वारा चिह्नित किया गया है। मानव पूर्वजों ने बड़े पत्थर के खंडों को तोड़ा और हाथ की कुल्हाड़ियों सहित विभिन्न उपकरण डिजाइन किए।
  - इन उपकरणों को द्विमुखी के नाम से भी जाना जाता है। इन उपकरणों में भौतिक समरूपता होती है। इस संस्कृति को निम्न पुरापाषाणिक संस्कृति कहा जाता है। हाथ की कुल्हाड़ी के औजारों को एच्यूलियन के नाम से भी जाना जाता है।
  - **मध्य पुरापाषाण संस्कृति:** मध्य पुरापाषाण संस्कृति 3,85,000 से 1,98,000 साल पहले यूरोप और पश्चिमी और दक्षिण एशिया के कुछ हिस्सों में दिखाई दी थी। इस काल में जो उपकरण बनाये गये उनका प्रयोग लगभग 28,000 तक होता रहा। इस काल के लोगों को निएंडरथल कहा जाता था। उन्होंने मृत लोगों को व्यवस्थित ढंग से दफनाया।
  - **उच्च पुरापाषाण संस्कृति:** मध्य पुरापाषाण काल के बाद आने वाले सांस्कृतिक चरण को उच्च पुरापाषाण चरण कहा जाता है। यह अवधि उपकरण प्रौद्योगिकी में नवाचार द्वारा चिह्नित की गई थी। इस समय के दौरान लंबे ब्लेड और ब्यूरिन का उत्पादन किया गया।
  - **हिमयुग:** 8,000 ईसा पूर्व से पहले का काल जब दुनिया के कई हिस्से बर्फ की चादरों और बर्फ से ढके रहते थे।
- **मध्यपाषाण संस्कृति:** मध्यपाषाण काल को मध्य पाषाण युग के रूप में जाना जाता है, क्योंकि यह पुरापाषाण काल और नवपाषाण काल के बीच का काल है। इस काल में लोग मुख्य रूप से माइक्रोलिथिक (छोटे पत्थर के उपकरण) का उपयोग करते थे। ये लोग माइक्रोलिथ का उपयोग करते थे जो छोटे आकार की पत्थर की कलाकृतियाँ होती थीं।
- **नवपाषाण संस्कृति और कृषि की शुरुआत:** नवपाषाण काल के प्रारंभिक साक्ष्य मिस्र और मेसोपोटामिया के उपजाऊ वर्धमान क्षेत्र, सिंधु क्षेत्र, गंगा घाटी और चीन में पाए जाते हैं। लगभग 10,000 ईसा पूर्व से 5000 ईसा पूर्व तक, इन क्षेत्रों में कृषि का अभ्यास शुरू हो गया था।

क्या आप जानते हैं?

★ भरतमुनि "नाट्यशास्त्र" के रचयिता थे। हेलियोग्राफी से तात्पर्य किसी संत की जीवनी लिखने से है। हेलियोग्राफी का उपयोग

आत्मकथा या इतिहास के अपमानजनक संदर्भों के लिए किया जाता है जिनके लेखकों को उनके विषयों के लिए आलोचनात्मक या अनुकरणीय माना जाता है।

- ऐसे स्थान जहाँ अतीत की स्मृतियाँ/अवशेष मिलते हैं, ऐतिहासिक स्थान कहलाते हैं। उदाहरण– हड़प्पा, मोहनजोदड़ो आदि।
- "पांडुलिपि" शब्द लैटिन भाषा से लिया गया है और यहाँ शब्द मेनू का अर्थ हाथ है।
- पुरापाषाण स्थल कुरनूल से प्राप्त साक्ष्य– राख के निशान।
- पुरापाषाण स्थल हुंगसी से प्राप्त साक्ष्य– आवास सह कारखाना स्थल।
- पुरापाषाण स्थल पटना से प्राप्त साक्ष्य– शुतुरमुर्ग के अंडे के छिलके।
- भीमबेटका एक प्रागैतिहासिक स्थल है और मध्य प्रदेश में स्थित है। यह स्थल प्रागैतिहासिक गुफा चित्रों के लिए जाना जाता है।
- पुरापाषाणकालीन स्थल भीमबेटका से गुफाएँ एवं शैलाश्रय प्राप्त हुए हैं। भारत में प्रारंभिक मानव को समझने के लिए मध्य प्रदेश के शैलचित्रों को प्राथमिक स्रोत माना जा सकता है।
- गुफकराल (कश्मीर) में मिले साक्ष्य– गेहूं और मसूर।
- महगरा (उत्तर प्रदेश) में मिले साक्ष्य– मिट्टी की सतह पर खुर के निशान।
- हल्लूर (आंध्र प्रदेश) में मिले साक्ष्य– बाजरा, मवेशी, भेड़, बकरी और सुअर
- कोल्डिहवा (उत्तर प्रदेश) में मिले साक्ष्य– चावल और जानवरों की खंडित हड्डियाँ
- सबसे पहले बसे स्थलों में से एक बुर्जहोम में, झोपड़ियों के अंदर और बाहर दोनों जगह खाना पकाने के चूल्हे के साक्ष्य पाए गए हैं।
- भीमबेटका, एक प्रागैतिहासिक स्थल मध्य प्रदेश में स्थित है।
- ब्रह्मगिरि पुरातात्विक स्थल चित्रदुर्ग (कर्नाटक) में स्थित है।
- प्राचीन भारत में सुश्रुत, चरक तथा धन्वंतरि चिकित्सा से सम्बंधित थे।
- मेसोपोटामिया सभ्यता, विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता है।
- शिलालेखों का अध्ययन आर्कियोलॉजी कहलाता है।
- प्राचीन भारत में पत्थर के औजार बनाने के लिए प्रेशर फ्लैकिंग तकनीक का उपयोग किया जाता था।
- महावीरचरित, मालतीमाधव तथा उत्तरमचरित नामक पुस्तकों की रचना महान विद्वान भवभूति द्वारा की गई है।
- पूर्वी अफ्रीका क्षेत्र आस्ट्रेलोपिथेकस के निवास स्थान से संबंधित है।
- क्रो–मैग्नन, जो अपनी गुफाओं में रहने के लिए जाने जाते हैं, मुख्य रूप से फ्रांस में निवास करते थे।
- निएंडरथल का संबंध यूरेशिया निवास स्थान से है।
- होमो सेपियन्स की उत्पत्ति पूर्वी अफ्रीका क्षेत्र में हुई थी।
- होमो हैबिलिस मुख्य रूप से दक्षिण अफ्रीका में निवास करते थे।
- भारतीय उपमहाद्वीप का एक प्राचीन स्थल मेहरगढ़, क्वेटा नामक आधुनिक शहर के पास स्थित है।
- मेहरगढ़ स्थल से सिंधु घाटी सभ्यता का निर्माण का पता लगाया जा सकता है।
- सिक्के, शिलालेख तथा वास्तुकला वे स्रोत हैं जो अतीत के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।
- 700 से 1750 ई की समयावधि के दौरान पाठ्य अभिलेखों की संख्या और विविधता में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई थी।
- ऐतिहासिक अभिलेखों में कागज का मुख्य उपयोग पवित्र ग्रंथ लिखना था।
- धनी व्यक्तियों और संस्थानों द्वारा एकत्र की गई पांडुलिपियाँ इतिहासकारों के लिए चुनौतियां खड़ी करती हैं क्योंकि उनमें एक ही पाठ में विविधता और अंतर होता है।
- इतिहासकारों ने जियाउद्दीन बरनी के इतिहास के पहले संस्करण के अस्तित्व की खोज 1960 का दशक में की थी।
- महापाषाण शब्द बड़े पत्थरों से निर्मित या उनसे युक्त स्मारकों से संबंधित है।

2. सिंधु घाटी सभ्यता

- सिंधु घाटी (हड़प्पा) सभ्यता भारत में शहरीकरण के पहले चरण का प्रतिनिधित्व करती है। यह सभ्यता 'कांस्य युग' की थी। यह सभ्यता भारत और पाकिस्तान में 1.5 मिलियन वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में फैली हुई है। पश्चिम में पाकिस्तान–ईरान सीमा शोर्तुगई (अफगानिस्तान) उत्तर में आलमगीरपुर (भारत में उत्तर प्रदेश) पूर्व में और दक्षिण में दैमाबाद (भारत में महाराष्ट्र) वे सीमाएँ हैं जिनके साथ हड़प्पा संस्कृति का विस्तार रहा है। इसकी अधिक संघनन गुजरात, पाकिस्तान, राजस्थान और हरियाणा के क्षेत्रों में पाया जाता है।
- हड़प्पा के खंडहरों का वर्णन सबसे पहले ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के सैनिक और खोजकर्ता चार्ल्स मैसन ने अपनी पुस्तक में किया था। उन्होंने उत्तर–पश्चिम सीमांत प्रांत में इस शहर की खोज की जो अब पाकिस्तान में है।
- हड़प्पा, उपमहाद्वीप के सबसे पुराने शहरों में से एक और सिंधु नदी के तट पर, खोजा जाने वाला पहला शहर था। सिंधु नदी के तट पर फलने–फूलने के कारण इसे ''सिंधु घाटी सभ्यता" का नाम दिया गया।
- हड़प्पा संस्कृति को विभिन्न चरणों अर्थात् प्रारंभिक हड़प्पा (3000-2600 ईसा पूर्व), परिपक्व हड़प्पा (2600-1900 ईसा पूर्व) और उत्तर हड़प्पा (1900-1700 ईसा पूर्व) में विभाजित किया गया है।
- हड़प्पा की सिंधु घाटी साइट पहली बार 1826 सीई में चार्ल्स मेसन और 1831 में अलेक्जेंडर बर्न्स द्वारा अमरी में देखी गई थी। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के पहले सर्वेक्षक अलेक्जेंडर कनिंघम ने 1853, 1856 और 1875 में इस स्थल का दौरा किया था।
- 1924 में एएसआई के महानिदेशक सर जॉन मार्शल ने हड़प्पा और मोहनजोदड़ो (खुदाई की जाने वाली पहली साइट) के बीच कई सामान्य विशेषताएं पाईं। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि वे एक बड़ी सभ्यता का हिस्सा थे। मोहनजोदड़ो के पुरातात्विक स्थल को 1980 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।
- **सिंधु सभ्यता की समय अवधि**
  - **भौगोलिक सीमा:** दक्षिण एशिया
  - **अवधि:** कांस्य युग
  - **समय:** 3300 से 1900 ईसा पूर्व (रेडियोकार्बन डेटिंग पद्धति का उपयोग करके निर्धारित)
  - **क्षेत्र:** 13 लाख वर्ग किमी
  - **शहर:** 6 बड़े शहर
  - **गांव:** 200 से अधिक

- **हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल**
  - **हड़प्पा** रावी के तट पर पंजाब के साहीवाल जिले में स्थित है। 1921 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **मोहनजोदड़ो सिंध के** लरकाना जिले में सिन्धु नदी के तट पर स्थित है। 1922 में इसकी खुदाई की गई थी। यह इस सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है।
  - **अमरी** सिंधु नदी के तट पर, बलूचिस्तान में स्थित है। 1935 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **लोथल** गुजरात में खंभात की खाड़ी के पास भोगवा नदी के तट पर स्थित है। इसकी खुदाई 1953 में की गई थी। यह अपने डॉकयार्ड के लिए जाना जाता है।
  - **धोलावीरा** गुजरात में कच्छ के रण में स्थित है। 1985 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **कालीबंगन** राजस्थान में घग्घर नदी के तट पर स्थित है। 1953 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **मांडा** चिनाब नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। 1976-77 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **कोटदीजी** पाकिस्तान में सिंधु नदी के तट पर स्थित है। 1955 और 1957 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **चन्हुदड़ो** सिंध, पाकिस्तान में स्थित है और इसकी खुदाई 1931 में की गई थी। यह एक मनके कारखाने के लिए जाना जाता है।
- **हड़प्पा सभ्यता की अनूठी विशेषताएँ**
  - व्यवस्थित नगर–नियोजन 'ग्रिड सिस्टम' की तर्ज पर योजना
  - निर्माण में पक्की ईंटों का उपयोग
  - भूमिगत जल निकासी प्रणाली (धौलावीरा में विशाल जलाशय)
  - किलेबंद दुर्ग (अपवाद – चन्हुदड़ो)
- **शासक** वे लोग थे जो शहर में विशेष भवनों में रहते थे। शासकों ने लोगों को दूर देशों में धातु, कीमती पत्थर, और अन्य चीजें जो वे चाहते थे, प्राप्त करने के लिए भेजा।
- मुहरों के निर्माण में सेलखड़ी का प्रयोग किया जाता था। मुहरों पर कूबड़ वाले बैल की छवि थी। **शास्त्री** वे लोग थे जो लिखना जानते थे और मुहरों को तैयार करने में मदद करते थे और शायद अन्य सामग्रियों पर लिखते थे परन्तु अब वे शेष नहीं बची हैं।
- गेहूँ और जौ मुख्य फसलें थीं और खजूर, सरसों, तिल, कपास आदि अन्य फसलें थीं।
- चावल की खेती के प्रमाण लोथल और रंगपुर (गुजरात) से मिले हैं। कृपया ध्यान दें कि सिंधु लोग दुनिया में सबसे पहले कपास (ग्रीक में सिंडन) का उत्पादन करने वाले लोग थे।
- यद्यपि भेड़, बकरी, कूबड़ रहित बैल, भैंस, सूअर, कुत्ता, बिल्ली, सुअर, मुर्गी, हिरण, कछुआ, हाथी, ऊँट, गैंडा, बाघ आदि इस सभ्यता के महत्वपूर्ण प्राणी थे, फिर भी शेर उन्हें ज्ञात नहीं था। अमरी (सिंध, पाकिस्तान) से गैंडे के अवशेष मिले हैं।
- **विदेश व्यापार:** सिन्धु लोगों के मेसोपोटामिया या सुमेरिया और बहरीन आदि के साथ व्यापारिक संबंध थे। वे कृषि उत्पाद, मिट्टी के बर्तन, सूती सामान, कुछ मनके, टेराकोटा की मूर्तियाँ, शंख, हाथी दाँत के उत्पाद और तांबे आदि का निर्यात करते थे।
- चन्हुदड़ो से मोतियों का निर्यात किया जाता था और लोथल से शंख का निर्यात किया जाता था।
- उनके आयात इस प्रकार थे–
  - कोलार (कर्नाटक), अफगानिस्तान, फारस (ईरान) से सोना
  - अफगानिस्तान, फारस (ईरान), दक्षिण भारत से चांदी
  - खेतड़ी (राजस्थान), बलूचिस्तान, अरब से ताँबा
  - महाराष्ट्र से नीलम
  - शहर–ए–सोख्ता (ईरान), किरथर हिल्स (पाकिस्तान) से सेलखड़ी
  - मध्य एशिया से जस्ता
  - बदख्शां (अफगानिस्तान) से लापीस लाजुली
  - बदख्शां से नीलम (अफगानिस्तान)
  - अफगानिस्तान और बिहार से टिन
- ऐसा माना जाता है कि सिंधु सभ्यता में शासन व्यापारी वर्ग के हाथों में था।
- जहां तक धर्म का संबंध है, कोई मंदिर नहीं मिला है। माँ देवी (मातृदेवी या शक्ति) की मूर्ति योनि (महिला यौन अंग) की पूजा को संदर्भित करती है। लिंगम (लिंगम) पूजा भी प्रचलित थी।
- पशुपति शिव या जानवरों के देवता या रूद्र शिव प्रमुख पुरुष देवता थे। एक मुहर मिली है जो चार जानवरों (हाथी, बाघ, गैंडे और भैंस) से घिरे एक योगी को दर्शाती है और उनके चरणों में दो हिरण दिखाई देते हैं।
- **लिपि:** सिंधु घाटी की लिपि चित्रात्मक थी। यह लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है। लेखन बुस्ट्रोफेडन था और वैकल्पिक पंक्तियों में दाएं से बाएं और बाएं से दाएं लिखा जाता था।
- इस काल में प्रायः मृतकों को दफनाया जाता था।

सिन्धु घाटी सभ्यता का पतन

लेखक	पतन के कारण
गॉर्डन चाइल्ड, स्टुअर्ट पिगोट	बाहरी आक्रामकता
एच.टी. लैम्ब्रिक, एम.एस. वत्स	अस्थिर नदी तंत्र
के.ए.आर. कैनेडी	प्राकृतिक आपदाएं
ओरेल स्टीन और ए.एन.घोष	जलवायु परिवर्तन
आर. मोर्टिमर व्हीलर, गॉर्डन	आर्य आक्रमण
रॉबर्ट राइक्स और डेल्स	भूकंप
सूद और डी.पी. अग्रवाल	नदी का सूखापन
फेयरचाइल्ड	पारिस्थितिक असंतुलन
शीरान रत्नागर	मेसोपोटामिया के साथ व्यापार में गिरावट
एस.आर. राव और मैके	बाढ़

क्या आप जानते हैं?

- हड़प्पा सभ्यता का दूसरा नाम सुमेरियन है।
- सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान अज्ञात धातु लोहा थी।
- चन्हुदड़ो के भवन निर्माण के लिए कच्ची ईंटों का प्रयोग बहुतायात में किया गया था।

- ★ हड़प्पा सभ्यता में हल के टेराकोटा मॉडल की खुदाई लोथल की गई थी।
- ★ सिंधु घाटी सभ्यता का मोहनजोदड़ो नामक स्थल, सिंधु नदी के तट पर स्थित नहीं है।
- ★ बनावली हरियाणा के जींद जिले में सिन्धु घाटी सभ्यता काल से संबंधित पुरातत्व स्थल है।
- ★ हड़प्पा संस्कृति (सिंधु घाटी सभ्यता) के शिलालेख मुख्यतः सेलास पर पाए गए हैं।
- ★ इनामगाँव (महाराष्ट्र) हड़प्पोत्तरकालीन स्थल है। यहाँ वयस्कों को अक्सर उत्तर दिशा की ओर सिर करके गड्ढे में सीधा लिटाकर दफनाया जाता था। यह जोर्वे संस्कृति का भी एक प्रमुख केंद्र था। घोड़ नदी के दाहिने किनारे पर स्थित, इसे भीमा घाटी का क्षेत्रीय केंद्र माना जाता है।
- ★ चन्हुदड़ो में घुमावदार ईंटें मिली हैं।
- ★ मोहनजोदड़ो से प्राप्त विशाल स्नानागार का आकार आयताकार था। टैंक में जाने के लिए उत्तर और दक्षिण की ओर दो सीढ़ियाँ थीं, जिन्हें किनारे पर ईंटें लगाकर और जिप्सम के मोर्टार का उपयोग करके जलरोधक बनाया गया था। महान स्नानागार एक आंगन में बना एक बड़ा आयताकार टैंक था जो चारों तरफ से गलियारे से घिरा हुआ था। गढ़ से पता चलता है कि यह किसी प्रकार के विशेष अनुष्ठान स्नान के लिए था।
- ★ हड़प्पा से मवेशी, भेड़ और बकरी की हड्डियाँ मिली हैं लेकिन शेर की हड्डियाँ नहीं मिली हैं।
- ★ सर जॉन मार्शल द्वारा निर्मित "विशाल स्नानारगार" को दुनिया में अद्वितीय माना जाता था।
- ★ धोलावीरा, एक प्रसिद्ध हड़प्पा स्थल है जिसे स्थानीय रूप से कोटाडा टिम्बा कहा जाता है। यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ए.एस.आई.) द्वारा खोदे गए सभी हड़प्पा स्थलों में छठा सबसे बड़ा है। इसे यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में 40वां भारतीय स्थल नामित किया गया था।
- ★ धोलावीरा में विशाल जलाशय थे जिनका उपयोग वर्षा द्वारा लाए गए ताजे पानी को संग्रहित करने या पास की दो नालों से निकाले गए पानी को संग्रहित करने के लिए किया जाता था।
- ★ मिस्र की सभ्यता (नील नदी घाटी) हड़प्पा सभ्यता के समकालीन थी।
- ★ आर.ई.एम. व्हीलर मुख्यतः एक ब्रिटिश पुरातत्ववेत्ता थे। वह 1944–48 तक भारतीय पुरातत्व विभाग के महानिदेशक रहे थे। 1944 में भारतीय पुरातत्व विभाग के महानिदेशक का पद संभालने के बाद उन्होंने इस समस्या को सुधारा कि हड़प्पा सभ्यता में एक समान क्षैतिज रेखाओं के साथ यांत्रिक रूप से खुदाई करने के बजाय टीले की स्ट्रैटिग्राफी का पालन करना आवश्यक था।
- ★ सिंधु घाटी सभ्यता जिसे हड़प्पा संस्कृति के नाम से भी जाना जाता है, वह पहला स्थल है जहां अनूठी संस्कृति की खोज की गई थी। यह सभ्यता लगभग 2600–1900 ईसा पूर्व की प्रतीत होती है।
- ★ 20वीं शताब्दी का तीसरा दशक भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण था क्योंकि इस दशक में सिंधु सभ्यता की खोज की गई थी।

3. वैदिक सभ्यता

- भारत में शहरीकरण का पहला चरण सिंधु सभ्यता के पतन के साथ समाप्त हो गया। आर्यों के आगमन के साथ एक नया युग शुरू हुआ, जिसे वैदिक युग कहा जाता है। यह भारत के इतिहास में 1500 ईसा पूर्व – 600 ईसा पूर्व के बीच का काल है। इसका नाम चार 'वेदों' से लिया गया है। इसे दो उप–चरणों में वर्गीकृत किया गया है:
  - ❖ प्रारंभिक वैदिक युग (1500–1000 ईसा पूर्व)
  - ❖ उत्तर वैदिक काल (1000–600 ईसा पूर्व)

समय, प्रसार और स्रोत	
भौगोलिक सीमा	उत्तर भारत
अवधि	लौह युग
समय	1500 ईसा पूव – 600 ईसा पूर्व (बीसीई)
सूत्रों का कहना है	वैदिक साहित्य
सभ्यता की प्रकृति	ग्रामीण

- **आर्य और भारत में उनका घर:** ऋग्वैदिक काल के आर्य अर्द्ध खानाबदोश थे। वे मूल रूप से देहाती लोग थे और उनकी संपत्ति का मुख्य स्रोत मवेशी थे।
- ऋग्वैदिक काल में, आर्यों की मातृभूमि पंजाब थी, जिसे उस समय सप्त सिंधु, सात नदियों की भूमि कहा जाता था।
- लगभग 1000 ईसा पूर्व में, भारत में आर्य पूर्व की ओर चले गए और सिंधु–गंगा के मैदान में बस गए।
- इस समय लोहे की कुल्हाड़ियों और हलों का प्रयोग व्यापक हो गया था।
- **वैदिक युग के स्रोत:**
  - ❖ **वैदिक साहित्य:** वैदिक साहित्य को दो व्यापक श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है।
  - ❖ **श्रुतियाँ:** श्रुतियों में चार वेद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद शामिल हैं। इन्हें पवित्र, शाश्वत और निर्विवाद सत्य माना जाता है। 'श्रुति' का अर्थ है सुनना (या अलिखित) जो पीढ़ियों से मौखिक रूप से प्रसारित होता रहा है। वेद 4 प्रकार के हैं:
  - ❖ **ऋग्वेद:** यह सबसे पुराना वेद है और इसकी रचना लगभग 3500 साल पहले की गई थी। ऋग्वेद में एक हजार से अधिक भजन शामिल हैं, जिन्हें सूक्त या "अच्छी तरह से कहा गया" कहा जाता है।
  - ❖ **सामवेद:** यह गायन का सबसे प्रारंभिक संदर्भ है।
  - ❖ **यजुर्वेद:** इसे प्रार्थनाओं का ग्रंथ भी कहा जाता है।
  - ❖ **अथर्ववेद:** जादू और आकर्षण की पुस्तक।
  - ❖ **स्मृतियाँ:** ग्रंथों का एक समूह जिसमें इतिहास, पुराण, तंत्र और आगम जैसे धर्म पर शिक्षाएँ शामिल हैं। स्मृतियाँ शाश्वत नहीं हैं, उन्हें लगातार संशोधित किया जाता है। 'स्मृति' का अर्थ है निश्चित एवं लिखित साहित्य।

क्या आप जानते हैं?

- ★ राष्ट्रीय आदर्श वाक्य "सत्यमेव जयते (सत्य की ही जीत होती है) " मुंडकोपनिषद् से लिया गया है।

- **पुरातात्विक स्रोत:** सिंधु और गंगा के किनारे पंजाब, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के पुरातात्विक स्थलों से लोहे के उपकरण और मिट्टी के बर्तन जैसे सामग्री अवशेष मिले हैं।
- **वैदिक संस्कृति में राजव्यवस्था और समाज:** ऋग्वैदिक राजव्यवस्था रिश्तेदारी आधारित थी। कुल (कबीला) राज्य व्यवस्था की मूल इकाई थी। यह कुलपति नामक मुखिया के अधीन था। कई परिवारों ने मिलकर एक ग्राम बनता था। ग्राम का नेतृत्व ग्रामणी करता था।
- गाँवों के एक समूह को विस (कबीला) कहा जाता था और इसका नेतृत्व विषयपति करते थे। राजन, जन (जनजाति) का मुखिया था और उसे जनसयागोपा (लोगों का संरक्षक) के रूप में संबोधित किया जाता था। ऋग्वैदिक काल (भरत, मत्स्य, पुर) के दौरान कई आदिवासी राज्य (राष्ट्र) थे।
- **राजा:** राजन का मुख्य उत्तरदायित्व अपने कबीले की रक्षा करना था। उनकी शक्तियाँ विधात, सभा (वरिष्ठों की एक परिषद),समिति (लोगों की एक सभा) और गण नामक जनजातीय सभाओं द्वारा सीमित थीं। इनमें से विधात सबसे पुरानी थी। राजा ने अपनी सहायता के लिए एक पुरोहित (मुख्य पुजारी) को नियुक्त किया।
- आर्थिक, राजनीतिक और सैन्य मामलों में राजा को सेनानी (सेना प्रमुख) द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी। ग्रामणी गाँव का नेता था। जब आर्य पूर्व की ओर गंगा–यमुना–दोआब क्षेत्रों में चले गए, तो प्रारंभिक बस्तियों का स्थान क्षेत्रीय राज्यों ने ले लिया।
- वंशानुगत राजत्व का उदय होने लगा। राजशाही शासन प्रणाली में राजा की शक्ति बढ़ जाती थी और वह अपनी स्थिति को मजबूत बनाने के लिए विभिन्न अनुष्ठान और यज्ञ करता था।
- उत्तर वैदिक काल में कई जन या जनजातियों को मिलाकर जनपद या राष्ट्र बनाया गया। समिति और सभा का महत्व कम हो गया और विधात पूरी तरह से गायब हो गई। नये राज्यों का उदय हुआ।
- बलि राजा को प्रजा का स्वैच्छिक योगदान था। यह एक कर था जिसमें एक व्यक्ति के लिए कृषि उपज या मवेशियों का 1/6 हिस्सा शामिल था।
- **सामाजिक संगठन:** वैदिक परिवार पितृसत्तात्मक था। एक कठोर चार–स्तरीय वर्ण व्यवस्था अस्तित्व में थी यानी, पुरोहित ब्राह्मण, योद्धा क्षत्रिय, भूमि के मालिक वैश्य और कुशल श्रमिक शूद्र।
- **महिलाओं की स्थिति:** ऋग्वैदिक समाज में महिलाओं को अपेक्षाकृत कुछ स्वतंत्रता प्राप्त थी। पत्नी को घर की स्वामिनी के रूप में सम्मान दिया जाता था। वह अपने पति के साथ उनके घर में अनुष्ठान कर सकती थी।
- बाल विवाह और सती प्रथा अज्ञात थी। विधवाओं के पुनर्विवाह पर कोई रोक नहीं थी। फिर भी, महिलाओं को अपने माता–पिता से संपत्ति प्राप्त करने के अधिकार से वंचित रखा गया। उन्होंने सार्वजनिक मामलों में कोई भूमिका नहीं निभाई।
- उत्तर वैदिक काल में समाज में महिलाओं की भूमिका, साथ ही परिवार के भीतर भी उनकी स्थिति में गिरावट आई। महिलाएँ अब परिवार में अनुष्ठान नहीं कर सकती थीं। विवाह के नियम बहुत अधिक जटिल एवं कठोर हो गये थे।
- बहुविवाह आम हो गया। विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहित नहीं किया गया। महिलाओं को शिक्षा से वंचित कर दिया गया। अंतर्जातीय विवाहों को अस्वीकार कर दिया गया।
- **युद्ध और धन:** घोड़ों का उपयोग युद्धों में किया जाता था। भूमि, पानी और लोगों तथा मवेशियों पर अधिकार करने के लिए लड़ाइयाँ लड़ी जाती थीं। कोई नियमित सेना नहीं होती थी, लेकिन सभाएँ होती थीं जहाँ लोग मिलते थे और युद्ध और शांति के मामलों पर चर्चा करते थे। अधिकांशतः पुरुष ही युद्धों में भाग लेते थे।
- इस समय ऐसे 2 समूह भी थे, जिनका वर्णन उनके कार्य के आधार पर किया गया था:
  - **पुजारी:** जिन्हें ब्राह्मण भी कहा जाता था। वे विभिन्न अनुष्ठान करते थे।
  - **राजा:** उनके पास राजधानियाँ, महल या सेनाएँ नहीं थीं, न ही वे कर एकत्र करते थे। पुत्र स्वतः ही राजा के रूप में पिता के उत्तराधिकारी नहीं बन जाते।
- लोगों या संपूर्ण समुदाय का वर्णन करने के लिए दो शब्दों का उपयोग किया गया था: एक था जन और दूसरा था विश (वैश्य शब्द विष से बना है)
- विश या जन का उल्लेख नाम से किया गया है। इसलिए हमें पुरु जन या विश, भरत जन या विश, यदु जन या विश इत्यादि का संदर्भ मिलता है।
- **आर्थिक जीवन:** वैदिक काल में अर्थव्यवस्था पशुचारण और कृषि के संयोजन से कायम थी। यद्यपि ऋग्वैदिक आर्यों का व्यवसाय पशुपालन था, फिर भी बढ़ई, रथ निर्माता, कुम्हार, लोहार, बुनकर और चमड़े का काम करने वाले लोग भी थे।
- गेरूए रंग के मिट्टी के बर्तन का श्रेय इसी काल को दिया जाता है। घोड़े, गाय, बकरी, भेड़, बैल और कुत्ते पालतू बनाये जाते थे। जब आर्य स्थायी रूप से सिंध और पंजाब क्षेत्रों में बस गए तो उन्होंने कृषि करना शुरू कर दिया।
- मुख्य फसल यवा (जौ) थी। ऋग्वेद में गेहूं या कपास का कोई उल्लेख नहीं है, हालांकि दोनों की खेती सिंधु लोगों द्वारा की जाती थी। वर्ष में दो फसलें उगाई जाती थीं।
- उत्तर वैदिक काल में आर्यों ने गाय, बकरी, भेड़ और घोड़ों के अलावा हाथियों को भी पालतू बनाया। प्रारंभिक वैदिक काल के कारीगरों के अलावा जौहरी, रंगरेज और धातु गलाने वाले भी थे।
- इस काल की मिट्टी के बर्तन चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति थे। लोहे के हल और कुल्हाड़ी के उपयोग से भूमि के अधिक क्षेत्रों में खेती की जाने लगी। गेहूँ, चावल और जौ की फसलें उगाई जाती थीं। कृषि के विकास के साथ, भूमि पर निजी कब्जे का विचार अस्तित्व में आया।
- नए शिल्प और कलाओं का विकास हुआ जिससे बिक्री के लिए वस्तुओं का अधिशेष उत्पादन हुआ। व्यापार व्यापक हो गया। वस्तु विनिमय प्रणाली (वस्तु विनिमय) प्रचलित थी। वे व्यापारिक लेन–देन के लिए निष्क, सत्मना (सोने के सिक्के) और कृष्णला (चांदी के सिक्के) का उपयोग करते थे।

क्या आप जानते हैं?

ऋग्वैदिक लोगों को ज्ञात धातुएँ

- सोना (हिरण्य)
- लोहा (श्याम)
- तांबा/कांस्य (अयस)

- **धर्म:** ऋग्वैदिक आर्य अधिकतर पृथ्वी, अग्नि, वायु, वरुण (वर्षा), इंद्र (वज्र) जैसे सांसारिक और दिव्य देवताओं की पूजा करते थे। अदिति (अनंत काल की देवी) और उषा (भोर की उपस्थिति) जैसी कुछ महिला देवता भी थीं।
- उनका धर्म यज्ञ केन्द्रित था। प्रार्थना का तरीका वैदिक भजनों का पाठ था। लोगों द्वारा प्रजा (बच्चों), पशु (मवेशी) और धन (धन) के कल्याण के लिए प्रार्थना की जाती थी। गाय को एक पवित्र पशु माना जाता था। मन्दिरों का कोई अस्तित्व नहीं था।
- मूर्ति पूजा अभी तक अस्तित्व में नहीं आई थी। बाद में पौरोहित्य एक व्यवसाय और वंशानुगत बन गया। नए देवता संभवतः गैर–आर्यों से अपनाए गए थे। इंद्र और अग्नि ने अपना महत्व खो दिया था।
- प्रजापति (निर्माता) विष्णु (रक्षक) और रुद्र (संहारक) प्रमुख देवता हो गए थे। बलिदान और अनुष्ठान अधिक विस्तृत हो गए थे।
- **समाधि:** मनुष्य कंकाल के साथ वस्तुएँ पाई गई हैं। अमीर लोगों को अधिक सोने के मोतियों, पत्थर के मोतियों, तांबे की चूड़ियों आदि के साथ दफनाया जाता था, जबकि गरीब लोगों को केवल कुछ बर्तनों के साथ दफनाया जाता था।
- **शिक्षा:**
  - **गुरुकुल शिक्षा प्रणाली:** गुरुकुल प्रणाली एक प्राचीन शिक्षण पद्धति है। गुरुकुल शब्द संस्कृत के शब्द गुरु (शिक्षक या गुरु) और कुल (परिवार या घर) से मिलकर बना है। शिष्य अपने गुरु के साथ रहते थे और उनकी सेवा करते थे और साथ ही सीखते और ज्ञान प्राप्त करते थे।
  - छात्रों को मौखिक परंपरा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त होती थी जिसका अर्थ है रटना, और उन्हें सब कुछ याद रखना आवश्यक था। अध्ययन के विषयों में चार वेद, इतिहास, पुराण, व्याकरण, तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, ज्योतिष, गणित और सैन्य विज्ञान शामिल थे। विद्यार्थियों को अनुशासित जीवन जीने का भी प्रशिक्षण दिया गया। केवल द्विज ही शिष्य हो सकते हैं। कोई भी महिला औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकती थी।
  - **आयु–आधारित आश्रम:** उत्तर वैदिक काल के अंत में, जीवन में चार चरणों (चार आश्रम) की अवीाारणा विकसित हुई।
    - ब्रह्मचर्य (छात्र जीवन)
    - गृहस्थ (विवाहित जीवन)
    - वानप्रस्थ (ध्यान करने के लिए जंगल में जाना)
    - संन्यास (स्वर्ग प्राप्ति के लिए एक तपस्वी का जीवन जीना)।

क्या आप जानते हैं?

- वैदिक युग में एक चरण में राजा को 'गोपति' कहा जाता था, जिसका अर्थ था– गायों का स्वामी।
- ऋग्वैदिक काल में राजन का मुख्य उत्तरदायित्व अपनी जनजाति की रक्षा करना था।
- प्रारंभिक वैदिक समाज में उस सामाजिक विभाजन को क्षत्रिय नाम दिया गया था जिसमें योद्धा वर्ग भी शामिल था।
- बलराम वह हिंदू देवता हैं जिनके चित्रों में कृषि हल आमतौर पर हथियार (आयुध) के रूप में होता है।
- ऐरावत हाथी, इंद्र का वाहन है।
- कुरुक्षेत्र का युद्ध 12 दिनों तक लड़ा गया था।
- गृहस्थ आश्रम अन्य सभी आश्रमों का पोषक था।
- भारतीय समाज में बुजुर्गों को परिवार का मुखिया माना जाता था।
- उत्तर वैदिक काल में आर्य संस्कृति का केन्द्रीय स्थान गंगा का दोआब था।
- वैदिक संस्कृति ने "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना सिखाई है।
- रामायण ग्रंथ आकार में महाभारत से छोटा है।

4. जनपद तथा महाजनपद

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व 16 महाजनपदों का विकास हुआ और ये महाजनपद थे– अंग, मगध, वज्जि, मल्ल, काशी, कुरु, कोसल, अवंती, चेदि, वत्स, पंचाल, मत्स्य, शूरसेन, अश्मक, गांधार और कम्बोज।
  - **मगध (पटना, गया और नालंदा जिले)** – पहली राजधानी राजगृह थी और बाद की राजधानी पाटलिपुत्र थी।
  - **अंग और वंगा (मुंगेर और भागलपुर)**– राजधानी चंपा थी। यह एक समृद्ध व्यापारिक केन्द्र था।
  - **मल्ल (देवरिया, बस्ती, गोरखपुर क्षेत्र)**– राजधानी कुशीनगर थी। यह कई अन्य छोटे राज्यों का स्थल था। इनका मुख्य धर्म बौद्ध धर्म था।
  - **वत्स (इलाहाबाद और मिर्ज़ापुर)**– राजधानी कौशांबी थी। इस राज्य का सबसे महत्वपूर्ण शासक राजा उदयन था।
  - **काशी (बनारस)**– राजधानी वाराणसी थी। हालाँकि कोसल साम्राज्य के विरुद्ध कई लड़ाइयाँ लड़ी गई, अंततः काशी को कोसल साम्राज्य में मिला लिया गया।
  - **कोसल (अयोध्या)**– हालाँकि इसकी राजधानी श्रावस्ती थी जो सहेत–महेट के समान है लेकिन अयोध्या कोशल का एक महत्वपूर्ण शहर था। कोसल में कपिलवस्तु के शाक्यों का जनजातीय गणतांत्रिक क्षेत्र भी शामिल था।
  - **वज्जि (मुजफ्फरपुर और वैशाली)**– वज्जि आठ छोटे राज्यों के संयुक्त गणराज्य का स्थल था, जिनमें लिच्छवि, जनत्रिक और विदेह भी सदस्य थे।
  - **कुरु (थानेश्वर, मेरठ और वर्तमान दिल्ली)**– इसकी राजधानी इंद्रप्रस्थ थी।
  - **पंचाल (पश्चिमी उत्तर प्रदेश)**– इसकी राजधानी काम्पिल्य थी। पहले यह एक राजा राज्य था, बाद में यह एक स्वतंत्र गणराज्य बन गया। इस राज्य में कन्नौज एक महत्वपूर्ण नगर था।
  - **मत्स्य साम्राज्य (अलवर, भरतपुर और जयपुर)**– इसकी राजधानी विराटनगर थी।
  - **अश्मक (नर्मदा और गोदावरी के बीच)**– इसकी राजधानी पेरताई में थी और ब्रह्मदत्त इसका सबसे महत्वपूर्ण शासक था।
  - **गांधार (पेशावर और रावलपिंडी)**– इसकी राजधानी तक्षशिला उत्तर वैदिक युग के दौरान एक व्यापार और शिक्षा केंद्र (प्राचीन तक्षशिला विश्वविद्यालय) के रूप में महत्वपूर्ण थी।
  - **कंबोज (पाकिस्तान का हजारा जिला, उत्तर–पूर्व कश्मीर)**– इसकी राजधानी राजापुर थी। हजारा इस साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण व्यापार और वाणिज्य केंद्र था।

- **अवंती (मालवा)**– अवंती उत्तर और दक्षिण दो भागों में विभाजित थी। उत्तरी भाग की राजधानी उज्जैन में और दक्षिणी भाग की राजधानी महिष्मति में थी।
- **चेदि (बुंदेलखंड)**– चेदि की राजधानी शक्तिमती थी। चेदि साम्राज्य यमुना और नर्मदा नदियों के बीच फैला हुआ था। इस साम्राज्य का एक परिवार बाद में इस शाही परिवार से कलिंग साम्राज्य में विलीन हो गया।
- **शूरसेन (ब्रजमंडल)**– इसकी राजधानी मथुरा थी, और इसका सबसे प्रसिद्ध शासक अवंतीपुत्र था।

क्या आप जानते हैं?

★ बौद्ध ग्रन्थ "अंगुत्तर निकाय" में 16 महाजनपदों का उल्लेख किया गया है।

5. जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म

- **जैन धर्म:** जैन शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द "जिन" से हुई है, जिसका अर्थ है स्वयं और बाहरी दुनिया पर विजय प्राप्त करना। जैन धर्म दुनिया के सबसे पुराने जीवित धर्मों में से एक है। जैन धर्म 24 तीर्थंकरों को खुद के लिए आधार बनाता है।
- एक 'तीर्थंकर', वह होता है जिसने अलग–अलग समय पर धार्मिक सत्य प्रकट किया। प्रथम तीर्थंकर ऋषभ और अंतिम तीर्थंकर महावीर थे। छठी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान जैन धर्म को महावीर के तत्वावधान में प्रमुखता मिली।
- जैनों के अंतिम और 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर थे। वर्धमान महावीर का जन्म 599 ईसा पूर्व में वैशाली के पास कुंडाग्राम में हुआ था। उनकी माता लिच्छवी राजकुमारी त्रिशला थीं। उन्होंने अपना प्रारंभिक जीवन एक राजकुमार के रूप में बिताया और उनका विवाह यशोदा नामक राजकुमारी से हुआ। इस दंपति की एक बेटी हुई थी।
- तीस वर्ष की आयु में उन्होंने अपना घर छोड़ दिया और एक तपस्वी बन गए। बारह वर्षों से अधिक समय तक, महावीर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहे, उन्होंने स्वयं को घोर तपस्या और आत्म–वैराग्य के अधीन किया।
- वह लिच्छवियों का एक क्षत्रिय राजकुमार था, एक समूह जो वज्जी संघ का हिस्सा था। 30 वर्ष की आयु में वे घर छोड़कर जंगल में रहने चले गए।
- बारह वर्षों से अधिक समय तक, महावीर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहे, उन्होंने स्वयं को घोर तपस्या और आत्म–वैराग्य के अधीन किया।
- अपनी तपस्या के तेरहवें वर्ष में, उन्होंने उच्चतम ज्ञान या सर्वज्ञता (सब कुछ जानने या असीम रूप से बु(िमान होने की क्षमता) या सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त किया और जिन (विजेता), महावीर (महान नायक) और केवला के रूप में जाना जाने लगे। तत्पश्चात, वह जिना बन गयो जिसका अर्थ है 'सांसारिक सुख और आसक्ति पर विजय प्राप्त करने वाला'।
- 30 साल के उपदेश के बाद, महावीर की 72 साल की उम्र में 527 ईसा पूर्व में पावापुरी में मृत्यु हो गई।
- **त्रि–रत्न या तीन रत्न:** महावीर ने मोक्ष की प्राप्ति (जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति) और कर्म से मुक्ति के लिए तीन गुना मार्ग का उपदेश दिया। वे हैं:
  - **सही विश्वास (सम्यक दर्शन):** महावीर की शिक्षाओं में विश्वास।
  - **सही ज्ञान (सम्यक ज्ञान):** महावीर की शिक्षाओं और ज्ञान में विश्वास।
  - **सही कार्य (सम्यक चरित्र):** यह महावीर के पाँच महान व्रतों यानी अहिंसा, ईमानदारी, दया, सच्चाई और दूसरों से संबंधित चीजों की लालसा या इच्छा नहीं करने के पालन को संदर्भित करता है।
- **जैन आचार संहिता / जैन धर्म के पाँच सिद्धांत:** महावीर ने अपने अनुयायियों से सदाचारी जीवन जीने को कहा। स्वस्थ नैतिकता से भरा जीवन जीने के लिए उन्होंने पाँच प्रमुख सिद्धांतों का पालन करने का उपदेश दिया। वे हैं:
  - **अहिंसा** – किसी जीव को हानि न पहुँचाना
  - **सत्य** – सत्य बोलना
  - **अस्तेय** – चोरी न करना
  - **अपरिग्रह** – संपत्ति को स्वीकार न करना
  - **ब्रह्मचर्य** – ब्रह्मचर्य
- **जैन धर्म के संप्रदाय/पद्धति:** जैन धर्म को दो संप्रदायों में विभाजित हुआ था–
  - **दिगंबर:** इस संप्रदाय के साधु पूर्ण नग्नता में विश्वास करते हैं। पुरुष साधु कपड़े नहीं पहनते हैं जबकि महिला भिक्षु बिना सिले सादी सफेद साड़ी पहनती हैं। सभी पाँच व्रतों (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य) का पालन करें। माना कि स्त्री मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकती। भद्रबाहु इस संप्रदाय के प्रतिपादक थे।
  - **श्वेतांबर:** साधु सफेद वस्त्र पहनते हैं। केवल 4 व्रतों का पालन करें (ब्रह्मचर्य को छोड़कर)। विश्वास करें कि महिलाएं मुक्ति प्राप्त कर सकती हैं। स्थूलभद्र इस संप्रदाय के प्रतिपादक थे।
- **जैन परिषद्:**
  - **प्रथम जैन परिषद्:**
    - यह तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र में आयोजित किया गया था और इसकी अध्यक्षता स्थूलभद्र ने की थी।
    - 12 अंगो का संकलन किया गया था।
  - **दूसरी जैन परिषद्:**
    - यह 512 ईस्वी में वल्लभी (गुजरात) में आयोजित किया गया था और इसकी अध्यक्षता देवर्धि क्षमाश्रमण ने की थी।
    - इसने 12 अंग और 12 उपांगों के अंतिम रूप से संकलित किया गया था।
- **जैन धर्म का पतन:** शाही संरक्षण की कमी, इसकी गंभीरता, गुटबाजी और बौद्ध धर्म के प्रसार के कारण भारत में जैन धर्म का पतन हुआ।
- **बौद्ध धर्म:** गौतम बुद्ध वर्तमान नेपाल में कपिलवस्तु के शाक्यों के एक क्षत्रिय कबीले के प्रमुख शुद्धोदन के पुत्र थे। उनका बचपन का नाम सिद्धार्थ था। चूंकि वे शाक्य वंश के थे, इसलिए उन्हें "शाक्य मुनि" के नाम से भी जाना जाता था।
- गौतम बुद्ध का जन्म 540 ईसा पूर्व में कपिलवस्तु के पास लुंबिनी वन में हुआ था। उनकी माता, मायादेवी (महामाया) का उनके जन्म के कुछ दिनों के बाद निधन हो गया और उनका पालन–पोषण उनकी सौतेली माँ गौतमी ने किया। सांसारिक मामलों की ओर उनका ध्यान हटाने के

लिए, उनके पिता ने सोलह वर्ष की आयु में उनकी शादी यशोधरा नामक राजकुमारी से कर दी। उन्होंने कुछ समय के लिए एक सुखी वैवाहिक जीवन व्यतीत किया और राहुल नाम का एक पुत्र हुआ।

- 512 ईसा पूर्व में, वह अपना महल छोड़कर सत्य की खोज में जंगल में चले गये। अपने भटकने के दौरान, वह कई दिनों तक एक पीपल के पेड़ के नीचे बैठे रहे जब तक कि उन्हें ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो गई।
- जिस स्थान पर उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया, महाबोधि मंदिर, बोधगया (बिहार) में आज भी मौजूद है। अपने ज्ञानोदय के बाद, बुद्ध ने लोगों को अपना ज्ञान प्रदान करने का निर्णय लिया।
- वे वाराणसी गए और वहाँ अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया। उन्होंने मगध और कोसल के राज्यों में प्रचार किया। बड़ी संख्या में लोग उनके अपने परिवार सहित उनके अनुयायी बन गए। पैंतालीस वर्षों के उपदेश के बाद, उन्होंने अस्सी वर्ष की आयु में कुशीनगर (उत्तर प्रदेश में गोरखपुर के पास) में 483 ईसा पूर्व में अंतिम सांस ली।
- **बुद्ध के चार आर्य सत्य**
  - **दुख (दुख का सत्य):** बौद्ध धर्म के अनुसार, सब कुछ दुख है (सब्बम दुखम)। यह दर्द का अनुभव करने की क्षमता को संदर्भित करता है न कि केवल एक व्यक्ति द्वारा अनुभव किए गए वास्तविक दर्द और दुःख को।
  - **समुदाय (दुख का कारण):** तृष्णा (इच्छा) दुख का मुख्य कारण है। हर दुख का एक कारण होता है और यह जीवन का एक हिस्सा और पार्सल है।
  - **निरोध (दुःख का अंत) :** निर्वाणधनिर्वाण की प्राप्ति से पीड़ाध्दुःख का अंत हो सकता है।
  - **अष्टांगिक–मार्ग (दुख के अंत की ओर ले जाने वाले मार्ग):** दुख का अंत अष्टांगिक मार्ग में निहित है।
- **अष्टांगिक–मार्ग:** इसमें ज्ञान, आचरण और ध्यान प्रथाओं से संबंधित विभिन्न परस्पर क्रियाएं शामिल हैं।
  - सम्यक् दृष्टि (सम्मा दित्ती)
  - सम्यक् संकल्प (सम्मा संगकप्पा)
  - सम्यक् वाच (सम्मा वेक्का)
  - सम्यक् कर्मांत (सम्मा कम्मंता)
  - सम्यक् आजीविका (सम्मा अजिवा)
  - सम्यक् स्मृति (सम्मा सती)
  - सम्यक् व्यायाम (सम व्यायाम)
  - सम्यक् समाधि (सम्मा समाधि)
- **बौद्ध धर्म में विभाजन:** कनिष्क के शासनकाल के दौरान, बौद्ध भिक्षु नागार्जुन ने बौद्ध धर्म के पालन के तरीके में सुधारों की शुरुआत की। परिणामस्वरूप, बौद्ध धर्म हीनयान और महायान के रूप में दो भागों में विभाजित हो गया।
  - **हीनयान (निम्न वाहन):** यह बुद्ध द्वारा प्रचारित मूल पंथ था। इस रूप के अनुयायी बुद्ध को अपना गुरु मानते थे और उन्हें भगवान के रूप में नहीं पूजते थे। उन्होंने मूर्ति पूजा से इनकार किया और लोगों की भाषा पाली को जारी रखा।
  - **महायान (उच्च वाहन):** इस संप्रदाय में, बुद्ध को भगवान और बोधिसत्व को उनके पिछले अवतार के रूप में पूजा जाता था। अनुयायियों ने बुद्ध और बोधिसत्व के चित्र और मूर्तियाँ बनाई और प्रार्थनाएँ कीं, और उनकी स्तुति में भजनों (मंत्रों) का पाठ किया। बाद में, उन्होंने अपनी धार्मिक पुस्तकें संस्कृत में लिखीं। बौद्ध धर्म के इस रूप को कनिष्क ने संरक्षण दिया था।
- **त्रिपिटक:** पिटकों की संख्या तीन है–
  - सुत्त पिटक
  - विनय पिटक
  - अभिधम्म पिटक

बौद्ध परिषदें

आयोजन	स्थान	अध्यक्ष	संरक्षक राजा
पहला	राजगृह	महाकस्सप	अजातशत्रु
दूसरा	वैशाली	सबकामी	कालाशोक
तीसरा	पाटलिपुत्र	मोगलीपुत्ततिस्स	अशोक
चौथी	कश्मीर	वसुमित्र	कनिष्क

क्या आप जानते हैं?

- जैन धर्म ने 'अणुव्रत' की अवधारणा प्रदान की थी।
- संघ के प्रति आस्था वह तत्व है जो धम्म में वर्णित नहीं था।
- आनंद मंदिर बागान (म्यांमार) में स्थित है। यह एक बौद्ध मंदिर है जिसे 1105 ईसवी में पेगन राजवंश के राजा क्यानज़िथा के शासनकाल के दौरान बनाया गया था। इसका निर्माण 12वीं शताब्दी की शुरुआत में हुआ था। मंदिर की प्रेरणा भारतीय भिक्षुओं की कहानियों से मिली। इसे बागान के सबसे बड़े और सबसे अच्छे संरक्षित मंदिर के रूप में जाना जाता है।
- नयनार और अलवर : दक्षिण भारत में, भगवान कृष्ण (विष्णु) के भक्तों को अलवर संत कहा जाता था और भगवान शिव के भक्तों को नयनार संत कहा जाता था।
- औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में स्थित अजंता की गुफाएँ बौद्ध मंदिरों के रूप में प्रसिद्ध हैं। राजगृह बिहार राज्य में स्थित है।
- बुद्ध का पहला उपदेश, जिसे धम्मचक्कप्पवत्तन के नाम से जाना जाता है, को भारतीय कला में चक्र से प्रदर्शित किया जाता है।
- जैन समुदाय का पवित्र स्थान सम्मेद शिखर झारखंड में स्थित है। दिगंबर और श्वेतांबर दोनों इसे सबसे महत्वपूर्ण जैन तीर्थ (तीर्थस्थल) मानते हैं, क्योंकि यह वह स्थान है जहां चौबीस जैन तीर्थंकरों में से बीस ने कई अन्य भिक्षुओं के साथ मिलकर मोक्ष प्राप्त किया था।
- सुबन्धु, घटखर्पर, क्षपणक, वीरसेन ये सभी जैन धर्म के प्रचारक थे।
- महावीर के बचपन का नाम वर्धमान था।

6. मौर्य साम्राज्य

- **चंद्रगुप्त मौर्य:** मौर्य साम्राज्य भारत का पहला सबसे बड़ा साम्राज्य था। चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध में साम्राज्य की स्थापना की।
- विष्णुगुप्त, जो बाद में चाणक्य या कौटिल्य के नाम से जाने गए, नंद राजा से अलग हो गए और उन्हें गद्दी से हटाने की कसम खाई। चंद्रगुप्त, शायद मैसेडोनिया के अलेक्जेंडर से प्रेरित होकर, एक सेना जुटा रहा था और अपना राज्य स्थापित करने के अवसरों की तलाश कर रहा था।
- सिकंदर की मृत्यु की खबर सुनकर चंद्रगुप्त ने लोगों को भड़काया और उनकी मदद से उस यूनानी सेना को खदेड़ दिया जिसे सिकंदर ने

तक्षशिला में छोड़ा था। फिर उसने और उसके सहयोगियों ने पाटलिपुत्र पर चढ़ाई की और 321 ईसा पूर्व में नंद राजा को हराया। इस प्रकार मौर्य वंश का शासन प्रारम्भ हुआ।

- चंद्रगुप्त के शासनकाल के दौरान, अलेक्जेंडर के सेनापति सेल्यूकस, जिसका एशिया माइनर से लेकर भारत तक के देशों पर नियंत्रण था, ने सिंधु को पार किया और चंद्रगुप्त से हार गया। कहा जाता है कि सेल्यूकस का दूत मेगस्थनीज भारत में ही रहा था और उसका इंडिका नामक लेख मौर्यकालीन राजनीति और समाज के बारे में एक उपयोगी अभिलेख है। गंगा के मैदान पर नियंत्रण पाने के बाद, चंद्रगुप्त ने सिकंदर के निधन से उत्पन्न शून्य का लाभ उठाने के लिए अपना ध्यान उत्तर–पश्चिम की ओर लगाया। वर्तमान अफगानिस्तान, बलूचिस्तान और मकरान वाले इन क्षेत्रों ने बिना किसी प्रतिरोध के आत्मसमर्पण कर दिया। इसके बाद चंद्रगुप्त मध्य भारत चले गये।
- भद्रबाहु, एक जैन भिक्षु, चंद्रगुप्त मौर्य को दक्षिणी भारत में ले गए। चंद्रगुप्त ने श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में सल्लेखना (जैन अनुष्ठान जिसमें एक व्यक्ति अपनी मृत्यु तक उपवास करता है) किया।

क्या आप जानते हैं?

- ★ चंद्रगुप्त के मंत्री चाणक्य को अर्थशास्त्र नामक पुस्तक का श्रेय दिया जाता है, जो मौर्य प्रशासन का विस्तृत विवरण देती है।

- **बिन्दुसार:** उनका वास्तविक नाम सिंहसेन था। वह चंद्रगुप्त मौर्य के पुत्र थे।
- यूनानियों ने बिंदुसार को अमित्रघात कहा था, जिसका अर्थ है 'शत्रुओं का वध करने वाला'।
- अपने शासनकाल के दौरान बिन्दुसार मौर्य साम्राज्य को कर्नाटक तक विस्तारित करने में सफल रहे।
- उनकी मृत्यु के समय उपमहाद्वीप का एक बड़ा भाग मौर्य आधिपत्य में आ गया था।
- उन्होंने अपने पुत्र अशोक को उज्जैन का राज्यपाल नियुक्त किया। उसकी मृत्यु के बाद अशोक मगध की गद्दी पर बैठा।
- **अशोक:** अशोक, 2300 साल पहले अपने दादा चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित साम्राज्य के इतिहास के सबसे महान शासकों में से एक थे। चंद्रगुप्त को चाणक्य या कौटिल्य नामक एक बुद्धिमान व्यक्ति का समर्थन प्राप्त था। चाणक्य के कई विचार अर्थशास्त्र नामक पुस्तक में लिखे गए थे।
- अशोक पहला शासक था जिसने शिलालेखों के माध्यम से लोगों तक अपना संदेश पहुंचाने का प्रयास किया। ये शिलालेख प्राकृत में थे और ब्राह्मी लिपि में लिखे गए थे। उन्हें 'देवनामप्रिय' के नाम से जाना जाता था जिसका अर्थ है 'देवताओं का प्रिय'।
- **कलिंग युद्ध:** कलिंग तटीय उड़ीसा का प्राचीन नाम था। अशोक ने 261 ईसा पूर्व में कलिंग पर विजय प्राप्त करने के लिए युद्ध लड़ा था। जब उसने हिंसा और रक्तपात देखा तो वह भयभीत हो गया और इसलिए उसने और युद्ध न लड़ने का फैसला किया। वह विश्व के इतिहास में एकमात्र ऐसे राजा हैं जिन्होंने युद्ध जीतने के बाद विजय त्याग दी। युद्ध की भयावहता का वर्णन स्वयं राजा ने शिलालेख XIII में किया था।

क्या आप जानते हैं?

- ★ चार सिंहों वाला हमारा राष्ट्रीय प्रतीक सारनाथ के अशोक स्तंभ की प्रतिकृति है।

- अशोक ने अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा को बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए श्रीलंका भेजा। उन्होंने धम्म का संदेश फैलाने के लिए मिशनरियों को पश्चिम एशिया, मिस्र और पूर्वी यूरोप में भी भेजा।
- कृपया ध्यान दें, अशोक ने तीसरी बौद्ध संगीति अपनी राजधानी पाटलिपुत्र में आयोजित की थी।

क्या आप जानते हैं?

- ★ अशोक की सिंह चिन्ह: भारतीय गणराज्य का प्रतीक सारनाथ में स्थित अशोक के स्तंभों में से एक की सिंह राजधानी से अपनाया गया है। वृत्ताकार आधार से बना चक्र, अशोक चक्र राष्ट्रीय ध्वज का एक हिस्सा है।
- ★ रामपुरवा बैल: यह बिहार के रामपुरवा में पाए गए मौर्य स्तंभ का हिस्सा था, और अब इसे राष्ट्रपति भवन में रखा गया है। यह उस समय के मूर्तिकारों के कौशल का उदाहरण है।

शिलालेखों की लिपि

- ★ साँची में – ब्राह्मी
- ★ कंधार में – ग्रीक और अरामी
- ★ उत्तर पश्चिमी भाग में – खरोष्ठी

- **बृहद्रथ:** बृहद्रथ मौर्य वंश का अंतिम शासक था, जिसने लगभग 187 ईसा पूर्व से 180 ईसा पूर्व तक शासन किया था। वह सम्राट अशोक के पोते और अशोक के पुत्र कुणाल के पुत्र थे। बृहद्रथ का शासनकाल राजनीतिक अस्थिरता और आंतरिक कलह से परिपूर्ण था अत: उसके ही मंत्री पुष्यमित्र शुंग द्वारा हत्या कर दी गई, जिन्होंने तब शुंग वंश की स्थापना की।
- **मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण:**
  - ❖ अशोक के उत्तराधिकारी बहुत कमज़ोर थे।
  - ❖ साम्राज्य के विभिन्न भागों में लगातार विद्रोह।
  - ❖ बैक्ट्रियन यूनानियों के आक्रमण ने साम्राज्य को कमजोर कर दिया।
  - ❖ अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ की उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने हत्या कर दी जिसने शुंग वंश की स्थापना की।

क्या आप जानते हैं?

- ★ जीवन वृत्त, आंतरिक नीति तथा विदेश नीति की जानकारी अशोक के शिलालेखों से मिलती है।
- ★ मौर्य काल में खान पर सिर्फ राज्य का ही अधिकार था।
- ★ सारनाथ मौर्य स्तंभ शिलालेख भारत के सुदूर पूर्वी भाग में स्थित है।
- ★ मेगस्थनीज के अनुसार, चंद्रगुप्त मौर्य के शासन काल में समाज 7 जातियों में विभाजित था।
- ★ मौर्य साम्राज्य के पूर्वी भारतीय प्रांत की राजधानी तोसलि में थी।
- ★ अशोक के साम्राज्य के उत्तर पश्चिमी भाग में उनके शिलालेख खरोष्ठी लिपि में लिखे गए थे।
- ★ मौर्य प्रशासन में कर्मंतिका, उद्योगों और कारखानों का प्रमुख था।
- ★ हाथियों का सर्वप्रथम उपयोग मगध राज्य ने युद्ध में किया था।
- ★ मगध का शासक बिंबिसार , बुद्ध का समकालीन था।
- ★ सुदर्शन झील का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रान्तीय गवर्नर पुष्यगुप्त ने करवाया था। बाद में 150 ई. में रुद्रदामन प्रथम (शक शासक) द्वारा इसकी मरम्मत करायी गयी थी।

- ★ मौर्य साम्राज्य की स्थापना से पहले संपूर्ण उत्तरी भारत सोलह महाजनपदों एवं गणराज्यों में विभाजित था।
- ★ वृषभ चिह्न वाला रामपुरवा अशोक स्तंभ चंपारण (बिहार) में स्थित है।
- ★ भारतीय इतिहास में पहली बार लोगों के जन्म और मृत्यु का पंजीकरण मौर्य काल में शुरू किया गया था।
- ★ सम्राट अशोक के प्रमुख शिलालेख XIII में हमें पड़ोसी देशों का वर्णन मिलता है। इसमें कंबोज, नाभाक, भोज, आंध्र आदि का उल्लेख किया गया है।
- ★ भारत का राष्ट्रीय प्रतीक सारनाथ के स्तंभ से लिया गया है। सारनाथ स्तंभ की स्थापना 250 ईसा पूर्व अशोक ने की थी।

7. उत्तरवर्ती मौर्य काल

- **शुंग वंश:** अंतिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ की हत्या उसके ही सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने की थी, जिसने मगध में अपना शुंग राजवंश स्थापित किया था। पुष्यमित्र ने पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया।

क्या आप जानते हैं?

- ★ संस्कृत के दूसरे वैयाकरण पतंजलि को पुष्यमित्र का संरक्षण प्राप्त था।

- पुष्यमित्र का उत्तराधिकारी उसका पुत्र अग्निमित्र हुआ। इस अग्निमित्र को कालिदास के मालविकाग्निमित्र का नायक कहा जाता है। नाटक में सिंधु नदी के तट पर यूनानियों पर अग्निमित्र के पुत्र वसुमित्र की जीत का भी उल्लेख है।
- शुंगों के कमजोर उत्तराधिकारियों को लगातार इंडोबैक्ट्रियन और इंडो–पार्थियनों से खतरों का सामना करना पड़ा। शुंग राजवंश लगभग सौ वर्षों तक चला। अंतिम शुंग राजा देवभूति थे। उसकी हत्या उसके ही मंत्री वासुदेव कण्व ने कर दी थी। वासुदेव ने मगध में कण्व वंश का शासन स्थापित किया।

क्या आप जानते हैं?

- ★ कलिंग का राजा खारवेल शुंगों का समकालीन था। हाथीगुम्फा शिलालेख से हमें खारवेल के बारे में जानकारी मिलती है।

- **कण्व:** कण्व वंश से चार राजा हुए और उनका शासन केवल 45 वर्षों तक चला। कण्वों के पतन के बाद गुप्त वंश के उदय तक मगध का इतिहास किसी भी महत्व से रहित है। कण्व शासक थे: वासुदेव, भूमि मित्र, नारायण तथा सुशर्मन।
- अंतिम कण्व शासक सुसरमन की हत्या आंध्र के सिमुका नाम के उसके शक्तिशाली सामंत प्रमुख ने की थी, जिसने सातवाहन राजवंश की नींव रखी थी।
- **सातवाहन:** उत्तर में कुषाण और दक्षिण में सातवाहन (आंध्र) क्रमशः लगभग 300 वर्षों और 450 वर्षों तक फले–फूले। कहा जाता है कि सातवाहन वंश के संस्थापक सिमुक ने तेईस वर्षों तक शासन किया था।
- उनके उत्तराधिकारी उनके भाई कृष्ण थे। उसके भतीजे शातकर्णी ने दस वर्षों तक शासन किया। गौतमीपुत्र शातकर्णी परिवार का सबसे महान शासक था। उनकी मां गौतमी बलश्री द्वारा प्रकाशित नासिक प्रशस्ति में, गौतमीपुत्र शातकर्णी को शक, यवन (यूनानी) और पहलव (पार्थियन) का विनाशक बताया गया है।
- **शक:** भारत में इंडो–ग्रीक शासन का अंत शकों ने किया। खानाबदोश के रूप में शक भारी संख्या में आए और पूरे उत्तरी और पश्चिमी भारत में फैल गए। शक लोग तुर्क खानाबदोशों की जनजाति के विरुद्ध थे।
- शक सीथियन, खानाबदोश प्राचीन ईरानी थे और संस्कृत में शक के नाम से जाने जाते थे। शक शासन की स्थापना गांधार क्षेत्र में माओस या मोगेन ने की थी और उसकी राजधानी 'सिरकप' थी। मोरा शिलालेख में उनके नाम का उल्लेख है। उनके सिक्कों पर बुद्ध और शिव की छवियाँ हैं।
- रुद्रदामन शकों का सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध राजा था। उनका जूनागढ़/गिरनार शिलालेख शुद्ध संस्कृत में पहला शिलालेख था। भारत में शकों को भारतीय समाज में समाहित कर लिया गया। उन्होंने भारतीय नाम अपनाना और भारतीय धार्मिक मान्यताओं का पालन करना शुरू कर दिया।
- शकों ने अपने प्रशासन के लिए क्षत्रपों या क्षत्रपों को प्रांतीय गवर्नर नियुक्त किया।
- **कुषाण:** कनिष्क सभी कुषाण सम्राटों में सबसे महान था। उन्होंने 78 ईसवी में संप्रभुता ग्रहण की और एक नए युग की नींव रखकर अपने शासन की घोषणा की, जो बाद में शक युग बन गया। कुषाण की राजधानी प्रारंभ में काबुल थी। बाद में इसे पेशावर या पुरुषपुरा में स्थानांतरित कर दिया गया।
- कनिष्क एक कट्टर बौद्ध था। कनिष्क का साम्राज्य एक बौद्ध साम्राज्य था। कनिष्क ने पाटलिपुत्र के एक प्रसिद्ध भिक्षु अश्वघोष के प्रभाव में बौद्ध धर्म अपनाया। एक महान योद्धा और साम्राज्य–निर्माता होते हुए भी कनिष्क महायानवाद के प्रतिपादक और समर्थक के समान ही था।
- कनिष्क ने बौद्ध धर्म को राज्य धर्म बनाया और मथुरा, तक्षशिला और अपने राज्य के कई अन्य हिस्सों में कई स्तूप और मठ बनवाए। उन्होंने बुद्ध के सुसमाचार के प्रचार के लिए बौद्ध मिशनरियों को तिब्बत, चीन और मध्य एशिया के कई देशों में भेजा।
- उन्होंने बौद्ध धर्म के विभिन्न विद्यालयों के बीच मतभेदों को सुलझाने के लिए श्रीनगर के पास कुंडलवन में चौथी बौद्ध परिषद का आयोजन किया। इस परिषद् में ही बौद्ध धर्म हीनयान और महायान में विभाजित हो गया।
- कनिष्क ने कश्मीर में कनिष्कपुरा शहर की स्थापना की और पुरुषपुर की राजधानी को शानदार सार्वजनिक भवनों से सुसज्जित किया। कनिष्क के उत्तराधिकारी कमजोर एवं अयोग्य थे। कुषाण साम्राज्य तेजी से छोटी–छोटी रियासतों में विघटित हो गया।
- **कडफिसेस प्रथम:** वह कुषाणों का पहला प्रसिद्ध सैन्य और राजनीतिक नेता था। उन्होंने इंडो–ग्रीक और इंडो–पार्थियन शासकों को उखाड़ फेंका और खुद को बैक्ट्रिया के एक संप्रभु शासक के रूप में स्थापित किया। उसने काबुल, गांधार और सिन्धु तक अपनी शक्ति बढ़ायी।
- **कडफिसेस द्वितीय:** उसने चीन और रोम के सम्राटों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखे और विदेशी देशों के साथ व्यापार और वाणिज्य को प्रोत्साहित किया। उनके कुछ सिक्कों पर भगवान शिव की आकृतियाँ अंकित थीं और उनकी शाही उपाधियाँ खरोष्ठी भाषा में अंकित थीं।

क्या आप जानते हैं?

- ★ अश्वघोष पहले संस्कृत नाटक, बुद्धचरित के प्रसिद्ध लेखक थे।
- ★ सातवाहन वंश के शासकों को 'दक्षिणापथ' के स्वामी के रूप में जाना जाता था।
- ★ कुषाण काल में सबसे बड़ा विकास कला के क्षेत्र में हुआ था।
- ★ प्राचीन भारत में वाकाटक राजवंश के संस्थापक विंध्यशक्ति था।
- ★ सिक्के इंडो–ग्रीक शासकों के बारे में जानकारी का मुख्य स्रोत हैं।
- ★ चरक कनिष्क के राजचिकित्सक थे।

8. संगम काल तथा दक्षिण भारतीय राजवंश

- 'संगम' शब्द उन कवियों के संघ को संदर्भित करता है जो मदुरै में पांड्य राजाओं के शाही संरक्षण में फले–फूले। इन कवियों द्वारा रचित कविताओं को सामूहिक रूप से संगम साहित्य के रूप में जाना जाता है। जिस काल में इन कविताओं की रचना की गई उसे संगम युग कहा जाता है।
- **दक्षिण भारतीय साम्राज्य:**
- **चेर:** चेरों ने तमिलनाडु के मध्य और उत्तरी त्रावणकोर, कोचीन, दक्षिण मालाबार और कोंगु क्षेत्रों पर शासन किया। पथितरूपथु (दस दशकों के छंदों का संग्रह) चेर राजाओं के बारे में जानकारी प्रदान करता है।
- यह ज्ञात है कि चेर राजा सेनगुट्टुवन उत्तर भारत में एक सैन्य अभियान पर गये थे। वह सिलापथिकरम के एक महाकाव्य पात्र कन्नगी की मूर्ति बनाने के लिए हिमालय से पत्थर लाए थे। उन्होंने पैटिनी पंथ की शुरुआत की।
- चेरनसेनगुट्टुवन के छोटे भाई इलांगोअडिगल थे। वह सिलप्पथिकारम के लेखक थे। एक अन्य चेर राजा, चेरलइरुम्पोराई ने अपने नाम पर सिक्के जारी किए। कुछ चेरा सिक्कों पर धनुष और बाण का चिह्न अंकित है।
- प्रमुख चेर शासक उदयनचेरालाथन, इमायावरंबन नेदुनचेरालाथन, चेरनसेनगुट्टुवन और चेरालिरुम्पोराई थे।
- **चोल:** संगम काल का चोल साम्राज्य वेंकटम (तिरुपति) पहाड़ियों तक फैला हुआ था। कावेरी डेल्टा क्षेत्र राज्य का मध्य भाग बना रहा। इस क्षेत्र को बाद में चोलमंडलम के नाम से जाना गया। करिकल वलावन या करिकालन चोल राजाओं में सबसे प्रसिद्ध था।
- उन्होंने तंजावुर क्षेत्र के एक छोटे से गाँव वेन्नी में चेरों, पांड्यों और उनका समर्थन करने वाले ग्यारह वेलिर सरदारों की संयुक्त सेना को हराया। उन्होंने जंगलों को खेती योग्य भूमि में बदल दिया। उन्होंने कृषि को विकसित करने के लिए कावेरी नदी पर कल्लनई (अर्थात् पत्थर से बना बाँध) बनवाया।
- उनके बंदरगाह पुहार ने हिन्द महासागर के विभिन्न क्षेत्रों के व्यापारियों को आकर्षित किया। पाथिनेन कीज़ कनक्कु में एक काव्य कृति, पट्टिनापलाई, करिकालन के शासन के दौरान व्यापारिक गतिविधि की विस्तृत जानकारी देती है।
- प्रमुख चोल शासक इलानचेत्सेनी, करिकल वलावन, कोकेंगनान, किल्ली वलावन और पेरुनार्किलि थे।
- **पांड्य:** पांड्यों ने वर्तमान दक्षिणी तमिलनाडु पर शासन किया। पांड्य राजाओं ने तमिल कवियों और विद्वानों को संरक्षण दिया। संगम साहित्य में पाण्ड्य राजाओं के अनेक नामों का उल्लेख मिलता है। नेदुनचेझियान को सबसे लोकप्रिय योद्धा माना जाता है। उन्होंने तलयालंगनम में चेरा, चोल और पांच वेलिर सरदारों की संयुक्त सेना को हराया।
- कोरकाई के स्वामी के रूप में उनकी प्रशंसा की जाती है। पांड्य देश मोती के शिकार के लिए प्रसिद्ध था। पांड्य राजाओं ने अनेक सिक्के जारी किये। उनके सिक्कों में एक तरफ हाथी और दूसरी तरफ मछलियाँ होती हैं। मुदुकुडिमीपेरुवाजुथी ने कई वैदिक अनुष्ठानों के प्रदर्शन की स्मृति में सिक्के जारी किए।
- प्रमुख पांड्य शासक नेदियॉन, नानमारन, मुदुकुदुमी पेरुवाझुथि और नेदुनचेझियान थे।

संगम राजवंश: शाही प्रतीक चिह्न

मुवेंदार	चिह्न	पत्तन	प्रतीक
चेर	पल्मिरा फूल	तोंडी	धनुष बाण
चोल	अथी फूल	पुहर/ उरैयुर	चीता
पांड्य	नीम फूल	कोरकई	दो मछली

क्या आप जानते हैं?

- ★ शिलालेख, ताम्रपट्ट तथा साहित्यिक स्रोत संगम युग के बारे में जानकारी का स्रोत हैं।
- ★ सिलापतिकरम को संगम युग के बारे में जानकारी के मुख्य स्रोतों में से एक माना जाता है।
- ★ कलिंग के राजा खारवेल के हाथीगुम्फा शिलालेख से संगम युग की जानकारी मिलती है।
- ★ टॉलेमी का भूगोल में संगम युग का उल्लेख है।
- ★ समाधि और नायक पत्थर के स्मारक संगम युग के दौरान महापाषाण संस्कृति का प्रमाण प्रदान करते हैं।
- ★ तोलकप्पियम और एट्टुथोगई, पाथिनेन कीज कनक्कू और पट्टिनप्पालाई तथा सिलापथिकारम और मणिमेकलई वे साहित्यिक कृतियाँ हैं जो संगम साहित्य का हिस्सा हैं।
- ★ संगम युग के दौरान तमिझगम में वेंगादम (तिरुपति पहाड़ी) से कन्याकुमारी (केप कोमोरिन) भौगोलिक क्षेत्र शामिल था।
- ★ चोल शासक आदित्य प्रथम ने 897 ई. में पल्लवों को हराकर कांची पर कब्ज़ा कर लिया।
- ★ मार्कोपोलो वेनिस का एक व्यापारी, अन्वेषक और साहसी व्यक्ति था। मार्कोपोलो चीन से घर जाते समय हिंद महासागर के पार दो साल की समुद्री यात्रा के बाद 1292 ई. में भारत के कोरोमंडल तट पर उतरा था। वह तंजौर के आसपास तमिल पांड्य साम्राज्य में आया था।

9. गुप्त तथा उत्तरवर्ती गुप्तकाल

- **श्री गुप्त (तीसरी शताब्दी के उत्तरार्द्ध):** इन्हें गुप्त वंश का संस्थापक माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने वर्तमान बंगाल और बिहार के कुछ हिस्सों पर शासन किया था। वह सिक्कों पर अंकित होने वाला पहला गुप्त शासक था।
- उनका उत्तराधिकारी उनका पुत्र घटोत्कच था। शिलालेखों में दोनों का उल्लेख महाराजा के रूप में किया गया है।
- **चंद्रगुप्त प्रथम (लगभग 319.335 ई.):** चंद्रगुप्त प्रथम ने प्रसिद्ध और शक्तिशाली लिच्छवी परिवार की कुमारदेवी से विवाह किया।
- इस परिवार का समर्थन प्राप्त करने के बाद, चंद्रगुप्त उत्तरी भारत में विभिन्न छोटे राज्यों को खत्म कर सके और खुद को एक बड़े राज्य का राजा घोषित कर सके। चंद्रगुप्त के बताए गए सोने के सिक्कों पर चंद्रगुप्त, कुमारदेवी और किंवदंती 'लिच्छवैय' की छवियां हैं।
- **समुद्रगुप्त (लगभग 335.380):** चंद्रगुप्त प्रथम का पुत्र समुद्रगुप्त, राजवंश का सबसे महान शासक था। समुद्रगुप्त के दरबारी कवि हरिसेन द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति को इलाहाबाद स्तंभ पर उत्कीर्ण किया गया था। यह इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख समुद्रगुप्त के शासनकाल की जानकारी का मुख्य स्रोत है।
- **चंद्रगुप्त द्वितीय (380–415 ई.):** चंद्रगुप्त द्वितीय समुद्रगुप्त का पुत्र था। उन्हें विक्रमादित्य के नाम से भी जाना जाता था। उसने शक शासकों को हराकर पश्चिमी मालवा और गुजरात पर अधिकार कर लिया। उन्होंने दक्षिणी भारत के शासकों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखा। माना जाता है कि कुतुब मीनार के पास स्थित लौह स्तंभ का निर्माण विक्रमादित्य ने करवाया था।
- चीन के बौद्ध विद्वान फाह्यान ने उसके शासनकाल के दौरान भारत का दौरा किया। कहा जाता है कि विक्रमादित्य के दरबार में महानतम लेखक और कलाकार (नवरत्न) निवास करते थे। कहा जाता है कि कालिदास उनमें से एक थे।

विक्रमादित्य के दरबार में नवरत्न	
कालिदास	संस्कृत कवि
हेरिषेण	संस्कृत कवि
अमरसिंह	कोषकार
धनवंतरी	चिकित्सक
क्षपणक	ज्योतिषी
शंकु	आर्किटेक्ट
वराहमिहिर	खगोलविद
वररुचि	व्याकरणशास्त्री और संस्कृत विद्वान
वेताल भट्ट	जादूगर

- चन्द्रगुप्त द्वितीय के बाद उसका पुत्र कुमारगुप्त प्रथम आया, जिसने प्रसिद्ध नालन्दा विश्वविद्यालय का निर्माण कराया। कुमारगुप्त के उत्तराधिकारी स्कंदगुप्त को हूणों के आक्रमण के रूप में एक नए खतरे का सामना करना पड़ा।
- उसने उन्हें हरा दिया और उन्हें भगा दिया। लेकिन बारह वर्ष बाद वे फिर आये और गुप्त साम्राज्य की कमर तोड़ दी। महान गुप्तों में से अंतिम बालादित्य था, माना जाता है कि वह नरसिम्हा गुप्त प्रथम था।
- वह स्वयं बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित थे। वह मिहिरकुल को भेंट भी देता था लेकिन बौद्ध धर्म के प्रति उसकी शत्रुता से व्यथित था। इसलिए उन्होंने भेंट देना बंद कर दिया। हालाँकि बालादित्य उसे कैद करने में सफल रहा, लेकिन मिहिरकुल विश्वासघाती हो गया और उसने बालादित्य को मगध से भगा दिया। बालादित्य के बाद महान गुप्त साम्राज्य का अंत हो गया। गुप्त साम्राज्य का अंतिम मान्यता प्राप्त राजा विष्णुगुप्त था।
- **वर्धन राजवंश:** वर्धन या पुष्यभूति राजवंश के संस्थापक ने थानेश्वर से शासन किया। पुष्यभूति ने गुप्तों के अधीन एक सैन्य जनरल के रूप में कार्य किया और गुप्तों के पतन के बाद सत्ता में आये।
- प्रभाकर वर्धन के राज्यारोहण के साथ, पुष्यभूति परिवार मजबूत और शक्तिशाली हो गया। प्रभाकरवर्धन का सबसे बड़ा पुत्र राजवर्धन अपने पिता की मृत्यु के बाद सिंहासन पर बैठा।
- राजवर्धन की बहन राजयश्री के पति, कनौज के राजा, को बंगाल के गौड़ शासक सासंका ने मार डाला था। सासंका ने राज्यश्री को भी कैद कर लिया। राजवर्धन, अपनी बहन को पुनः प्राप्त करने की प्रक्रिया में, सासंका द्वारा विश्वासघाती रूप से मारा गया था।
- इसके परिणामस्वरूप उनका छोटा भाई हर्षवर्द्धन थानेश्वर का राजा बन गया। कनौज साम्राज्य के प्रतिष्ठित लोगों ने भी हर्ष को अपना ताज लेने के लिए आमंत्रित किया। थानेश्वर और कनौज दोनों का शासक बनने के बाद हर्ष ने अपनी राजधानी थानेश्वर से कन्नौज स्थानांतरित कर दी।
- **हर्षवर्द्धन की विजय:** वर्धन वंश का सबसे लोकप्रिय राजा हर्षवर्धन था। हर्ष ने 41 वर्ष तक शासन किया। उनके सामंतों में जालंधर, कश्मीर, नेपाल और वल्लभी के सामंत शामिल थे। बंगाल का शशांक उनसे शत्रुतापूर्ण रहा।
- हर्ष अपने पिता का सबसे बड़ा पुत्र नहीं था, लेकिन अपने पिता और बड़े भाई दोनों की मृत्यु के बाद वह थानेसर का राजा बना। उसका बहनोई कन्नौज का शासक था और उसकी हत्या बंगाल के शासक ने कर दी थी। हर्ष ने कनौज राज्य पर अधिकार कर लिया और फिर बंगाल के शासक के विरुद्ध एक सेना का नेतृत्व किया।
- यह हर्ष ही था जिसने अधिकांश उत्तरी भारत को एकीकृत किया। लेकिन दक्षिण में उसके अधिकार के विस्तार को चालुक्य राजा पुलिकेशिन द्वितीय ने रोक दिया। 648 ई. में हर्ष की मृत्यु के बाद उसका साम्राज्य तेजी से छोटे–छोटे राज्यों में विघटित हो गया। उन्होंने रान और चीन के शासकों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखे।
- हर्ष प्रारंभ में शिव के उपासक थे, लेकिन उन्होंने अपनी बहन राज्यश्री और बौद्ध भिक्षु एवं यात्री ह्वेन त्सांग के प्रभाव में बौद्ध धर्म अपना लिया।
- वह महायान विचारधारा के थे। हर्ष ने वैदिक विद्वानों और बौद्ध भिक्षुओं के साथ एक जैसा व्यवहार किया और उन्हें समान रूप से दान वितरित किया। वह भारत में अंतिम बौद्ध सम्राट थे। एक धर्मपरायण बौद्ध के रूप में, हर्ष ने भोजन के लिए जानवरों की हत्या बंद कर दी।
- वह अपनी धार्मिक सहिष्णुता की नीति के लिए जाने जाते थे और एक साथ बुद्ध, शिव और सूर्य की छवियों की पूजा करते थे। उन्होंने दो बौद्ध सभाएँ बुलाईं, एक कनौज में और दूसरी प्रयाग में।

- हर्ष, जो स्वयं एक कवि और नाटककार थे, ने अपने आसपास सर्वश्रेष्ठ कवियों और कलाकारों को इकट्ठा किया। हर्ष की लोकप्रिय कृतियाँ रत्नावली, नागानंद और प्रियदर्शिका हैं। उनका शाही दरबार बाणभट्ट, मयूर, हरदत्त और जयसेना से सुशोभित था। मंदिर और मठ शिक्षा के केंद्र के रूप में कार्य करते थे।

क्या आप जानते हैं?

- ★ हर्ष के शासनकाल के दौरान 'तीर्थयात्रियों के राजकुमार' ह्वेन त्सांग ने भारत का दौरा किया। उनकी सियु–की हर्ष के समय के भारत की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक स्थितियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करती है।
- ★ गुप्त काल के दौरान, सोने के सिक्कों को निम्न में से दिनारस नाम से पुकारा जाता था।
- ★ पूर्व गुप्तकाल में निम्न में से टिन वस्तु निर्यात की सामग्री नहीं थी।
- ★ भारतीय इतिहास में 'अत्विका राज्य' के रूप में वन राज्य को संदर्भित किया गया था।
- ★ गुप्त शासक समुद्रगुप्त को अपने सिक्कों पर निम्नलिखित में से वीणा नामक वाद्य यंत्र बजाते हुए दिखाया गया है।
- ★ चंद्रगुप्त द्वितीय के दरबार में नवरत्न थे और इनमें अमरसिंह, धन्वंतरि, कालिदास, शंकु, क्षपणक, वराहमिहिर, वेताल भट्ट, घटखर्पर, वररुचि शामिल थे।
- ★ फाह्यान ने उल्लेख किया था कि "कर्मचारी वेतन कमाते हैं जबकि किसान राजा की भूमि जोतते हैं"। उन्होंने यह भी बताया कि उस राज्य में लोग अपने घरों में ताला नहीं लगाते थे।
- ★ प्राचीन भारत में गुप्त युग को "भारत का स्वर्ण युग" कहा जाता है क्योंकि गुप्त काल के दौरान भारतीयों ने कला, विज्ञान और साहित्य के क्षेत्र में कई उपलब्धियाँ हासिल की थी।
- ★ गुप्तकाल में सुदूर पश्चिम का प्रसिद्ध व्यापार केन्द्र पैठन था।
- ★ कल्हण "राजतरंगिणी" के रचयिता थे। यह पुस्तक 12वीं शताब्दी ई. के दौरान कश्मीर के इतिहास का वर्णन करती है। कल्हण चालुक्य वंश के जयसिम्हा का दरबारी कवि था।
- ★ 19वीं सदी में बकरियों को मुख्य रूप से कश्मीर के बकरवालों द्वारा पाला जाता था।
- ★ पल्लव राजवंश ने राज्य को राष्ट्र, कोट्टम और ग्राम में विभाजित किया था।
- ★ कंबुज में स्थित अंगकोरवाट का विष्णु मंदिर सूर्यवर्मा द्वितीय (ख्मेर साम्राज्य) द्वारा 1112–13 ई. में बनवाया गया था।
- ★ महाबलीपुरम के प्रसिद्ध मंदिरों का निर्माण पल्लवों के शासनकाल के दौरान किया गया था।
- ★ हर्षवर्धन (606–647 ई.) के काल में, नालंदा वह बौद्ध स्थल था जो एक महत्वपूर्ण महायान बौद्ध धर्म केंद्र के रूप में कार्य करता था।

10. इस्लाम का आगमन

- एक धार्मिक आस्था के रूप में इस्लाम की उत्पत्ति अरब के मक्का में हुई। इस्लाम के संस्थापक पैगम्बर मुहम्मद थे। इस्लाम के अनुयायियों को मुसलमान कहा जाता है। एक इस्लामी राज्य, विशेष रूप से एक ही धार्मिक और राजनीतिक नेता द्वारा शासित, को 'खिलाफत' के रूप में जाना जाता था। खलीफा का मतलब पैगंबर मुहम्मद का प्रतिनिधि होता है।
- दो प्रारंभिक ख़लीफ़ा 'उमय्यद' और 'अब्बासिड्स' थे। उमय्यद और अब्बासी दोनों ने अपनी विजय और इस्लाम के सिद्धांतों का प्रचार करके अलग–अलग अपने शासन का विस्तार किया। 8वीं शताब्दी में भारत में अरबों की उपस्थिति एक मुस्लिम सेना के रूप में सामने आई जिसने लसध पर विजय प्राप्त की। लेकिन उनके आगे के विस्तार को गंगा के मैदानी इलाकों और दक्कन के राजाओं ने असंभव बना दिया।
- 9वीं शताब्दी के अंत तक, अब्बासिद खलीफा के पतन के साथ, भारत और अन्य जगहों पर अरब सैनिकों ने खलीफा के नियंत्रण को त्याग दिया और स्वतंत्र रूप से शासन करना शुरू कर दिया। तुर्की गवर्नर अल्प–तेगिन उनमें से एक था, जिसकी राजधानी गजनी (अफगानिस्तान) थी। उसका उत्तराधिकारी और दामाद साबुकतिगिन उत्तर–पश्चिम से भारत को जीतना चाहता था। परन्तु केवल उसका पुत्र महमूद ही इस प्रयास में सफल हुआ।

क्या आप जानते हैं?

- ★ **सिंध पर अरबों की विजय और उसका प्रभाव:** सन् **712** ईसवी में, मुहम्मद बिन कासिम, जो उमय्यद साम्राज्य का सेनापति था, ने सिंध पर आक्रमण किया। कासिम ने सिंध के शासक दाहिर को युद्ध में पराजित कर मार डाला। सिंध की राजधानी अरोर पर कब्ज़ा कर लिया गया। वह भारत पर आक्रमण करने वाला पहला अरब था।

- **गजनी का महमूद (997 –1030 ई.):** कहा जाता है कि महमूद ने भारत में 17 छापे मारे थे। उस समय उत्तर भारत अनेक छोटे–छोटे राज्यों में विभाजित था। उनमें से एक शाही साम्राज्य था, जो पंजाब से काबुल तक फैला हुआ था। अन्य महत्वपूर्ण राज्य थे कनौज, गुजरात, कश्मीर, नेपाल, मालवा और बुन्देलखण्ड।
- प्रारंभिक आक्रमण शाही साम्राज्य के खिलाफ थे जिसमें उसके राजा जयपाल को 1001 में पराजित किया गया था। अपनी हार के बाद, जयपाल ने आत्मदाह कर लिया क्योंकि उसे लगा कि यह हार एक अपमानजनक थी।
- उनके उत्तराधिकारी आनंदपाल ने महमूद के खिलाफ लडाई लड़ी, लेकिन 1008 में पेशावर के पास वैहिंद के युद्ध में हार गए। वैहिंद में अपनी जीत के परिणामस्वरूप, महमूद ने पंजाब पर अपना शासन बढ़ाया। भारत में महमूद के बाद के हमलों का उद्देश्य उत्तर भारत के समृद्ध मंदिरों और शहरों को लूटना था।
- 1011 में उसने पंजाब की पहाड़ियों में नगरकोट और दिल्ली के निकट थानेश्वर पर आक्रमण किया। 1018 में महमूद ने पवित्र शहर मथुरा को लूटा। उसने कनौज पर भी आक्रमण किया। कनौज के शासक राजयपाल ने कनौज छोड़ दिया और बाद में उसकी मृत्यु हो गई। महमूद अपार धन–संपदा लेकर लौटा। उनका अगला महत्वपूर्ण आक्रमण गुजरात में हुआ। 1024 ई. में महमूद ने मुल्तान से मार्च किया
- राजपुताना और सोलंकी राजा भीमदेव प्रथम को हराया और अन्हिलवाड को लूटा। कहा जाता है कि महमूद ने सोमनाथ के प्रसिद्ध मंदिर को तोड़ दिया था और मूर्ति को तोड़ दिया था। फिर वह सिंध के रेगिस्तान से होकर लौटा। वह भारत में उनका आखिरी अभियान था। महमूद की मृत्यु 1030 ई. में हुई। ग़ज़नवी साम्राज्य में मोटे तौर पर फारस, ट्रांस–ऑक्सियाना, अफगानिस्तान और पंजाब शामिल थे।

- **घोर के मुहम्मद (1149 – 1206):** घोर के मुहम्मद या मुहम्मद गौरी ने गजनी के जागीरदार के रूप में शुरुआत की लेकिन महमूद की मृत्यु के बाद स्वतंत्र हो गए। गजनवी साम्राज्य के पतन का लाभ उठाकर मुहम्मद गोरी ने गजनी को अपने अधीन कर लिया।
- गजनी में अपनी स्थिति मजबूत और सुरक्षित बनाने के बाद, मुहम्मद ने अपना ध्यान भारत की ओर लगाया। गजनी के महमूद के विपरीत, वह भारत पर विजय प्राप्त करके अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था। 1175 में मुहम्मद ने मुल्तान पर कब्ज़ा कर लिया और अपने बाद के अभियानों में पूरे क्षेत्र पर कब्ज़ा कर लिया। 1186 में उसने पंजाब पर आक्रमण कर उस पर कब्ज़ा कर लिया।
- **तराइन का युद्ध (1191 – 1192):** जिस गंभीर स्थिति में वे पकड़े गए थे, उसे महसूस करते हुए, उत्तर भारत के हिंदू राजकुमारों ने पृथ्वीराज चौहान की कमान के तहत एक संघ का गठन किया। पृथ्वीराज ने मौके का फायदा उठाया और 1191 में दिल्ली के पास तराइन की लडाई में मुहम्मद को हरा दिया।
- इसे तराइन का प्रथम युद्ध कहा गया। इस हार का बदला लेने के लिए मुहम्मद ने गंभीर तैयारी की और एक विशाल सेना एकत्र की। वह अपनी बड़ी सेना के साथ पेशावर और मुल्तान होते हुए लाहौर पहुंचे।
- उन्होंने पृथ्वीराज को एक संदेश भेजा, जिसमें उनसे अपनी सर्वोच्चता स्वीकार करने और मुस्लिम बनने के लिए कहा। लेकिन पृथ्वीराज ने प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और आक्रमणकारी का विरोध करने के लिए अपनी सेना तैयार की। अनेक हिन्दू राजा और सरदार भी उनके साथ शामिल हो गये।
- 1192 में तराइन के दूसरे युद्ध में, मुहम्मद ने पृथ्वीराज की सेना को पूरी तरह से हरा दिया, जिसे पकड़ लिया गया और मार दिया गया। तराइन की दूसरी लड़ाई राजपूतों के लिए एक बड़ी आपदा थी।
- उनकी राजनीतिक प्रतिष्ठा को गहरा धक्का लगा। पूरा चौहान साम्राज्य अब आक्रमणकारी के चरणों में था। इस प्रकार भारत में पहला मुस्लिम साम्राज्य अजमेर में मजबूती से स्थापित हुआ और भारत के इतिहास में एक नए युग की शुरुआत हुई।
- तराइन में पृथ्वीराज पर अपनी जीत के बाद, मुहम्मद तुर्कों और मंगोलों के खतरे से निपटने के लिए गजनी लौट आए। 1206 में मुहम्मद की मृत्यु के बाद, उनके सबसे सक्षम जनरल कुतुब–उद–दीन ऐबक, जो भारत में रह गए थे, ने भारत में मुहम्मद के क्षेत्रों पर नियंत्रण कर लिया और खुद को दिल्ली का पहला सुल्तान घोषित कर दिया।

11. दिल्ली सल्तनत

- **दिल्ली सल्तनत की स्थापना और विस्तार:** जिन शासकों ने 1200 से 1526 ई. के बीच उत्तर भारत के बड़े हिस्से पर शासन किया, उन्हें सुल्तान कहा गया और उनके शासन की अवधि को दिल्ली सल्तनत कहा गया।
- लगभग तीन सौ वर्षों की इस अवधि के दौरान दिल्ली पर पाँच अलग–अलग राजवंशों ने शासन किया। ये थे मामलुक (1206 ई. 1290 ई.) (गुलाम वंश के नाम से प्रसिद्ध), खिलजी (1290 ई. 1320 ई.), तुगलक (1320 ई. 1412 ई.), सैय्यद (1412 ई. 1451 ई.) और लोधी (1451 ई. 1526 ई.)। इन सभी राजवंशों को सामूहिक रूप से दिल्ली सल्तनत कहा जाता है।
- **गुलाम वंश:** गुलाम वंश की स्थापना 1206 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने की थी। गुलाम वंश के प्रमुख शासकों का उल्लेख नीचे दिया गया है:
  - **कुतुबुद्दीन ऐबक (1206–1210 ई.):** कुतुबुद्दीन ऐबक, जो एक तुर्की गुलाम था, ने मुहम्मद गोरी के क्षेत्रों के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
  - मुहम्मद गोरी की मृत्यु के बाद उसने स्वयं को शासक घोषित कर दिया। उन्होंने गुलाम वंश की स्थापना की। उनके उत्तराधिकारियों को मामलुक कहा जाता था जिसका अर्थ है 'दास' या 'दास का पुत्र'।
  - कुतुब–उद–दीन–ऐबक ने लाहौर को अपने राज्य की राजधानी के रूप में स्थापित करके अपना शासन शुरू किया। बाद में उन्होंने अपनी राजधानी दिल्ली स्थानांतरित कर दी। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से मध्य और पश्चिमी भारत–गंगा के मैदान (उत्तर भारत) में सैन्य अभियानों का नेतृत्व किया और पूर्वी गंगा के मैदान (बिहार, बंगाल) की विजय को बख्तियार खिलजी की देखरेख में छोड़ दिया।
  - कुतुबुद्दीन ऐबक अपनी सभी प्रजा के प्रति बहुत दयालु था इसलिए उसे लाखबख्श कहा जाता था जिसका अर्थ है 'लाखों का दान करने वाला'।
  - वह भारत के उत्तर–पश्चिमी भाग से आक्रमण करने वाले मंगोलों के कारण हुए आंतरिक विद्रोह और बाहरी अशांति को दबाने में सफल रहे।
  - कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली और आगरा में कई मस्जिदें बनवाईं। उन्होंने दिल्ली में कुवत–उल–इस्लाम मस्जिद बनवाई, जो भारत की सबसे पुरानी मस्जिद मानी जाती है।
  - उन्होंने दिल्ली में कुतुब मीनार की नींव भी रखी लेकिन इसे पूरा नहीं कर सके क्योंकि 1210 में पोलो खेलते समय घोड़े से गिरकर उनकी मृत्यु हो गई।
  - **शम्सुद्दीन इल्तुतमिश (1210–1236 ई.) :** इल्तुतमिश कुतुबुद्दीन ऐबक का गुलाम और दामाद था।
  - वह सिंहासन पर बैठा और उसे सुल्तान की उपाधि से सम्मानित किया गया।
  - ऐबक का बेटा आराम शाह अक्षम साबित हुआ और इसलिए तुर्की अमीरों ने ऐबक के दामाद इल्तुतमिश को सुल्तान के रूप में चुना, जो ऐबक के सैन्य कमांडर के रूप में कार्यरत था। इल्तुतमिश ने विद्रोहों का दमन करके क्षेत्रों पर अपना नियंत्रण मजबूती से स्थापित कर लिया।
  - उनके शासनकाल के दौरान चंगेज खान के नेतृत्व में मंगोलों का खतरा भारत की सीमाओं पर मंडरा रहा था। उसने क्वारेज़्म शाह जलालुद्दीन, जिसे चंगेज खान ने बाहर निकाल दिया था, को आश्रय देने से इनकार करके आसन्न खतरे को टाल दिया।
  - वह अपने कुशल प्रशासन के लिए जाने जाते थे।
  - इल्तुतमिश ने निम्नलिखित प्रशासनिक सुधार किये:
    - उसकी सेना संगठित थी।
    - उनके पास कुलीन वर्ग था, चालीस का एक चुलनदा समूह, जिसे चहलगानी का चालीसा कहा जाता था।

- उसने साम्राज्य को छोटी–छोटी इकाइयों में बाँट दिया, जिन्हें इक्ता कहा जाता था, जो अमीरों को वेतन के रूप में दी जाती थीं।
- उन्होंने उत्तर–पश्चिमी सीमा को मजबूत किया जिसने मध्य एशिया से मंगोलों के हमलों से साम्राज्य की रक्षा की।
- उसने टंका–चांदी के सिक्के और जीतल–तांबा के सिक्के चलवाये।
- दिल्ली में कुतुब मीनार का निर्माण इल्तुतमिश ने करवाया था। उन्होंने बदायूँ में एक मस्जिद और दिल्ली में एक मकबरा भी बनवाया।

- रजिया सुल्तान (1236–1240): इल्तुतमिश का सबसे योग्य पुत्र रुक्न–उद्दीन–फ़िरोज़ मर गया था।
- इल्तुतमिश ने अपनी बेटी रजिया सुल्तान को दिल्ली की गद्दी पर अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। रजिया एक सक्षम और बहादुर सेनानी थी।
- अपने स्पष्ट गुणों के बावजूद, रज़िया ने मुख्य रूप से गैर–तुर्कों के प्रति कुलीन वर्ग बनाने के अपने प्रयासों के कारण बेहतर प्रदर्शन नहीं किया और तुर्की अमीरों के क्रोध को आमंत्रित किया।
- रजिया ने जलालुद्दीन याकूत नाम के एक इथियोपियाई गुलाम को अपना निजी सेवक बनाया।
- कुलीनों को एहसास हुआ कि रजिया एक महिला होते हुए भी उनके हाथों की कठपुतली बनने को तैयार नहीं थी, इसलिए सरदारों ने प्रांतों में उसके खिलाफ विद्रोह करना शुरू कर दिया।
- सरदारों से पराजित होने के बाद उसकी हत्या कर दी गई। इस प्रकार, उसका शासनकाल संक्षिप्त था और 1240 ई. में समाप्त हो गया।
- ग्यासुद्दीन बलबन (1266–1287 ई.): 1266 ई. में रजिया सुल्तान की मृत्यु के बाद बलबन नामक एक तुर्की गुलाम ने गद्दी संभाली। बलबन अपनी दृढ़ नीतियों और कुशल गुप्तचर प्रणाली के लिए जाना जाता है।
- रजिया के बाद लगातार तीन कमजोर शासक गद्दी पर बैठे। उनके बाद गयासुद्दीन बलबन आया। बलबन ने चालीस सरदारों के समूह चालीसा को समाप्त कर दिया, क्योंकि यह उसके प्रति शत्रुतापूर्ण था।
- उन्होंने स्थानीय शत्रुओं को सफलतापूर्वक हराया और सभी आक्रमणों से अपने राज्य की रक्षा की।
- राजत्व का दैवीय अधिकार बलबन द्वारा प्रस्तुत किया गया था।
- उनकी नीति को आम तौर पर रक्त और लौह नीति कहा जाता है क्योंकि उन्होंने उन लुटेरों और जमींदारों को बेरहमी से दंडित किया, जिन्होंने उन्हें शासक के रूप में स्वीकार नहीं किया था।
- बंगाल में एक प्रांतीय गवर्नर तुगरिल खान, जिसने बलबन के खिलाफ विद्रोह का झंडा उठाया था, को पकड़ लिया गया और उसका सिर काट दिया गया।
- बलबन ने विस्तार की बजाय सुदृढ़ीकरण की नीति अपनाई। उन्होंने राजत्व का एक नया सिद्धांत पेश किया और सुल्तान और कुलीन वर्ग के बीच संबंधों को फिर से परिभाषित किया।
- बलबन ने मंगोल आक्रमणों से अपने साम्राज्य की रक्षा के लिए किलों का निर्माण कराया। उन्होंने प्रसिद्ध फ़ारसी कवि अमीर खुसरो को संरक्षण दिया।
- इन उपायों से बलबन ने दिल्ली सल्तनत को मजबूत किया। 1287 ई. में बलबन की मृत्यु हो गई।

- **खिलजी राजवंश:** बलबन की मृत्यु के कारण साम्राज्य में अशांति फैल गई। बलबन का पोता कैकुबाद गद्दी पर बैठा लेकिन जलालुद्दीन खिलजी ने उसकी हत्या कर दी और वह शासक बन गया और खिलजी राजवंश की स्थापना की। खिलजी वंश के प्रमुख शासक थे:
  - **जलालुद्दीन खिलजी (1290–1296 ई.) :** जलालुद्दीन खिलजी ने खिलजी वंश की नींव रखी। वह 70 वर्ष की आयु में सिंहासन पर बैठे।
  - हालाँकि जलालुद्दीन ने अपने प्रशासन में पहले वाले कुलीन वर्ग को बरकरार रखा, लेकिन खलजियों के सत्ता में आने से उच्च पदों पर दासों के कुलीन वर्ग का एकाधिकार समाप्त हो गया।
  - वह दिल्ली सल्तनत के पहले शासक थे जिन्होंने स्पष्ट रूप से यह विचार रखा कि राज्य शासितों के स्वैच्छिक समर्थन पर आधारित होना चाहिए, और चूंकि भारत में अधिकांश लोग हिंदू थे, इसलिए भारत में राज्य वास्तव में इस्लामी राज्य नहीं हो सकता।
  - जलालुद्दीन ने सहिष्णुता की नीति द्वारा कुलीनों की सद्भावना जीतने की कोशिश की। उन्होंने कठोर दंडों से परहेज किया, यहां तक कि उन लोगों को भी जिन्होंने उनके खिलाफ विद्रोह किया था।
  - जलालुद्दीन की नीति को अलाउद्दीन खिलजी ने उलट दिया और उन सभी को कठोर दंड दिया जिन्होंने उसका विरोध करने का साहस किया।
  - जलालुद्दीन के शासनकाल में कई सैन्य अभियान हुए। लेकिन वे अधिकतर संगठित और नेतृत्व उनके भतीजे अलाउद्दीन, जो कारा का गवर्नर था, द्वारा किया गया था। एक महत्वपूर्ण सैन्य अभियान दक्कन साम्राज्य देवगिरि के विरुद्ध था। अलाउद्दीन ने यादव राजा रामचन्द्र को हराने के बाद शहर को लूटा और भारी धन लेकर वापस लौटा।
  - अलाउद्दीन ने दक्कन से लाए गए धन से प्रमुख सरदारों और महत्वपूर्ण कमांडरों को खरीदने के बाद धोखे से जलालुद्दीन की हत्या कर दी और 1296 में खुद को दिल्ली का सुल्तान घोषित कर दिया।
  - **अलाउद्दीन खिलजी (1296–1316 ई.):** अलाउद्दीन खिलजी एक महान सैन्य नेता था और उसने विस्तारवादी नीति अपनाई थी।
  - उसने दिल्ली में सिरी नामक शहर बसाया और कुतुब मीनार के पास अलाई दरवाजा भी बनवाया।
  - अलाउद्दीन खिलजी ने गुजरात, राजस्थान, मालवा देवगिरि, वारंगल और द्वारसमुद्र पर विजय प्राप्त की।
  - उनकी विजय की सीमा प्रभावशाली है: पंजाब में (मंगोलों के खिलाफ), राजस्थान में और गुजरात में। अपनी उत्तरी सीमाओं को सुरक्षित रखते हुए, उसने अपने प्रमुख लेफ्टिनेंट मलिक काफूर को दक्षिणी भागों में भेजा, जिसने 1310 में सुदूर मदुरै पर भी कब्ज़ा कर लिया।
  - उसने किलों को मजबूत करके मंगोलों के आक्रमण को नियंत्रित किया।

- उसने विद्रोहों को रोकने के उपाय किये तथा सरदारों के मेलजोल को रोका।
- राजस्व एकत्र करने के लिए नये सुधार लागू किये गये। भूमि की माप के आधार पर राजस्व एकत्र किया जाता था। राजस्व एकत्र करने के लिए विशेष अधिकारी नियुक्त किये गये।
- इस उपाय ने स्थानीय मुखियाओं और राजाओं को उनके समय के जागीरदार विशेषाधिकार से वंचित कर दिया। अलाउद्दीन ने दिल्ली और अन्य गैरीसन केंद्रों के लिए खाद्यान्न की जबरन खरीद की एक प्रणाली स्थापित की।
- अलाउद्दीन ने एक बाज़ार नियंत्रण प्रणाली शुरू की जिसके अनुसार सभी वस्तुओं की कीमतें तय की गईं। वहाँ तीन बाज़ार थे... एक अनाज के लिए, दूसरा कपड़ों के लिए, और तीसरा दासों, जानवरों और मवेशियों के लिए।
- सेना में उन्होंने हुलिया नामक प्रणाली लागू की जिसमें सैनिकों की पहचान दर्ज की जाती थी। शाही मुहर के साथ घुड़सवार सेना के लिए दाग (घोड़ों की ब्रांडिंग) का उपयोग किया जाता था।
- गुप्तचर प्रणाली अत्यंत कुशल एवं सुव्यवस्थित थी।
- तीन प्रकार के कर हुआ करते थे: खेती पर जिसे खराज कहा जाता था (किसान की उपज का लगभग 50 प्रतिशत), मवेशियों पर और घरों पर
- 1316 में अला–उद–दीन की मृत्यु हो गई। उसके उत्तराधिकारियों की सत्ता बरकरार रखने में विफलता के कारण गियास–उद–दीन तुगलक ने सत्ता पर कब्जा कर लिया, जिसने तुगलक वंश की स्थापना की।

- **तुगलक वंश:** 1320 ई. में गयासुद्दीन तुगलक ने अंतिम खिलजी शासक की हत्या कर दी और तुगलक वंश की स्थापना की। तुगलक वंश के प्रमुख शासकों का उल्लेख नीचे दिया गया है:
  - गयासुद्दीन तुगलक (1320–1325 ई.) : गयासुद्दीन तुगलक एक कुशल शासक एवं राजनेता, अच्छा प्रशासक था।
  - सुल्तान के रूप में गयासुद्दीन का एक प्रमुख कार्य उन क्षेत्रों को पुनः प्राप्त करना था जिन्हें सल्तनत ने अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद उथल–पुथल के दौरान खो दिया था। गयासुद्दीन तुगलक ने अपने पुत्र जौना खान को वारंगल के विरुद्ध लड़ने के लिए भेजा।
  - जौना खान ने वारंगल के प्रतापरुद्र को हराया और भरपूर लूट के साथ लौटा। कहा जाता है कि इस लूटी गई संपत्ति से गयासुद्दीन ने दिल्ली के निकट तुगलकाबाद शहर की नींव रखी थी।
  - वह अपने क्षेत्र में शांति स्थापित करने में सक्षम रहा।
  - दिल्ली में प्रसिद्ध तुगलकाबाद किले का निर्माण उनके द्वारा किया गया था।
  - 1325 ई. में रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गई।
  - मुहम्मद–बिन–तुगलक (1325–1351 ई.): जौना खान अपने पिता गयासुद्दीन तुगलक का उत्तराधिकारी बना और 1325 ई. में उसने मुहम्मद–बिन–तुगलक की उपाधि ली।
  - जानकारी का स्रोत मोरक्को के यात्री इब्न बतूता की रचनाएँ थीं।
  - मुहम्मद बिन–तुगलक एक विद्वान था और उसने सभी धार्मिक मुद्दों को हल करने के लिए उचित और तर्कसंगत तरीके चुने।
  - उन्होंने समाज पर उलेमाओं के प्रभाव को प्रतिबंधित कर दिया। उन्होंने उत्तरी और दक्षिणी भारत के बीच की बाधा को तोड़ने का भी प्रयास किया।
  - उनकी अधिकांश परियोजनाएँ विवादास्पद थीं और उनके पतन का कारण बनीं। उन निर्णयों में से महत्वपूर्ण हैं:
    - ऐसी ही एक परियोजना 1327 ई. में राजधानी को दिल्ली से देवगिरी स्थानांतरित करना था, जिसका नाम बदलकर दौलताबाद रखा गया। उन्होंने वास्तव में राजधानी बदलने का निर्णय इसलिए लिया क्योंकि यह दक्षिण भारत के करीब थी लेकिन उत्तर भारत इस स्थान से बहुत दूर था इसलिए इसके प्रशासन को नुकसान उठाना पड़ा। इस निर्णय से उनके शासन का पतन हो गया। उन्होंने सभी लोगों को अपने बैग और सामान के साथ शिफ्ट होने का आदेश दिया, जिससे सभी को असुविधा हुई। मंगोलों ने उत्तर–पश्चिम सीमांत क्षेत्रों पर भी आक्रमण करना शुरू कर दिया। लंबी यात्रा और यात्रा से सभी लोगों को दुःख हुआ। हालाँकि, तुगलक ने पाँच महीने के भीतर दिल्ली वापस आने का फैसला किया जिससे सभी लोगों को बहुत कठिनाई हुई।
    - सांकेतिक मुद्रा की शुरूआत दूसरी परियोजना थी। चाँदी की कमी को दूर करने के लिए सांकेतिक मुद्रा चलायी गयी जो कांस्य और तांबे से बनी होती थी। चूंकि सिक्के ढालने का अधिकार सुरक्षित नहीं था, इसलिए हर घर में सिक्के ढालने शुरू कर दिए गए। परिणामस्वरूप नकली सिक्कों का प्रचलन हो गया। इससे व्यापार में भ्रम पैदा हो गया और अंततः सभी सिक्के वापस लेने पड़े जिससे सरकार को भारी नुकसान हुआ।
    - तीसरी परियोजना गंगा–यमुना दोआब में उस समय कर बढ़ाना था जब यह अकाल से प्रभावित था। जब तक इसे वापस लिया गया, तब तक बहुत देर हो चुकी थी और कृषि क्षेत्र बुरी तरह प्रभावित हुआ था।
  - तुगलक ने 25 वर्षों तक सुल्तान के रूप में शासन किया। अपने लम्बे शासन काल में उसे कई प्रान्तीय गवर्नरों के विद्रोहों का सामना करना पड़ा। अवध, मुल्तान और सिंध के राज्यपालों ने विद्रोह कर दिया और स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया।
  - दक्षिण भारत में अनेक राज्यों का उदय हुआ। नये दौलताबाद और उनके आस–पास के विजित प्रदेशों को बहमनी नामक स्वतंत्र सल्तनत घोषित कर दिया गया। इसके संस्थापक, जिनके नाम पर इसका नाम रखा गया, पहले तुगलक सेवा में एक सैनिक थे।
  - 1334 में मदुरै को एक अलग सल्तनत घोषित किया गया। 1346 में बंगाल स्वतंत्र हुआ। 23 मार्च 1351 को तुगलक की मृत्यु हो गई।
  - **फ़िरोज़ शाह तुगलक (1351–1388 ई.):** फ़िरोज़ शाह तुगलक मोहम्मद–बिन–तुगलक का उत्तराधिकारी बना। वह गयासुद्दीन के छोटे भाई का पुत्र था।
  - वह बहुत नरम शासक था. उनकी नीतियाँ बहुत उदारवादी थीं। उसके शासनकाल के दौरान सज़ा कम कठोर हो गई। पहले के शासकों द्वारा दिए गए सभी ;ण माफ कर दिए गए।
  - उन्होंने दक्कन के मामलों में हस्तक्षेप करने के लिए बहमनी राजकुमार के निमंत्रण (लगभग 1365) को स्वीकार करने से

इनकार कर दिया। फ़िरोज़ ने सूफियों और अन्य धार्मिक नेताओं को उदारतापूर्वक पुरस्कृत किया और उनकी सलाह सुनी। उन्होंने गरीब मुसलमानों की सहायता के लिए चैरिटी भी बनाई, मदरसों, मस्जिदों और अस्पतालों का निर्माण किया।

- उन्होंने जजिया नामक एक गैर–मुस्लिम कर लागू किया।
- फ़िरोज़ शाह तुगलक ने सेना को मजबूत नहीं किया। हालाँकि उन्होंने अपने लोगों के लिए कई कल्याणकारी गतिविधियाँ की जैसे नहरों और बावलियों का निर्माण, गरीबों के लिए एक अलग विभाग, विभिन्न सराय और मदरसों का निर्माण और हस्तशिल्प के लिए कार्यशालाओं की स्थापना।
- फ़िरोज़ शाह तुगलक का शासनकाल शांति और समृद्धि का काल था। उन्होंने हिसार, फिरोजाबाद, जौनपुर और फिरोजपुर जैसे कई शहरों की स्थापना की।
- शांतिपूर्ण दृष्टिकोण अपनाने और सल्तनत को अच्छी तरह से संगठित करने के प्रयास करने के बावजूद, उन्हें अपने अंतिम दिन दुःख में बिताने पड़े।
- उनके अपने बेटे मुहम्मद खान ने उनके खिलाफ विद्रोह कर दिया और सितंबर 1388 में 83 वर्ष की आयु में फ़िरोज़ शाह की मृत्यु हो गई।
- उसकी मृत्यु के बाद तुगलक वंश अधिक समय तक जीवित नहीं रह सका।
- तुगलक वंश के अंतिम शासक नजीरुद्दीन मोहम्मद तुगलक के शासनकाल के दौरान, समरकंद के तुर्क शासक, तैमूर ने 1398 में भारत पर आक्रमण किया।
- **तैमूर का आक्रमण (1398):** फ़िरोज़ शाह तुगलक की मृत्यु के एक दशक बाद दिल्ली पर तैमुर द्वारा बर्खास्तगी और नरसंहार हुआ। मध्य एशिया में समरकंद के आसपास के क्षेत्र के शासक के रूप में, तैमूर ने भारत के उत्तर–पश्चिम में कुछ हिस्सों पर कब्जा कर लिया था। भारत की कमजोरी का फायदा उठाकर उसने दिसंबर 1398 में भारत में प्रवेश किया और दिल्ली को लूटा। दिल्ली शहर के अलावा, पंजाब वह प्रांत था जो तैमूर के आक्रमण से सबसे अधिक पीड़ित था। सोने, चांदी, जवाहरात के रूप में विशाल धन ले जाने के अलावा, तैमूर समरकंद में स्मारकों पर काम करने के लिए बढ़ई और राजमिस्त्री जैसे भारतीय कारीगरों को भी अपने साथ ले गया।

- **सैयद राजवंश:** जब तैमूर ने भारत छोड़ दिया तो खिज़्र खान (तैमूर का प्रतिनिधि) ने सिंहासन पर कब्जा कर लिया और 1414 में सैयद राजवंश की स्थापना की।
- सैयद वंश के प्रमुख शासक खिज़्र खान (1414–1421), मुबारक शाह (1421–1434), मुहम्मद शाह (1434–1443) और आलम शाह (1443–1451) थे।
- **लोधी राजवंश:** सैय्यद वंश के अंतिम शासक अलाउद्दीन आलम शाह ने 1451 में सिंहासन छोड़ दिया।
- इससे सरहिंद (पंजाब) के तत्कालीन गवर्नर बहलोल लोदी को दिल्ली का नया सुल्तान बनने का अवसर मिला, जिससे लोधी वंश की स्थापना हुई।
- लोधी वंश के प्रमुख शासक बहलोल लोधी (1451–1488), सिकंदर लोधी (1489–1517) और इब्राहिम लोधी (1517–1526 ई.) थे।

क्या आप जानते हैं?

- 1489 में बहलोल लोधी का उत्तराधिकारी उसका पुत्र सिकंदर लोधी बना। सिकंदर कला और विद्या का संरक्षक था। उन्होंने आगरा शहर की स्थापना की और इसे अपनी राजधानी बनाया। 1517 में उनकी मृत्यु हो गई और उनके बेटे इब्राहिम लोधी ने उनका उत्तराधिकारी बना लिया, जिसे 1526 में पानीपत की लड़ाई में बाबर ने हराया था। इस प्रकार, लोधी वंश और दिल्ली सल्तनत को बाबर ने समाप्त कर दिया और भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की।
- तबकात–ए–नासिरी लिखने में मिन्हाज–उस–सिराज को सुल्तान नसीरुद्दीन महमूद ने संरक्षण दिया था।
- बलबन ने प्रसिद्ध फारसी कवि अमीर खुसरो को संरक्षण दिया था।
- आधुनिक भारत का वारंगल स्थान काकतीय राजवंश से संबंधित है।
- आल्हा और उदल नाम के प्रसिद्ध योद्धा चंदेल शासकों के घराने की सेवा करते थे।
- दिल्ली के सुल्तानों द्वारा निर्मित स्मारकों में मेहराबी वास्तुशिल्प विशेषता आमतौर पर पाई जाती है।
- चारमीनार मस्जिद हैदराबाद में स्थित है और मध्यकाल का एक महत्वपूर्ण स्मारक मानी जाती है।
- तबकात–ए–नासिरी मुहम्मद गोरी की विजय से लेकर 1260 ई. तक की अवधि से संबंधित है।
- दिल्ली सल्तनत का पहला आधिकारिक इतिहास माना जाने वाला ताज–उल–मासिर हसन निजामी ने लिखा था।
- कृष्णदेवराय के बाद उनके छोटे भाई अच्युत राय ने गद्दी संभाली थी।
- बहमनी और विजयनगर के शासकों के बीच उपजाऊ तुंगभद्रा और कृष्णा क्षेत्रों को लेकर लगातार युद्ध होते रहे।
- हम्पी विजयनगर साम्राज्य की राजधानी थी। इसकी स्थापना वर्ष 1336 में हुई थी।
- 1687 में मुगल बादशाह औरंगजेब ने गोलकुंडा को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
- वर्ष 1336 में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हुई थी।
- आसफ जाही वंश के निजामों ने भारत के दक्कन प्रांतभाग में शासन किया था।
- बहमनी शासक ताजुद्दीन फिरोज ने विजयनगर के शासक देवराय I की पुत्री से विवाह किया था।
- विजयनगर के शासक वेंकट द्वितीय ने अपने साम्राज्य में पुर्तगालियों को चर्च बनाने की इजाजत दी थी।
- मुबारक शाह ने तारीख–ए–मुबारक शाही के लेखक याहिया बिन अहमद सरहिंदी को संरक्षण दिया था। उसने मालवा के शासक को हराने में मदद के लिए बहलोल लोदी को खान–ए–खाना की उपाधि से सम्मानित किया।
- चिन राजवंश शाही चीन का पहला राजवंश था। इसने दिल्ली पर कभी शासन नहीं किया।
- कुव्वत–उल–इस्लाम मस्जिद का निर्माण 12वीं शताब्दी के अंतिम दशक के दौरान किया गया था, जो दिल्ली सल्तनत द्वारा निर्मित प्रथम शहर की सामूहिक मस्जिद थी।

- ★ 1236 में सुल्तान इल्तुतमिश की बेटी रजिया सुल्तान बनी।
- ★ मिन्हाज–ए–सिराज ने माना कि वह अपने सभी भाइयों की तुलना में अधिक सक्षम और योग्य थी। लेकिन वह एक रानी को शासक के रूप में रखने में सहज नहीं था। साथ ही राज्य के सरदार भी स्वतंत्र रूप से शासन करने के उसके प्रयासों से खुश नहीं थे। 1240 ई. में उसे सिंहासन से हटा दिया गया।
- ★ अलाउद्दीन खिलजी ने द्वितीय सिकंदर (सिकंदर–ए–सानी) की उपाधि धारण की थी।
- ★ दिल्ली पर वर्ष 1299–1300 और 1302–1303 में दो बार आक्रमण हुआ था। रक्षात्मक उपाय के रूप में, अलाउद्दीन खिलजी ने एक बड़ी स्थायी सेना की स्थापना की थी।
- ★ "नूह–ए–सिपिहिर" का लेखक अमीर खुसरो था।
- ★ फ़िरोज़ शाह तुगलक ने "रागदर्पण" (संगीत पर भारतीय शास्त्रीय कृति) का फ़ारसी में अनुवाद शुरू किया।
- ★ आगरा शहर की स्थापना सिकंदर लोदी ने की थी।
- ★ इब्राहिम रौज़ा को बीजापुर के इब्राहिम आदिलशाह द्वितीय ने अपनी रानी के लिए बनवाया था। इस स्मारक को ताज महल के लिए प्रेरणास्रोत बताया गया है।
- ★ संत दादू दयाल की मृत्यु नाराणा (अजमेर के पास) में हुई थी।

12. मुगल वंश

- **बाबर (1526-30):** उसने 1526 ई. में पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहिम लोदी को पराजित कर मुगल साम्राज्य की नींव रखी। वह तैमूर (अपने पिता की ओर से) और चंगेज खान (अपनी माँ की ओर से) का वंशज था।
- 1527 में, बाबर ने उन्होंने मेवाड़ के राणा सांगा को खानवा के युद्ध में हराया था।
- 1528 में, बाबर ने चंदेरी के युद्ध में मेदिनी राय को हराया था।
- 1529 में, बाबर ने घाघरा के युद्ध में मुहम्मद लोदी (इब्राहिम लोदी के चाचा) को हराया।
- 1530 में, आगरा में उनकी मृत्यु हो गई। उनका मकबरा काबुल में स्थित है।
- बाबर ने युद्ध की तुलगमा प्रणाली को अपनाया और वह भारत में बारूद और तोपखाने का उपयोग करने वाला पहला व्यक्ति था।
- तुजुक–ए–बाबरी (तुर्की) उसकी आत्मकथा थी इसमें उसने भारत में अपने साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण विवरण दिया है। इसका अनुवाद फारसी में बाबरनामा नाम से अब्दुर रहीम खाने–खाना द्वारा और अंग्रेजी में मैडम बेब्रिज द्वारा किया गया था।
- बाबर ने दीवान (तुर्की में) और मुबैयन (फारसी में) कविताओं के दो संकलन किए। उसने रिसाल–ए–उसाज या बाबर के खत भी लिखे।
- **हुमायूँ (1530-40 और 1555-56):** हुमायूँ बाबर का सबसे बड़ा पुत्र था। हुमायूँ के तीन भाई थे, कामरान, अस्करी और हिंदाल हुमायूँ ने अपने पिता बाबर की वसीयत के अनुसार अपने भाइयों के बीच साम्राज्य का विभाजन किया लेकिन यह उसकी ओर से एक बड़ी भूल साबित हुई। कामरान को काबुल और कंधार दिया गया। संभल और अलवर क्रमशः अस्करी और हिंदाल को दिए गए।
- साम्राज्य के पूर्व में, जब शेर खान शक्तिशाली हो गया, तो हुमायूँ ने उसके खिलाफ अभियान किया और 1539 में हुई चौसा के युद्ध में, शेर खान ने मुगल सेना को नष्ट कर दिया और हुमायूँ वहाँ से जान बचाकर भाग निकला।
- 1540 में, बिलग्राम या गंगा के युद्ध में, जिसे कन्नौज के युद्ध के रूप में भी जाना जाता है, हुमायूँ को शेर खान के साथ अकेले लड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा और अपना राज्य खोने के बाद, हुमायूँ अगले पंद्रह वर्षो के लिए निर्वासित करदिया गया।
- 1540 में, सिंध के रेगिस्तान में भटकने के दौरान, हुमायूँ ने शेख अली अंबर जैनी की बेटी हमीदा बानू बेगम से शादी की। 23 नवंबर, 1542 को हयीदा वानो ने अमरकोट के राजा वीरसाल के किले में अकबर को जन्म दिया।
- 1555 में, हुमायूँ ने अफगानों को हराया और मुगल सिंहासन को पुनः प्राप्त किया। छह महीने के बाद, 1556 में अपने पुस्तकालय की सीढ़ी से गिरने के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

क्या आप जानते हैं?

- ★ **सूर साम्राज्य या दूसरा अफगान साम्राज्य (1540-55 ई.):** शेरशाह (1540-45) हसन खान (सासाराम के जागीरदार) का पुत्र था। 1527-28 में वह बाबर की सेवा में शामिल हो गया। उसने बहार खान लोहानी के नाबालिग पुत्र जलाल खान लोहानी के संरक्षक के रूप में भी काम किया था। लोहानी के बेटे की रक्षा करते हुए एक शेर को मारने पर उसे शेर खान की उपाधि दी गई थी।
- ★ शेरशाह हजरत–ए–आला के रूप में बिहार का सिंहासन हड़प लिया। उसने चुनार किले के राज्यपाल की विधवा लाड मलिका से विवाह करके चुनार पर अधिकार कर लिया।
- ★ 1539 में, उसने चौसा के युद्ध में हुमायूँ को हराया और शेर शाह को सम्राट की उपाधि दी।
- ★ 1540 में, उसने कन्नौज / बिलग्राम के युद्ध में हुमायूँ को फिर से हरा दिया और हुमायूँ को निर्वासन झेलना पड़ा।
- ★ उन्होंने मालवा (1542), रणथंभौर (1542), रायसेन (1543), राजपूताना–मारवाड़ (1542), चित्तौड़ (1544) और कालिंजर (1545) के खिलाफ कई अभियान चलाए। 1545 में कालिंजर पर विजय प्राप्त करते हुए उसकी मृत्यु हो गई।
- ★ उसने "रुपया" नामक सिक्का जारी किया। उन्होंने ग्रैंड ट्रंक रोड (जीटी रोड) भी बनायाए जो कलकत्ता से पेशावर तक चलता है।
- ★ उसने स्थानीय अपराधों के लिए स्थानीय उत्तरदायित्व का सिद्धांत पेश किया। अपराधियों को खोजने में विफल रहने के लिए लोगों को दंडित किया जाता था।
- ★ भूमि की माप की गई और औसत का 1-3 भूमि कर के रूप में निर्धारित किया गया। किसान को एक पट्टा (स्वामित्व विलेख) और एक कबूलियत (समझौते का विलेख) दिया जाता थाए जो किसान के अधिकारों और करों को तय करता था।
- ★ उसने दिल्ली में पुराना किला भी बनवाया था। उसकी मृत्यु के बाद उसे सासाराम में दफनाया गया था।
- ★ इस्लाम शाह (1545-54) को उसका उत्तराधिकारी बनायाः इस्लाम शाह (1554-55)के पतन के बाद द्वितीय अफगान साम्राज्य का भी पतन हो गया।

- **अकबर (1556-1605):** वह हुमायूँ का सबसे बड़ा पुत्र था और जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर बादशाह गाजी की उपाधि के तहत 14

साल की छोटी उम्र में कलानौर, पंजाब में सिंहासन पर बैठा उसके शिक्षक बैरम खान को राज–प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त किया गया।

- अकबर ने पानीपत के दूसरे युद्ध (05 नवंबर 1556) में हेमू विक्रमादित्य (मुहम्मद आदिल शाह के हिंदू सेनापति) को हराया। मुगल सेना का नेतृत्व बैरम खान (अकबर का प्रतिनिधि) कर रहा था।
- अकबर ने 1560 में बैरम खान के राज–प्रतिनिधित्व को समाप्त कर दिया और 18 साल की उम्र में राज्य की बागडोर स्वयं संभाल ली।
- **पेटीकोट सरकार काल (1560-62 ई.):** अकबर अपने आरंम्भिक समय में महम अंगा और अधम खान जैसे शासकों के प्रभाव में था। इस अवधि को पेटीकोट शासन काल के रूप में जाना जाता है।
- मालवा को 1562 में बाज बहादुर से जीत लिया गया था जिसे अकबर के दरबार में मनसबदार बनाया गया था।
- 1564 में रानी दुर्गावती और उनके पुत्र वीर नारायण के साथ भीषण युद्ध के बाद मध्य भारत के गोंडवाना क्षेत्र पर अकबर ने कब्जा कर लिया गया था।
- अकबर ने 1573 में मुजफ्फर शाह से गुजरात जीत लिया। अकबर ने इस जीत की याद में एक नई राजधानी फतेहपुर सीकरी और वहाँ बुलंद दरवाजे का निर्माण करवाया था।
- हल्दीघाटी के युद्ध में, राणा प्रताप सिंह 1576 में मान सिंह के नेतृत्व वाली मुगल सेना से बुरी तरह हार गए थे।
- अकबर ने 1575 में तीर्थयात्री कर और जजिया को समाप्त कर दिया।
- शेख मुबारक अकबर के धर्म गुरु थे।
- अकबर की नई धार्मिक नीति का प्रारूप अबुल फैजी ने तैयार किया था।
- उसने अपनी नई राजधानी फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना (पूजा घर) के निर्माण का आदेश दिया। वह हिंदू धर्म, जैन धर्म, ईसाई धर्म और पारसी धर्म जैसे सभी धर्मो के विद्वान विद्वानों को आमंत्रित करता था।
- 1582 में, उसने दीन–ए–इलाही या ईश्वरीय आस्था नामक एक नए धर्म का प्रचार किया। यह एक ईश्वर में विश्वास करता था। इसमें सभी धर्मों के अच्छे बिंदु शामिल थे। उसने सुलह–ए–कुल (सभी के लिए शांति) के दर्शन का प्रचार किया। 1582 में, उन्होंने इबादतखाना में बहस बंद कर दी क्योंकि इससे विभिन्न धर्मों के बीच कटुता पैदा हो गई थी, एक समकालीन लेखक बदायूँनी, अकबर के धार्मिक प्रयोग के कटु आलोचक थे।
- **नवरत्न अर्थात् अकबर के नौ रत्न:**
  - बीरबल (प्रशासक)
  - अबुल फजल (विद्वान और लेखक)
  - फैजी (विद्वान और लेखक, अबुल फजल के भाई)
  - टोडरमल (वित्त मंत्री, दहसाला बंदोबस्त/जब्ती)
  - भगवानदास (मनसबदार, भारमल के पुत्र)
  - मान सिंह (मनसबदार, भारमल के पोते)
  - तानसेन (संगीतकार)
  - अब्दुर रहीम खाने खाना (राजनेता, हिंदी कवि)
  - मुल्ला दो प्याजा
- यूसुफजई जनजाति (1586) के साथ युद्ध में बीरबल मारा गया था।
- अबुल फजल की हत्या बीर सिंह बुंदेला (1601) ने की थी।
- अकबर के काल में तुलसीदास ('रामचरितमानस') भी रहे।
- अकबर की मृत्यु के बाद, उसे आगरा के पास सिकंदरा में दफनाया गया था।
- **जहाँगीर (1605-27):** मुगल सम्राट अकबर की मृत्यु के बाद, राजकुमार सलीम 'जहांगीर' की उपाधि के साथ सिंहासन पर बैठा, जिसका अर्थ है 'विश्व विजेता'।
- सिंहासन के उत्तराधिकार के बाद, उसने अबू–अल–फजल की हत्या कर दी जो उसके पिता का सर्वकालिक सलाहकार और निकटतम मित्र था।
- जहाँगीर ने अपने ही पुत्र खुसरो मिर्जा को हराया था जब उसने उसके खिलाफ विद्रोह का प्रयास किया था।
- गुरु अर्जन ने खुसरो मिर्जा को आश्रय दिया और इस प्रकार मुगल सम्राट जहांगीर के आदेश के तहत गुरु अर्जन को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हे इस्लाम कबूल करने के लिए कहा गया लेकिन उन्होंने मना कर दिया। 1606 ई. में उन्हें यातनाएं देकर मार दिया गया।
- 1611 में, जहाँगीर ने मेहरुन्निसा (नूरजहाँ जिसका अर्थ है 'दुनिया की रोशनी') से शादी की। उन्हें "पादशाह बेगम" के नाम से भी जाना जाता था।
- आसफ खान की बेटी, अर्जुमंद बानो बेगम, जिन्हें बाद में मुमताज कहा गया, ने जहांगीर के तीसरे बेटे राजकुमार खुर्रम से शादी की थी, जिसे बाद में शाहजहां के नाम से जाना गया।
- जहाँगार ने मारवाड़ की मनमती/जगत गोसाई/जोधाबाई और एक कछवाहा राजकुमारी से भी विवाह किया था।
- जहाँगीर ने शाही न्याय चाहने वालों के लिए आगरा किले में जंजीर–ए–अदल (यानी न्याय की जंजीर) की स्थापना की।
- 1608 में, ईस्ट इंडिया कंपनी के एक प्रतिनिधि कैप्टन विलियम हॉकिन्स जहांगीर के दरबार में आया। उन्हें 400 का मनसब दिया गया। साथ ही उसे भारत में व्यापार करने की अनुमति दी गई और ईस्ट इंडिया कंपनी ने सूरत में अपना कारखाना स्थापित किया।
- 1615 में इंग्लैंड के राजा जेम्स प्रथम के राजदूत सर थॉमस रो भी उनके दरबार में आया था।
- जहाँगीर ने उसने अपने संस्मरण तुजुक–ए–जहांगीरी फारसी में लिखे है।
- **शाहजहाँ (1628-58):** वह जगत गोसाई/जोधाबाई (राजा जगत सिंह की पुत्री) का पुत्र था। वह 1628 में सिंहासन पर बैठा।
- उसके शासनकाल के दौरान बुंदेलखंड (ओरछा का जुझार सिंह बुंदेला: 1628-35) और दक्कन दक्कन का गवर्नर खान–ए–जहाँ लोधी: (1629-31) का विद्रोह हुआ था।
- जहाँगीर की प्रिय बेगम मुमताज महल (अर्जुमन्द बानो बेगम) की मृत्यु 1631 में हुई और उसने उसकी याद में 1632-53 में ताजमहल (आगरा) का निर्माण कराया था।
- अहमदनगर के निजामशाही वंश को शाहजहाँ द्वारा मुगल नियंत्रण (1633) में लाया गया था।
- 1636 में, बीजापुर और गोलकुंडा की दक्कन सल्तनत ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।
- जहाँगीर के शासनकाल का वर्णन फ्रांसीसी यात्री बर्नियर और टैवर्नियर तथा मनूची ने किया है। पीटर मुंडी ने शाहजहाँ के समय हुए अकाल का वर्णन किया है। उसने कहा है कि शाहजहाँ के शासनकाल में मुगल साम्राज्य का अपने अपने शिखर पर था।

- लाल किला, जामा मस्जिद और ताजमहल शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान निर्मित कुछ शानदार स्मारक हैं।
- शाहजहाँ के गिरते स्वास्थ्य के कारण उसके चारों पुत्रों में 1657 ई. में उत्तराधिकार का युद्ध छिड़ गया। औरंगजेब विजेता बनकर उभरा जिसने जुलाई 1658 में खुद को बादशाह घोषित कर दिया था।
- उसे उसके बेटे औरंगजेब ने आगरा के किले में कैद कर दिया था जहाँ 1666 ई. में कैद में उनकी मृत्यु हो गई थी। उसे ताज (आगरा) में दफनाया गया था।
- **औरंगजेब (1658-1707):** उत्तराधिकार के युद्ध में अपने भाइयों को हराने के बाद, औरंगजेब को दिल्ली में आलमगीर की उपाधि के साथ बादशाह बनाया गया।
- पूरे देश को इस्लामिक राज्य में बदलना चाहता था। शराब पीने और संगीत पर प्रतिबंध लगा दिया।
- औरंगजेब के शासन में झरोखा दर्शन की प्रथा को भी बंद कर दिया गया था। झरोखा दर्शन मध्ययुगीन काल के दौरान महलों और किलों की बालकनियों या दीर्घाओं से आम जनता को संबोधित करने और दर्शन देने का एक दैनिक अभ्यास था।
- औरंगजेब ने हिंदू मंदिरों को नष्ट करने की नीति अपनायी और मुगल शासित के राज्यों में मुहर्रम के उत्सव को भी रोक दिया गया।
- राष्ट्र में विभिन्न समुदायों के खिलाफ उसकी कठोर नीतियों के कारण, मराठा, सिख और राजपूत राज्य मुगलों के दुश्मन बन गए। मथुरा के जाटों और मेवाड़ के सतनामियों ने भी मुगलों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था।
- औरंगजेब ने सिखों के नौवें गुरु तेग बहादुर की हत्या करवा दी थी। दसवें और अंतिम सिख गुरु, गुरु गोबिंद सिंह (गुरु तेग बहादुर के पुत्र) ने मुस्लिम अत्याचार से लड़ने और अपने पिता की हत्या का बदला लेने के लिए अपने अनुयायियों को "खालसा" नामक योद्धाओं के एक समुदाय में संगठित किया। हालाँकि, गुरु गोबिंद सिंह की 1708 में दक्कन के नांदेड़ में एक अफगान द्वारा हत्या कर दी गई थी। गुरु गोबिंद सिंह के एक विश्वसनीय शिष्य उत्तराधिकारी बंदा बहादुर (बैरागी) ने मुगलों के खिलाफ युद्ध जारी रखा।
- औरंगजेब ने अहमदनगर में फरवरी 1707 में अपनी मृत्यु तक लगभग 50 वर्षों तक शासन किया।
- उसने 1682 में उत्तर छोड़ दिया और अगले 25 वर्षों (1682-1707) तक मराठों को कुचलने के लिए प्रयास किए।
- शिवाजी सबसे शक्तिशाली मराठा शासक और औरंगजेब के कट्टर दुश्मन थे और इस तरह औरंगजेब ने 1665 में अंबर (एक राजपूत) के जय सिंह के साथ साजिश रची और जय सिंह द्वारा दिए गए आश्वासन पर शिवाजी औरंगजेब के दरबार आगरा में पेश किया गया था।
- शिवाजी को औरंगजेब ने कैद कर लिया था लेकिन वे 1674 में भागने में सफल रहे और फिर खुद को एक स्वतंत्र सम्राट घोषित कर दिया। 1680 में उनकी मृत्यु हो गई और उनके पुत्र संभाजी ने उनका उत्तराधिकार प्राप्त किया, जिन्हें 1689 में औरंगजेब ने मार डाला था।
- संभाजी के बाद उनके भाई राजाराम शासक बने और 1700 में उनकी मृत्यु के बाद उनकी विधवा ताराबाई ने मुगलों के विरूद्ध आंदोलनों को आगे बढ़ाया। औरंगजेब के शासनकाल के दौरान मुगल सल्ता अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई, चूंकि बीजापुर और गोलकुंडा को पूर्व में ही क्रमशः 1686 और 1687 में कब्जा कर लिया गया था।
- 1707 में अहमदनगर में औरंगजेब की मृत्यु हो गई। उसे खुल्दाबाद (दौलताबाद) में दफनाया गया। उसके चाहने वालो द्वारा उसे जिंदा पीर, जीवित संत कहा जाता था। उसने जजिया को फिर से लागू किया गया। हालांकि, उसके शासन के दौरान हिंदू मनसबदारों ने अपना उच्च अनुपात बनाए रखा।
- **मुगल साम्राज्य का पतन:** औरंगजेब के बाद मुगल साम्राज्य का तेजी से पतन हुआ। पतन के महत्वपूर्ण कारण निम्न थे:
  - औरंगजेब की राजपूत, दक्कन और धार्मिक नीतियां
  - कमजोर उत्तराधिकारी जो प्रशासक और सेनापति दोनों के रूप में अक्षम थे
  - उत्तराधिकार के युद्ध
  - औरंगजेब के बढ़ती गुटबाजी
  - जागीरदारी संकट
  - बंगाल, हैदराबाद, अवध, मैसूर आदि में मराठा और अन्य क्षेत्रीय शक्तियों का उदय
  - नादिर शाह (1739) और अब्दाली के विदेशी आक्रमण
  - भारत में अंग्रेजों शक्ति का विस्तार
- **उत्तरवर्ती मुगल:**
  - **बहादुर शाह प्रथम (1707-1712):** मूल नाम मुहम्मद मुअज्जमए उपाधि–शाह आलम प्रथम।
  - **जहांदार शाह (1712-1713):** जुल्फिकार खान की मदद से मुगल सिंहासन पर बैठा; जजिया समाप्त कर दिया।
  - **फर्रुखसियर (1713-1719):** सैय्यद बंधुओं– अब्दुल खां और हुसैन खां की सहायता से सिंहासन पर बैठा।
  - **मुहम्मद शाह (1719-1748):** इसके समय 1738.39 मेंए नादिरशाह ने भारत पर आकृमण किया और तख्त–ए–ताऊस (मयूर सिंहासन) और कोहिनूर हीरा छीन कर भारत से बाहर ले गया।
  - **अहमद शाह (174-1754):** इसके शासन काल में अहमद शाह अब्दाली (नादिर शाह के सेनापति) ने दिल्ली पर आकृमण किया और मुगलों ने पंजाब और मुल्तान अब्दाली को सौंप दिये।
  - **आलमगीर द्वितीय (1754-1759):** अहमद शाह अब्दाली ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। बाद में दिल्ली को जमकर लूटा गया।
  - **शाह आलम द्वितीय (1759-1806):** अहमदशाह अब्दाली का प्रतिनिधि नजीब खान दिल्ली में इतना शक्तिशाली हो गया कि शाह आल्म द्वितीय 12 वर्षो तक दिल्ली में प्रवेश नहीं कर सका।
  - **अकबर द्वितीय (1806-1837):** ईस्ट इंडिया कंपनी का पेंशनभोगी था।
  - **बहादुर शाह द्वितीय (1837-1857):** अंतिम मुगल सम्राट जिसने 1857 के विद्रोह के दौरान भारत का सम्राट घोषित किया गया था। 1858 में उसे रंगून (बर्मा– अब म्यांमार) भेज दिया गया, जहां 1862 में उसकी मृत्यु हो गई।
- अकबर ने मनसबदारी प्रणाली की शुरुआत की। मनसब शब्द उसके धारक के औहदे को दर्शाता था। मनसबदारी नागरिक और सैन्य दोनों प्रकार की थी। लगभग पूरे कुलीन वर्ग, नौकरशाही और सेना के पास मनसब थे।

- **दहसाला बंदोबस्त या जब्ती:** 10 साल के मूल्यांकन के बाद निर्धारित फसलों की दरों के आधार पर संग्रह की एक मानक विधि थी। जो टोडर मल ने शुरू की थी।
- जागीरदारी प्रणाली एक जागीरदार के वेतन के अनुपात में भूमि का आवंटन था। इसलिए, प्रत्येक मनसबदार जागीर का हकदार था यदि उसे नकद भुगतान नहीं किया जाता था।
- मदद–ए–माश या सुयूरगल या इनाम, पसंद/धार्मिक असाइनमेंट के लोगों को भूमि अनुदान थे।
- **मुगल संस्कृति:** बाबर ने दो मस्जिदों का निर्माण किया, एक पानीपत की काबुली बाग और दूसरी रोहिलखंड के संभल में।
- हुमायूँ का मकबरा उसकी विधवा हाजी बेगम ने बनवाया था।
- पंच महल (फतेहपुर सीकरी) में बौद्ध विहार की योजना पर आधारित स्मारक है।
- फतेहपुर सीकरी में मरियम का महल, दीवान–ए–आम, दीवान–ए–खास भारतीय योजनाओं के अनुसार बनाया गया था।
- बुलंद दरवाजा अकबर द्वारा 1601 में गुजरात विजय की स्मृति में बनवाया गया था। इसे फतेहपुर सीकरी के मुख्य प्रवेश द्वार के रूप में बनाया गया था। फतेहपुर सीकरी की लाल बलुआ पत्थर से बनी वास्तुकला को महाकाव्य रचना के रूप में जाना जाता है।
- सलीम चिश्ती का मकबरा शुद्ध संगमरमर से बनी पहली मुगल इमारत है। दरअसल इसे जहांगीर ने संगमरमर से फिर से बनवाया था।
- फतेहपुर सीकरी में बीरबल और तानसेन के महल भी स्थित हैं।
- अकबर ने भी सिकंदरा में अपना मकबरा बनवाना शुरू किया जिसे बाद में जहाँगीर ने पूरा करवाया था।
- नूरजहाँ ने आगरा में इतिमाद–उद–दौलाधमिर्जा घियास बेग का संगमरमर का मकबरा बनवाया। यह वास्तुकला की तकनीक पिएट्रा ड्यूरा (अर्द्ध–कीमती पत्थरों से बने पुष्प डिजाइन) के सर्वप्रथम उपयोग के लिए जाना जाता है।
- जहाँगीर ने लाल बलुआ पत्थर के स्थान पर संगमरमर का अधिक उपयोग और सजावटी उद्देश्यों के लिए पिएत्रा ड्यूरा का उपयोग शुरू किया था।
- जहाँगीर ने लाहौर में मोती मस्जिद और शाहदरा (लाहौर) में उसकी समाधि बनवाई थी।
- इसके अलावा उसने दिल्ली में जामा मस्जिद बनवाई।
- आगरा में शाहजहाँ द्वारा निर्मित कुछ महत्वपूर्ण इमारतें मोती मस्जिद संगमरमर से बनी हैं। खास महल, मुसम्मन बुर्ज (जैस्मिन पैलेस जहां शाहजहाँ ने अपना आखिरी साल कैद में बिताया) आदि।
- शाहजहाँ ने 1637 में शाहजहाँनाबाद की नींव रखी जहाँ उसने लाल किला और तख्त–ए–ताऊस (मयूर सिंहासन) बनवाया।
- लाल किले (दिल्ली) में औरंगजेब द्वारा निर्मित एकमात्र इमारत मोती मस्जिद है। औरंगजेब से जुड़ा एकमात्र स्मारक बीबी का मकबरा है जो औरंगाबाद में स्थित उसकी पत्नी राबिया–उद–दौरा का मकबरा है।
- औरंगजेब ने लाहौर में बादशाही मस्जिद भी बनवाई।
- **मुगल कला:** मीर सैयद अली और अब्दुस समद ऐसे दो चित्रकार थे जो हुमायूँ की सेवा में थे।
- दसवंत और बसावन अकबर के दरबार के दो प्रसिद्ध चित्रकार थे।
- अब्दुल हसन, उस्ताद मंसूर और बिशनदास जहाँगीर के दरबार के तीन प्रसिद्ध चित्रकार थे।
- जहाँगीर ने दावा करता था कि वह एक तस्वीर में प्रत्येक कलाकार के काम को अलग कर सकता है।

क्या आप जानते हैं?

- ★ मुगल दरबार के वृत्तांत फ़ारसी भाषा में लिखे गए थे।
- ★ मुगल बादशाह जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा फारसी में लिखी थी।
- ★ मुगल शासक अकबर के समय 'झरोखा दर्शन' आरम्भ किया गया था।
- ★ मुमताज महल का असली नाम अर्जुमन्द बानो बेगम था। हुमायूँ का मकबरा आगरा में है।
- ★ भारत में बीबी का मकबरा हैदराबाद में स्थित है।
- ★ 'दहसाला बन्दोबस्त' टोडरमल से सम्बन्धित है।
- ★ मुगल बादशाह जहाँगीर की न्यायिक प्रणाली "सभी के लिए न्याय" थी।
- ★ बाबर को "कलंदर" के नाम से भी जाना जाता है।
- ★ बाबर ने 1526 ई. में पानीपत में काबुली बाग मस्जिद का निर्माण करवाया था।
- ★ बाबर ने 1528 ई. में आगरा में आराम बाग भी बनवाया था।
- ★ हुमायूँ ने निगारखाना (पेंटिंग वर्कशॉप) की भी स्थापना की। उन्होंने मीर सैय्यद अली और अब्दुस समद को अपने दरबार में एक स्टूडियो स्थापित करने और शाही पेंटिंग बनाने के लिए आमंत्रित किया।
- ★ अकबर के शासनकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण काल कहा जाता है क्योंकि इस काल के कई लेखकों ने हिंदी साहित्य के क्षेत्र में योगदान दिया।
- ★ अकबर ने 1571 में मनसबदारी प्रणाली की शुरुआत की थी। यह एक ग्रेडिंग प्रणाली थी जिसका उपयोग मुगल शासकों द्वारा मनसबदार के पद और वेतन को तय करने के लिए किया जाता था। आइन–ए–अकबरी में अबुल फजल ने 66 मनसबदारों का उल्लेख किया है।
- ★ भारत में संगीत विकास के क्रम में मध्यकाल को स्वर्ण युग कहा जाता है। कृपया ध्यान दें कि अकबर के काल को संगीत का स्वर्ण काल कहा जाता है।
- ★ मयूर सिंहासन (तख्त–ए–ताऊस) शाहजहाँ द्वारा दिल्ली के लाल किले के दीवान–ए–खास में बनवाया गया था।
- ★ शाह कुली खान का मकबरा हरियाणा में स्थित है। वह बैरम खान का आश्रित था, जो एक शक्तिशाली कुलीन था, जिसने अकबर महान के शुरुआती शासनकाल के दौरान मुगल साम्राज्य के शासक के रूप में कार्य किया था।
- ★ शाहजहाँ के अधीन मुग़ल साम्राज्य का भू–राजस्व 20.75 मिलियन स्टर्लिंग था।
- ★ अकबराबादी महल, कंधारी महल और अर्जुमंद बानो बेगम शाहजहाँ की पत्नियाँ थीं।
- ★ शाहजहाँ की बेटी जहाँआरा ने ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की जीवनी लिखी।
- ★ जीन–बैप्टिस्ट टैवर्नियर (फ्रांस) एक यात्री और व्यापारी, ने 1630–68 के बीच छः बार भारत का दौरा किया। उन्हें 116

कैरेट के हीरे की खोज के लिए जाना जाता है। उन्होंने "ट्रैवल्स इन इंडिया" पुस्तक लिखी।

- 1679 में औरंगजेब ने जजिया कर पुनः लागू किया। जसवन्त सिंह वह शासक थे जिन्होंने औरंगजेब द्वारा जजिया कर लगाये जाने का लिखित विरोध किया था।
- 1691 में, औरंगजेब ने ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल में मुक्त व्यापार करने की अनुमति देने के लिए फरमान जारी किया। लेकिन निजी व्यापारियों को व्यापार शुल्क देना पड़ता था।
- "दस्तक" शब्द का अर्थ "शुल्क मुक्त व्यापार" है। 1717 में, फर्रुखसियर ने सामान्य सीमा शुल्क का भुगतान किए बिना बंगाल में व्यापार करने के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी को दस्तक जारी की।
- मुहम्मद शाह के शासनकाल के दौरान, महाराजा जय सिंह द्वितीय ने 1724 ई. में दिल्ली में जंतर मंतर का निर्माण कराया। उन्होंने जयपुर, दिल्ली, उज्जैन और वाराणसी में वेधशालाओं का निर्माण कराया।
- मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय ने राजा राम मोहन राय को अपना राजदूत बनाकर लंदन भेजा।
- आइन–ए–अकबरी को अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फजल ने फारसी भाषा में लिखा था। यह मुगल सम्राट अकबर के प्रशासन से संबंधित है। इसे तीन पुस्तकों में विभाजित किया गया है–
- पहली पुस्तक अकबर के पूर्वजों से संबंधित थी।
- दूसरे में अकबर के शासनकाल की घटनाओं को दर्ज किया गया।
- तीसरी है आइन–ए–अकबरी। यह अकबर के प्रशासन, घर–परिवार, सेना, राजस्व और उसके साम्राज्य के भूगोल से संबंधित है। यह भारत में रहने वाले लोगों की परंपराओं और संस्कृति के बारे में समृद्ध विवरण प्रदान करता है। इसमें फसलों, पैदावार, कीमतों, मजदूरी और राजस्व के बारे में सांख्यिकीय विवरण भी प्राप्त हुआ।

13. भक्ति तथा सूफी आंदोलन

- **महत्वपूर्ण भक्ति संत:**
  - **रामानुज (1017-1137):** ये यमुना मुनि के शिष्य थे। उन्होंने विशिष्ट अद्वैत नामक दर्शन की स्थापना की और वैष्णववाद का प्रचार किया। कुलोत्तांग चोल, जो एक शैव था ने रामानुजाचार्य को वैष्णववाद का प्रचार करने के कारण निर्वासित कर दिया था
  - **रामानंद (14-15वीं शताब्दी):** वह हिंदू दर्शन के योग विद्यालय के नाथपंथी तपस्वियों से प्रभावित थे। उनके शिष्यों में – कबीर, रविदास, भगत, पीपा, और अन्य शमिल थे। उनके श्लोक का उल्लेख सिख के आदि ग्रंथ में मिलता है।
  - **कबीर (1440-1510):** सिख धर्म के ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब में उनके छंद पाए जाते हैं। वह रामानंद के शिष्य थे उन्होंने हिंदुओं और मुसलमानों दोनों द्वारा पालन की जाने वाली सतही धार्मिक प्रथाओं पर प्रहार किया, वे निराकार ईश्वर में विश्वास करते थे। उन्होंने– सबद, बीजक, दोहा, होली और रेखताल आदि की रचना की थी। उन्होंने राम भक्ति का प्रचार किया। उनके अनुयायी "कबीरपंथी" कहलाते हैं।
  - **गुरु नानक (1469-1538):** वे पहले सिख गुरु और सिख धर्म के संस्थापक थे। उन्होंने भगवान की यह अवधारणा पेश की कि वह 'वाहिगुरु' है, एक ऐसी इकाई जो निराकार, कालातीत, सर्वव्यापी और अदृश्य है। सिख धर्म में भगवान के अन्य नाम अकाल पुरख और निरंकार हैं। सिखों की सबसे पवित्र पुस्तक गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु नानक द्वारा रचित 974 काव्यात्मक भजन हैं।
  - **चैतन्य महाप्रभु (1486-1533):** कृष्ण भक्ति पंथ के महान संतों में से एक और वे गौड़ीय या बंगाल वैष्णववाद के संस्थापक थे। वे केशव भारती के शिष्य थे। उन्हें गौरांग प्रभू और विश्वंबर के नाम से भी जाना जाता था। उन्होंने बंगाल और ओडिशा में वैष्णववाद का प्रचार किया।
  - **मीराबाई (1498-1546):** मीराबाई मेड़ता की राठौड़ राजकुमारी और मेवाड़ के राणा सांगा की पुत्रवधू थी। वह वैष्णववाद के कृष्ण पंथ की सबसे प्रसिद्ध भक्ति संत थीं। वह वृंदावन के गिरिधर गोपाल पंथ का परिचय देने वाली पहली थीं और भक्ति आंदोलन में भजन की शुरुआत करने वाली भी पहली थीं। उनके भजनों की रचना ब्रजभाषा में की गई थी।
  - **सूरदास (1483-1563):** ये आगरा के एक दृष्टिहीन कवि थे। उन्होंने अपने 'सूरसागर' में कृष्ण की महिमा का उल्लेख किया है।
  - **तुलसीदास (1532-1623):** वे वैष्णववाद के राम भक्ति पंथ के सबसे महान संत–कवि थे। वे 'रामचरितमानस', 'कवितावली' और 'गीतावली' के रचयिता थे।
  - **शंकर देव (1449-1568):** वे असम में वैष्णव भक्ति आंदोलन के संस्थापक और प्रमुख संत थे।
  - **ज्ञानेश्वर (1271-1296):** वह महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन से जुड़े प्रमुख संत थे। वे मराठी भाषा और साहित्य के संस्थापक थे। उन्होंने भगवद गीता पर 'ज्ञानेश्वरी' नामक एक लंबी टीका लिखी।
  - **नामदेव (1270-1350):** वह ज्ञानेश्वर के समकालीन थे। वह जाति से एक दर्जी थे और सभी जाति भेदों के विरोधी थे। वह पंढरपुर के विठोबा या विट्ठल (विष्णु के साथ पहचाने जाने वाले) के भक्त थे। वे वारकरी संप्रदाय के संस्थापक थे।
- **महत्वपूर्ण सूफी संत:**
  - **ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती (1141-1236):** वह चिश्ती सम्प्रदाय के संस्थापक थे, जो भारत में पहला और सबसे लोकप्रिय उदारवादी सूफी सम्प्रदाय था। वह लगभग 1206 में अजमेर में बस गये। उसके बाद शेख हमीदुद्दीन नागौरी (1192-1274 ई.); ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, (निधन 1236); बाबा फरीदुद्दीन गंज–ए–शकर (1175-1265 ई.); शेख निजामुद्दीन औलिया (1236-1325); शेख नसीरुद्दीन महमूद चिराग–ए–दिल्ली (1365 ई.) और सैयद मुहम्मद गेसूदराज (1421)।
  - **शेख निजामुद्दीन औलिया (1236-1325 ई.)** ने महबूब–ए–इलाही (ईश्वर के प्रिय) की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने दिल्ली में अपना खानकाह बनवाया! वे चिश्ती सम्प्रदाय के सबसे प्रसिद्ध सूफी संतों में से एक थे।
  - शेख नसीरुद्दीन महमूद (1365 ई.) को बाद में चिराग–ए–दिल्ली (दिल्ली का चिराग) के नाम से जाना गया।
  - सैयद मुहम्मद गेसूदराज (1421 ई.) जो गुलबर्गा (कर्नाटक) में बस गए थे, उन्हें लोकप्रिय रूप से बंदनवाज (ईश्वर के प्राणियों के दाता) के रूप में जाना जाता था और उन्होंने सूफीवाद पर 30 से अधिक पुस्तकें लिखीं– वे उर्दू के शुरुआती लेखकों और कवियों में से एक थे।

- **शेख बदरुद्दीन समरकंदी (13 वीं शताब्दी):** उन्होंने फिरदौसी सिलसिले की स्थापना की जो बिहार तक ही सीमित था।
- **शाह नयामात ला कादिरी:** उसने कादिरिया सिलसिले की स्थापना की। यह उत्तर प्रदेश और दक्कन में फैल गया। मियाँ मीर (1550-1635 ई.) कादिरिया सम्प्रदाय के सबसे लोकप्रिय सूफी संत थे।
- **शाह अब्दुल्ला शत्तारी (15वीं शताब्दी):** उन्होंने शत्तारी सिलसिले की स्थापना की। यह मुख्य रूप से मध्य प्रदेश और गुजरात में फैला हुआ है।
- **ख्वाजा बाकी बिल्लाह (1536-1603):** उन्होंने नक्शबंदिया सिलसिले की स्थापना की और इसके सबसे प्रसिद्ध संत शेख अहमद सिरहिंदी (1625 ई.) थे जिन्हें मुजद्दिद अलीफ के नाम से जाना जाता था।

क्या आप जानते हैं?

- दरगाह, सूफी संत की कब्र को संदर्भित करता है।
- विशद धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से शिव को देवी देवताओं के रूप में जाना जाने लगा।
- नयनार साधू–संतो की संख्या 63 थी।
- अलवर संत–संख्या में 12 थे।
- भारत के सर्वाधिक प्रभावशाली दार्शनिको में से शंकर का जन्म आठवीं शताब्दी में केरल प्रदेश में हुआ था।
- रामानुज का ग्यारहवीं शताब्दी में जन्म स्थान तमिलनाडू है।
- जलालुद्दीन रूमी तेरहवीं सदी का का महान सूफी शायर था।
- अंडाल नयनार संत नहीं था।
- चोखामेला को भारत में वंचित वर्ग का प्रथम कवि कहा जाता है।
- संत निम्बार्क सगुण उपासना के प्रसार के लिए जाने जाते हैं। निम्बार्क संप्रदाय अधिकतर ब्रजभूमि, वृन्दावन, नंदीग्राम, बरसाना में पाया जाता है।
- शेख सलीम चिश्ती का मकबरा फ़तेहपुर सीकरी (आगरा) में स्थित है।
- दक्षिण भारत में चिश्ती स्कूल का मुख्य केंद्र गुलबर्गा था।
- शेख निज़ामुद्दीन औलिया बाबा फरीदुद्दीन गंज–ए–शकर के शिष्य थे।

14. यूरोपियनों का आगमन

- 1453 ई. में तुर्कों द्वारा कुस्तुंतुनिया पर कब्ज़ा करने के बाद, भारत और यूरोप के बीच भूमि मार्ग बंद कर दिया गया था।
- तुर्क उत्तरी अफ्रीका और बाल्कन प्रायद्वीप में घुस गये। यूरोपीय देशों के लिए पूर्व की ओर नए समुद्री मार्गों की खोज करना अनिवार्य हो गया
- **पुर्तगालियों का आगमन:** पूरे यूरोपीय देशों में पुर्तगाल भारत के लिए समुद्री मार्ग की खोज का गतिशील प्रयास करने वाला सबसे अग्रणी देश था।
- पुर्तगाल के राजकुमार हेनरी, जिन्हें आमतौर पर "नेविगेटर" के नाम से जाना जाता है, ने अपने देशवासियों को दुनिया के अज्ञात क्षेत्रों की खोज का साहसिक जीवन अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। बार्थोलोम्यू डियाज़, एक पुर्तगाली नाविक, 1487 में अफ्रीका के सबसे दक्षिणी बिंदु पर पहुंचा। उसे राजा जॉन द्वितीय द्वारा संरक्षण दिया गया था।
- **वास्को डी गामा:** एक अन्य पुर्तगाली नाविक वास्को डी गामा अफ्रीका के सबसे दक्षिणी बिंदु पर पहुंचे और उन्होंने मोजाम्बिक की अपनी यात्रा जारी रखी, जहां से वह एक भारतीय पायलट की मदद से भारत के लिए रवाना हुए।
- 1498 में, वह कालीकट पहुंचे, जहां कालीकट के शासक राजा ज़मोरिन ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। एक दूसरा पुर्तगाली नाविक, पेड्रो अल्वारेस कैब्रल, 1500 में 13 जहाजों और कुछ सौ सैनिकों के साथ वास्को डी गामा द्वारा खोजे गए मार्ग का अनुसरण करते हुए भारत की ओर रवाना हुआ।
- कालीकट पहुँचने पर पुर्तगालियों और राजा ज़मोरिन के बीच संघर्ष छिड़ गया। वास्को डी गामा दूसरी बार 1501 में 20 जहाजों के साथ भारत आया और कन्नानोर में एक व्यापारिक केंद्र की स्थापना की।
- एक के बाद एक, उन्होंने कालीकट और कोचीन में कारखाने स्थापित किए। राजा ज़मोरिन ने कोचीन में पुर्तगालियों पर हमला किया, लेकिन हार गए। कोचीन पुर्तगाली ईस्ट इंडिया कंपनी की पहली राजधानी थी। वास्को डी गामा की तीसरी यात्रा 1524 में हुई। वह जल्द ही बीमार पड़ गए और दिसंबर 1524 में कोचीन में उनकी मृत्यु हो गई।
- **फ्रांसिस्को डी अल्मेडा (1505–1509):** 1505 में, फ्रांसिस्को डी अल्मेडा को भारत में पुर्तगाली आधिपत्य के लिए पहले गवर्नर के रूप में भेजा गया था। अल्मेडा का उद्देश्य भारत में पुर्तगालियों की नौसैनिक शक्ति का विकास करना था। उनकी नीति को "ब्लू वाटर पॉलिसी" के नाम से जाना जाता था।
- जैसे ही पुर्तगालियों ने हिंद महासागर के व्यापार पर अरबों के एकाधिकार को तोड़ने की कोशिश की, इसका मिस्र और तुर्की के व्यापारिक हितों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। बीजापुर और गुजरात के सुल्तान भी बंदरगाहों पर पुर्तगाली नियंत्रण के विस्तार से आशंकित थे जिसके कारण पुर्तगाली आक्रमणकारियों के खिलाफ मिस्र, तुर्की और गुजरात के बीच गठबंधन हुआ।
- चौल के पास लड़े गए एक नौसैनिक युद्ध में, संयुक्त मुस्लिम बेड़े ने अल्मेडा के बेटे के नेतृत्व में पुर्तगाली बेड़े पर जीत हासिल की, जो युद्ध में मारा गया था। अल्मेडा ने दीव के पास एक नौसैनिक युद्ध में संयुक्त मुस्लिम बेड़े को हराया और वर्ष 1509 तक पुर्तगालियों ने एशिया में नौसैनिक वर्चस्व का दावा किया।
- **अल्फांसो डी अल्बुकर्क (1509–1515):** भारत में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक अल्फांसो डी अल्बुकर्क था। नवंबर 1510 में उसने बीजापुर के सुल्तान से गोवा पर कब्जा कर लिया। 1515 में उसने फारस की खाड़ी में ओरमुज पर पुर्तगाली अधिकार स्थापित किया।
- उन्होंने भारतीय महिलाओं के साथ पुर्तगालियों के विवाह को प्रोत्साहित किया। उन्होंने विजयनगर साम्राज्य के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखे।
- **नूनो डी कुन्हा (1529–1538):** गवर्नर नूनो डी कुन्हा ने 1530 में राजधानी कोचीन से गोवा स्थानांतरित कर दी। 1534 में, उन्होंने गुजरात के बहादुर शाह से बेसिन का अधिग्रहण किया।
- 1537 में पुर्तगालियों ने दीव पर कब्ज़ा कर लिया। बाद में उन्होंने दमन को गुजरात के स्थानीय सरदारों से छीन लिया। 1548 में उन्होंने साल्सेट पर कब्ज़ा कर लिया।
- इस प्रकार 16वीं शताब्दी के दौरान, पुर्तगाली पश्चिमी तट पर गोवा, दमन, दीव, साल्सेट, बेसिन, चौल और बॉम्बे, बंगाल तट पर हुगली और मद्रास तट पर सैंथोम पर कब्जा करने में सफल रहे और अच्छे व्यापार लाभ का आनंद लिया।

- पुर्तगाली भारत में तम्बाकू की खेती लाए। पुर्तगाली के प्रभाव के कारण कैथोलिक धर्म भारत के पश्चिमी और पूर्वी तटों पर कुछ क्षेत्रों में फैल गया। पुर्तगालियों द्वारा 1556 में गोवा में प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की गई थी।
- एक यूरोपीय लेखक द्वारा भारतीय औषधीय पौधों पर एक वैज्ञानिक कार्य 1563 में गोवा में मुद्रित किया गया था। 17वीं शताब्दी में, पुर्तगाली शक्ति डचों तक कम होने लगी और 1739 तक पुर्तगाली क्षेत्र गोवा, दीव और दमन तक ही सीमित हो गए।
- **डच:** डचों ने पुर्तगालियों का पीछा करते हुए भारत में प्रवेश किया। 1602 में, नीदरलैंड की यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी का गठन किया गया और इसे पूर्वी भारत में व्यापार करने के लिए उनकी सरकार की मंजूरी मिली। भारत में आगमन के बाद, डचों ने 1605 में मसूलीपट्टनम, (आंध्र प्रदेश) में अपनी पहली फैक्ट्री स्थापित की।
- इस कंपनी ने 1605 में पुर्तगालियों से अम्बोयना पर कब्ज़ा कर लिया और स्पाइस द्वीप समूह में अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया। उन्होंने पुर्तगालियों से मद्रास के निकट नागपट्टिनम पर कब्ज़ा कर लिया और दक्षिण भारत में इस स्थान को अपना गढ़ बना लिया। सबसे पहले, पुलिकट उनका मुख्यालय था। बाद में, उन्होंने इसे 1690 में नागपट्टिनम में स्थानांतरित कर दिया।
- डचों द्वारा व्यापार की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण भारतीय वस्तुएँ रेशम, कपास, नील, चावल और अफ़ीम थीं। उन्होंने काली मिर्च और अन्य मसालों के व्यापार पर एकाधिकार जमा लिया। भारत में महत्वपूर्ण कारखाने पुलिकट, सूरत, चिनसुराह, कासिम बाजार, पटना, नागपट्टिनम, बालासोर और कोचीन थे।
- 17वीं शताब्दी के दौरान इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी पुर्तगालियों और डचों के साथ प्रतिद्वंद्विता में लगी रही। 1623 में, डचों ने अंबोयना में दस अंग्रेजी व्यापारियों और नौ जावानीस को बेरहमी से मार डाला।
- इस घटना ने दो यूरोपीय कंपनियों के बीच प्रतिद्वंद्विता को तेज कर दिया। उनका अंतिम पतन 1759 में बेडेरा की लडाई में अंग्रेजों से उनकी हार के साथ हुआ। डचों ने एक–एक करके अपनी बस्तियाँ अंग्रेजों के हाथों खो दीं और वर्ष 1795 तक उनका पूरी तरह से सफाया हो गया।
- 1502 में पुलिकट पर नियंत्रण स्थापित करने वाले पुर्तगालियों को डचों ने उखाड़ फेंका। पुलिकट में, डचों ने 1613 में गेल्ड्रिया किले का निर्माण किया था। यह किला कभी डच शक्ति का केंद्र था।
- डचों ने 1610 में पुलिकट में अपनी बस्ती स्थापित की। पुलिकट से हीरे पश्चिमी देशों को निर्यात किए जाते थे। अन्य डच औपनिवेशिक किले और संपत्तियाँ नागपट्टिनम, पुन्नाकायल, पोर्टोनोवो, कुड्डालोर और देवनमपतिनम थीं।
- **ब्रिटिश:** 31 दिसंबर, 1600 को, इंग्लैंड की रानी एलिजाबेथ ने ईस्ट इंडीज के साथ व्यापार करने के लिए लंदन के गवर्नर और व्यापारियों की कंपनी को एक चार्टर प्रदान किया। कंपनी का नेतृत्व एक गवर्नर और 24 निदेशकों का दल करता था।
- कैप्टन हॉकिन्स ने कंपनी के लिए कुछ रियायतें प्राप्त करने के लिए 1608 में जहाँगीर के दरबार का दौरा किया। उन्होंने सूरत में एक बस्ती स्थापित करने की अनुमति प्राप्त की। हालाँकि, पुर्तगालियों के दबाव में सम्राट ने अनुमति रद्द कर दी।
- 1612 में, अंग्रेज कैप्टन थॉमस बेस्ट ने सूरत के पास एक नौसैनिक युद्ध में पुर्तगालियों को करारी शिकस्त दी। मुगल सम्राट जहांगीर ने 1613 में अंग्रेजों को सूरत में अपना कारखाना स्थापित करने की अनुमति दी, जो शुरू में पश्चिमी भारत में अंग्रेजों का मुख्यालय बन गया। कैप्टन निकोलस डाउटन ने 1614 में पुर्तगालियों पर एक और निर्णायक जीत हासिल की।
- इन घटनाओं ने मुगल दरबार में ब्रिटिश प्रतिष्ठा को बढ़ाया। 1615 में, सर थॉमस रॉ को इंग्लैंड के राजा जेम्स प्रथम द्वारा जहाँगीर के दरबार में भेजा गया था। वह तीन वर्षों तक आगरा में रहे और सम्राट के साथ एक व्यापारिक संधि करने में सफल रहे। सर थॉमस रो के प्रस्थान से पहले, अंग्रेजों ने सूरत, आगरा, अहमदाबाद और ब्रोच में अपने व्यापारिक केंद्र स्थापित किए थे।
- बंगाल की खाड़ी के तट पर, अंग्रेजों ने 1611 में मसुलीपट्टम में अपना पहला कारखाना स्थापित किया, जो गोलकुंडा राज्य के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण बंदरगाह था। 1639 में, अंग्रेज व्यापारी फ्रांसिस डे ने चंद्रगिरि के शासक चेन्नप्पा नायक से पट्टे के रूप में मद्रास प्राप्त किया।
- ईस्ट इंडिया कंपनी ने मद्रास में अपना प्रसिद्ध कारखाना 'फोर्ट सेंट जॉर्ज' के नाम से जाना, जो पूरे पूर्वी क्षेत्र के लिए उनका मुख्यालय और अंग्रेजों द्वारा निर्मित पहला किला बन गया।
- इंग्लैंड के राजा चार्ल्स द्वितीय को कैथरीन के साथ अपने विवाह के अवसर पर पुर्तगाली राजा से दहेज के रूप में बंबई द्वीप प्राप्त हुआ था। 1668 में, ईस्ट इंडिया कंपनी ने चार्ल्स द्वितीय से 10 पाउंड के वार्षिक किराये पर इस द्वीप का अधिग्रहण किया।
- 1690 में जॉब चारनॉक द्वारा सुतानुति में एक फैक्ट्री स्थापित की गई थी। 1698 में सुतनाती, कालिकाता और गोविंदपुर के तीन गांवों की जमींदारी अंग्रेजों ने हासिल कर ली थी। ये गांव बाद में कलकत्ता शहर में विकसित हुए। सुतानुति की फैक्ट्री को 1696 में किलेबंद किया गया था और इस नई किलेबंद बस्ती का नाम 1700 में 'फोर्ट विलियम' रखा गया था।
- 1757 में प्लासी की लडाई और 1764 में बक्सर की लडाई के बाद, कंपनी एक राजनीतिक शक्ति बन गई। ब्रिटिश क्राउन के प्रत्यक्ष प्रशासन के अधीन आने के बाद 1858 तक भारत ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के अधीन था।
- डेनिश: 17 मार्च, 1616 को डेनमार्क के राजा क्रिश्चियन चतुर्थ ने एक चार्टर जारी किया और डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी बनाई। उन्होंने 1620 में ट्रैंक्यूबार (तमिलनाडु) और 1676 में सेरामपुर (बंगाल) में बस्तियाँ स्थापित कीं। सेरामपुर भारत में उनका मुख्यालय था। वे भारत में खुद को मजबूत करने में असफल रहे और उन्होंने 1845 में भारत में अपनी सभी बस्तियाँ अंग्रेजों को बेच दीं।
- **फ्रांसीसी:** फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी का गठन 1664 में राजा लुई XIV के मंत्री कोलबर्ट द्वारा किया गया था। 1667 में फ्रेंक कैरन के नेतृत्व में एक फ्रांसीसी अभियान भारत आया। फ्रांस व्यापारियों के रूप में भारत आने वाला अंतिम यूरोपीय देश था। कैरन ने भारत में पहली फ्रांसीसी फैक्ट्री सूरत में स्थापित की। 1669 में, मार्कारा ने गोलकुंडा के सुल्तान से पट्टे पर हासिल करके मसुलिपट्टम में दूसरी फ्रांसीसी फैक्ट्री की स्थापना की।
- 1673 में, बीजापुर के शासक शेर खान लोदी से अनुदान के तहत म्यूटन द्वारा पांडिचेरी की स्थापना की गई थी। पांडिचेरी भारत में सबसे महत्वपूर्ण और समृद्ध फ्रांसीसी बस्ती बन गई।

- पांडिचेरी में फ्रेंक मार्टिन द्वारा सेंट लुइस के नाम से जाना जाने वाला किला बनवाया गया था। 1673 में, फ्रांसीसियों ने बंगाल के मुगल सूबेदार (गवर्नर) शाइस्ता खान से कलकत्ता के पास चंद्रनगर में एक नगर स्थापित करने की अनुमति प्राप्त की।
- फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत के विभिन्न हिस्सों में, विशेषकर माहे, कराईकल, बालासोर और कासिम बाजार जैसे तटीय क्षेत्रों में कारखाने स्थापित किए। ये फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी के कुछ महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र थे।
- 1742 में फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी के गवर्नर के रूप में जोसेफ फ्रैंक डुप्लेक्स की नियुक्ति से भारत में फ्रांसीसी शक्ति की दृष्टि को और भी मजबूती मिली। वह डुमास के बाद पांडिचेरी के फ्रांसीसी गवर्नर बने।
- **ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार:** 15वीं शताब्दी में, यूरोप में भूमि और समुद्री मार्गों के माध्यम से भौगोलिक खोजों का युग देखा गया। 1498 में पुर्तगाल के वास्को डी गामा ने यूरोप से भारत तक एक नया समुद्री मार्ग खोजा।
- उन खोजों के पीछे मुख्य उद्देश्य व्यापार के माध्यम से अधिकतम लाभ कमाना और राजनीतिक वर्चस्व स्थापित करना था। भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन बंगाल विजय के बाद प्रभावी हुआ। भारत में कंपनी का मुख्य हित क्षेत्रीय और वाणिज्यिक विस्तार था।
- **अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा राजनीतिक सत्ता की स्थापना:**
  - **प्लासी का युद्ध (1757):** 1756 में बंगाल के नवाब अलीवर्दी खान की मृत्यु हो गई और उसका पोता सिराजुद्दौला बंगाल की गद्दी पर बैठा। अंग्रेजों ने नए नवाब की कमजोरी और अलोकप्रियता का फायदा उठाकर सत्ता पर अधिकार कर लिया। इसलिए, सिराज–उद–दौला ने कलकत्ता की उनकी राजनीतिक बस्ती पर हमला करके उन्हें (ब्रिटिशों को) सबक सिखाने का फैसला किया।
  - नवाब ने कासिमबाजार में उनके कारखाने पर कब्जा कर लिया। 20 जून 1756 को फोर्ट विलियम ने आत्मसमर्पण कर दिया लेकिन रॉबर्ट क्लाइव ने कलकत्ता पर कब्ज़ा कर लिया। 9 फरवरी 1757 को, अलीनगर की संधि पर हस्ताक्षर किए गए, जिसके तहत सिराज–उद–दौला ने व्यावहारिक रूप से अपने सभी दावे स्वीकार कर लिए।
  - मार्च 1757 में अंग्रेजों ने फ्रांसीसी बस्ती चंद्रनगर पर कब्जा कर लिया। प्लासी का युद्ध ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और बंगाल के नवाब और उनके फ्रांसीसी सहयोगियों के बीच लडा गया था।
  - यह 23 जून 1757 को लड़ा गया था। रॉबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना ने सिराज–उद–दौला की सेना को हराया था। बंगाल के पतन के बाद, कंपनी ने बंगाल के खजाने से भारी मात्रा में धन प्राप्त किया और इसका उपयोग अपनी सैन्य शक्ति को मजबूत करने के लिए किया।
  - भारत पर ब्रिटिश राजनीतिक प्रभुत्व की शुरुआत का पता प्लासी के युद्ध से लगाया जा सकता है। यह सबसे निर्णायक लड़ाई थी जिसने भारत में अगली दो शताब्दियों तक ब्रिटिश शासन की शुरुआत को चिह्नित किया।
  - **बक्सर का युद्ध (1764):** 1757 में प्लासी के युद्ध के बाद कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा में मुक्त व्यापार का निर्विवाद अधिकार दिया गया। इसे बंगाल में 24 परगना का स्थान प्राप्त हुआ। हालाँकि, बंगाल के नवाब मीर जाफ़र (1757 से 1760) को कर्ज चुकाना पड़ा और उन्हें अपने दामाद मीर कासिम के पक्ष में पद छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। मीर कासिम ने बर्दवान, मिदनापुर और चटगाँव को सौंप दिया।
  - उसने अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थानांतरित कर दी। मीर कासिम ने जल्द ही विद्रोह कर दिया क्योंकि वह दस्तक (मुफ्त ड्यूटी पास) का दुरुपयोग करने के लिए अंग्रेजों से नाराज था। हालाँकि, अंग्रेजों से पराजित होने के बाद, वह अवध भाग गए, जहाँ उन्होंने शुजा–उद–दौला और शाह आलम के साथ एक संगठन बनाया।
  - यह युद्ध 22 अक्टूबर, 1764 बक्सर में लडा गया था, जो पटना से लगभग 130 किलोमीटर पश्चिम में गंगा नदी के तट पर स्थित था।
  - यह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए एक निर्णायक जीत थी। शुजाउद्दौला, शाह आलम और मीर कासिम को जनरल हेक्टर मुनरो ने हराया था। मीर जाफ़र को पुनः गद्दी पर बिठाया गया। मीर जाफ़र की मृत्यु के बाद, उनके बेटे निज़ाम–उद–दौला को सिंहासन पर बिठाया गया और 20 फरवरी 1765 को इलाहाबाद संधि पर हस्ताक्षर किए गए, जिसके द्वारा नवाब को अपनी अधिकांश सेना को भंग करना पड़ा और कंपनी द्वारा नामित एक उप सूबेदार के माध्यम से बंगाल का प्रशासन करना पड़ा। रॉबर्ट क्लाइव ने शुजा–उद–दौला और शाह आलम द्वितीय के साथ दो अलग–अलग संधियाँ कीं। बंगाल में दोहरी शासन व्यवस्था प्रारम्भ हुई।

कर्नाटक युद्ध	
युद्ध	**विवरण**
प्रथम कर्नाटक युद्ध (1744-48)	अंग्रेजों तथा फ्रांसीसियों के बीच लड़ा गया तथा इसका अंत आ–ला–शैपेल की संधि से हुआ था।
द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1748-54)	अंग्रेजों तथा फ्रांसीसियों के बीच लड़ा गया तथा इसका अंत पांडिचेरी की संधि से हुआ था।
तृतीय कर्नाटक युद्ध (1756-63)	अंग्रेजों तथा फ्रांसीसियों के बीच लड़ा गया तथा इसका अंत पेरिस की संधि से हुआ था।

आंग्ल–मैसूर युद्ध	
युद्ध	**विवरण**
प्रथम आंग्ल–मैसूर युद्ध (1734-66)	अंग्रेजों तथा हैदर अली के बीच लड़ा गया तथा इसका अंत मद्रास की संधि से हुआ था।
द्वितीय आंग्ल–मैसूर युद्ध (1780-84)	अंग्रेजों तथा हैदर अली के बीच लड़ा गया तथा इसका अंत मंगलौर की संधि से हुआ था।
तृतीय आंग्ल–मैसूर युद्ध (1790-92)	अंग्रेजों तथा टीपू सुल्तान के बीच लड़ा गया तथा इसका अंत श्रीरंगपटनम की संधि से हुआ था।
चतुर्थ आंग्ल–मैसूर युद्ध (1799)	अंग्रेजों ने मैसूर पर अधिकार कर लिया।

आंग्ल–मराठा युद्ध	
युद्ध	**विवरण**
प्रथम आंग्ल–मराठा युद्ध (1775-82)	अंग्रेजों तथा मराठाओं के बीच लड़ा गया तथा इसका अंत सालबाई की संधि से हुआ था।
द्वितीय आंग्ल–मराठा युद्ध (1803-05)	अंग्रेजों तथा मराठाओं के बीच लड़ा गया तथा इसका अंत देवगाँव, सुर्जी अर्जनगाँव, राजघाट तथा बेसीन की संधियों से हुआ था।
तृतीय आंग्ल–मराठा युद्ध (1817-18)	अंग्रेजों तथा मराठाओं के बीच लड़ा गया तथा इसका अंत मंदसौर की संधि से हुआ था।

क्या आप जानते हैं?

- ★ दीव पुर्तगाली उपनिवेश था।
- ★ भारत के समुद्री मार्ग की खोज की चुनौती वास्को-डी-गामा ने स्वीकार की।
- ★ क्रिस्टोफर कोलंबस स्पेन के थे।
- ★ स्वाली के युद्ध (1612) में अंग्रेजों ने पुर्तगालियों के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
- ★ फ्रेंच ईस्ट इंडिया कम्पनी ने पांडिचेरी बीजापुर के सुल्तान से प्राप्त किया था।
- ★ विजयनगर साम्राज्य का शासक कृष्णदेव राय पुर्तगाली गवर्नर अल्बुकर्क का मित्र था।
- ★ मध्यकालीन युग में हिंदवी स्वराज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी थे।
- ★ भोर नामक स्थान पर रायरेश्वर मंदिर स्थित है, जहाँ छत्रपति शिवाजी ने हिंदवी स्वराज के निर्माण की शपथ ग्रहण की थी।
- ★ मराठा काल में ग्राम प्रशासन की देखभाल करने वाला अधिकारी पाटिल होता था।
- ★ गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी ने भारत में रेल की शुरुआत की।
- ★ 1772 में बंगाल के गवर्नर के रूप में वारेन हेस्टिंग्स को नियुक्त किया गया था।
- ★ भारत में सहायक गठबंधन प्रणाली का निर्माण लार्ड क्लाइव ने किया था।
- ★ वर्ष 1856 ई.भारतीय सैनिकों के लिए समुद्र यात्रा अनिवार्य कर दी गयी थी।
- ★ सालबाई की संधि पर हस्ताक्षर करने से प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध का अंत हुआ। इस समय लॉर्ड वारेन हेस्टिंग्स बंगाल के गवर्नर जनरल थे।
- ★ सितंबर 1946 में, बंगाल प्रांतीय किसान सभा ने बड़े पैमाने पर संघर्ष के माध्यम से, बाढ़ आयोग की सिफ़ारिशों को लागू करने का आह्वान किया, जिसमें बरगार्डो, बँटाईदारों, जिन्हें बागचासी या अध्यार के नाम से भी जाना जाता है, को आधे के बजाय दो–तिहाई हिस्सा दिया जाना था। शेयर करना। यह कथन "तेभागा आंदोलन" से सम्बंधित है।
- ★ **वहाबी आंदोलन–** वहाबी आंदोलन 1820 की शुरुआत में भारत के रायबरेली के सैयद अहमद द्वारा शुरू किया गया एक सामाजिक–धार्मिक आंदोलन था। वहाबी आंदोलन प्रसिद्ध सुन्नी इस्लामी पुनरुत्थानवादी आंदोलनों में से एक बन गया, जिसका उद्देश्य इस्लाम की रक्षा करके उसकी मूल भावना को बहाल करना था। पंजाब में सिखों का और बंगाल में अंग्रेजों का प्रभाव। भारत में वहाबी आंदोलन तब हुआ जब लॉर्ड एल्गिन प्रथम भारत का वायसराय था।
- ★ 1809 में, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रतिनिधित्व करने वाले चार्ल्स टी. मेटकाफ और महाराजा रणजीत सिंह के बीच अमृतसर की संधि संपन्न हुई।
- ★ बुरहान–उल–मुल्क सआदत खान को 1722 में अवध के सूबेदार के रूप में नियुक्त किया गया था और उन्होंने एक ऐसे राज्य की स्थापना की जो मुगल साम्राज्य के टूटने के बाद उभरने वाले सबसे महत्वपूर्ण राज्यों में से एक था।
- ★ ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना के समय अकबर भारत का शासक था।

15. भारत पर ब्रिटिशों का प्रशासनिक तथा आर्थिक प्रभाव

- पूर्व–औपनिवेशिक काल में, भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था थी। उस समय कृषि लोगों का प्राथमिक व्यवसाय था और यहां तक कि कपड़ा, चीनी, तेल आदि जैसे उद्योग भी इस पर निर्भर थे।
- भारत में ब्रिटिश सरकार ने भारतीय कृषि और भूमि राजस्व समर्थक नीति नहीं अपनाई। ब्रिटिश सरकार ने भारत में तीन प्रमुख भू–राजस्व और किरायेदारी प्रणालियाँ शुरू कीं, अर्थात् स्थायी बंदोबस्त, महलवाड़ी प्रणाली और रैयतवारी प्रणाली। किसानों के आ्थक शोषण के कारण भविष्य में विद्रोह हुआ।
- **अंग्रेजों के अधीन भूमि राजस्व नीति:**
  - ❖ **स्थायी बंदोबस्त:** जब रॉबर्ट क्लाइव ने 1765 में बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी प्राप्त की, तो वहां (भू–राजस्व का) वार्षिक व्यवस्था होती थी। वारेन हेस्टिंग्स ने इसे वार्षिक से पंचवार्षिक (पंच–वार्षिक) और फिर वार्षिकमें बदल दिया।
  - ❖ कॉर्नवालिस के समय में, 1793 में दस वर्षीय (दशवार्षिक) बंदोबस्त की शुरुआत की गई थी और इसे स्थायी बंदोबस्त के रूप में जाना जाता था। बंगाल, बिहार और उड़ीसा, उत्तर प्रदेश के वाराणसी डिवीजन और उत्तरी कर्नाटक में स्थायी बस्तियाँ बनाई गईं, जो ब्रिटिश भारत के कुल क्षेत्रफल का लगभग 19 प्रतिशत हिस्सा कवर करती थीं। इसे जमींदारी, जागीरदारी, मालगुज़ारी और बिस्वेदारी जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता था।
  - ❖ **स्थायी बंदोबस्त की मुख्य विशेषताएँ:**
    - ➢ जमींदारों को तब तक भूमि के मालिकों के रूप में मान्यता दी जाती थी जब तक वे ईस्ट इंडिया कंपनी को नियमित रूप से राजस्व का भुगतान करते थे।
    - ➢ जमींदार किसानों से राजस्व वसूली के लिए सरकार के एजेंट के रूप में कार्य करते थे।
    - ➢ जमींदारों को कंपनी को जो राजस्व देना होता था, वह निश्चित था और किसी भी परिस्थिति में बढ़ाया नहीं जाता था।

- वे कृषकों से प्राप्त राजस्व का 10/11 भाग सरकार को देते थे।
- जमींदार रैयतों को पट्टा (लिखित समझौता) देते थे। रैयत किरायेदार बन गए क्योंकि उन्हें खेत जोतने वाला माना जाता था।
- जमींदारों से सभी न्यायिक शक्तियाँ छीन ली गईं।

❖ **रैयतवाड़ी बंदोबस्त:** रैयतवारी बंदोबस्त की शुरुआत 1820 में थॉमस मुनरो और कैप्टन रीड द्वारा की गई थी। रैयतवारी प्रणाली की शुरुआत के प्रमुख क्षेत्रों में मद्रास, बॉम्बे, असम के कुछ हिस्से और ब्रिटिश भारत के कूर्ग प्रांत शामिल थे।

❖ रैयतवाड़ी बंदोबस्त द्वारा स्वामित्व के अधिकार किसानों को सौंप दिये गये। ब्रिटिश सरकार किसानों से सीधे कर वसूल करती थी। प्रारंभ में, अनुमानित उपज का आधा हिस्सा लगान के रूप में तय किया गया था। थॉमस मुनरो द्वारा इस मूल्यांकन को घटाकर उत्पादन का एक–तिहाई कर दिया गया।

❖ राजस्व मिट्टी और फसल की प्रकृति के आधार पर लगाया जाता था। यह सुनिश्चित किया गया कि किराए को समय–समय पर संशोधित किया जाएगा, आम तौर पर 20 से 30 वर्षों के बाद। कृषकों की स्थिति अधिक सुरक्षित हो गई। इस व्यवस्था में सरकार और रैयतों के बीच समझौता किया जाता था। दरअसल, सरकार ने बाद में दावा किया कि भू–राजस्व लगान था, कर नहीं।

❖ **रैयतवाड़ी बंदोबस्त की मुख्य विशेषताएँ:**

- राजस्व बन्दोबस्त सीधे रैयतों से किया जाता था।
- खेत की माप और उपज का अनुमान लगाया गया।
- सरकार ने मांग को उपज का 45% से 55% तय किया।

❖ **महलवाड़ी बंदोबस्त:** महलवाड़ी प्रणाली, होल्ट मैकेंज़ी के दिमाग की उपज, 1822 में गंगा घाटी, उत्तर–पश्चिम प्रांत, मध्य भारत और पंजाब के कुछ हिस्सों में शुरू की गई जमींदारी बंदोबस्त का एक संशोधित संस्करण था।

❖ लॉर्ड विलियम बैंटिक को 1833 में रॉबर्ट मार्टिन्स बर्ड के मार्गदर्शन से महलवाड़ी व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन का सुझाव देना था। राजस्व का आकलन महल या गाँव की उपज के आधार पर किया जाना था।

❖ महल के सभी मालिक राजस्व के भुगतान के लिए अलग–अलग और संयुक्त रूप से जिम्मेदार थे। प्रारंभ में राज्य का हिस्सा सकल उपज का दो-तिहाई तय किया गया था। इसलिए, बैंटिक को घटाकर पचास प्रतिशत कर दिया गया।

❖ पूरे गाँव को अपने मुखिया या लम्बरदार के माध्यम से राजस्व का भुगतान करना पड़ता था। इस प्रणाली को सबसे पहले आगरा और अविधा में अपनाया गया और बाद में संयुक्त प्रांत के अन्य हिस्सों में भी विस्तारित किया गया। इस भारी कर का बोझ अंततः कृषकों पर पड़ा।

❖ **महलवाड़ी बंदोबस्त की मुख्य विशेषताएँ:**

- लम्बरदार सरकार और ग्रामीणों के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करता था।
- यह गांव के अनुसार आकलन होता था। एक व्यक्ति कई गाँवों पर अधिकार कर सकता था।
- ग्राम समुदाय गाँव की सामान्य भूमि का स्वामी होता था।
- गाँव की भूमि ग्राम समुदाय की थी।

● **अन्य महत्वपूर्ण बिंदु:**

❖ 1854 में, पहली कपास मिल बंबई में स्थापित की गई थी।

❖ अहमदाबाद में पहली मिल 1861 में शुरू की गई।

❖ असम टी कंपनी की स्थापना 1839 में हुई थी।

❖ भारत में संगठित रूप में आधुनिक औद्योगिक क्षेत्र की शुरुआत 1854 में बंबई में सूती कपड़ा उद्योग की स्थापना के साथ हुई थी।

❖ 1855 में, कलकत्ता के पास रिशरा में हुगली घाटी में जूट उद्योग की शुरुआत हुई।

❖ पहली पेपर मिल 1870 में कलकत्ता के पास बालीगंज में शुरू की गई थी।

❖ स्टील का निर्माण पहली बार 1874 में कुल्टी में आधुनिक तरीकों से किया गया था।

❖ टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी की स्थापना 1907 में जमशेदपुर में की गई थी। इसने 1911 में पिग आयरन और 1912 में स्टील सिल्लियों का उत्पादन शुरू किया।

16. ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध जन-आंदोलन

जनजाति	कारण	वर्ष	नेता
चुआर	अतिरिक्त राजस्व की मांग, बंगाल का अकाल	1766–72	राजा जगन्नाथ
भील	कृषि में कठिनाई	1817	सेवाराम
होस	सिंहभूम पर अंग्रेजों का अधिकार	1820	––
रामोसी	ब्रिटिश शासन	1822	चित्तूर सिंह, प्रताप सिंह, दत्ताराय पाटकर
कोली	वनोन्मूलन	1824	–
अहोम	ब्रिटिश आधिपत्य	1828–33	गोमाधर कुंवर
खासी	ब्रिटिश आधिपत्य	1829–32	तिरूथ सिंह
कोल	बाहरी लोगों को भूमि हस्तांतरण	1831–32	बुद्धू भगत
संथाल	ब्रिटिश शासन	1855–56	सिद्धू और कान्हू
नायकदा	धर्म राज के लिए जोरिया भगत के चारे और लकड़ी पर प्रतिबंध के खिलाफ	1858	रूप सिंह

जनजाति	कारण	वर्ष	नेता
भुइयां व जुआंग	सिंहासन पर ब्रिटिश आश्रित की स्थापना	1867–68	रत्ना नायक तथा धरनी नायक
कच्छ नागा	ब्रिटिश हस्तक्षेप	1882	संभूदेन
मुंडा (उलगुलान)	भूमि प्रणाली, मिशनरी गतिविधि और मजबूर श्रम	1899	बिरसा मुंडा
भील	एक संयम और शुद्धि आंदोलन	1913	गोविंद गुरु
उरांव (ताना भगत)	धार्मिक कारण	1914	जात्रा भगत और अन्य भगत
चेंचु	वनों पर अंग्रेजों का नियंत्रण	1921–22	––
कोयाध्रम्पा	ब्रिटिश शासन	1922–24	अल्लूरी सीताराम राजू
नागा	एक सुधारवादी आंदोलन जिसे बाद में ब्रिटिश शासन की अधिकता के खिलाफ निर्देशित किया गया	1932	जादुनांग (1905–31) और रानी गाइदिन्ल्यू
चुआर	अतिरिक्त राजस्व की मांग, बंगाल का अकाल	1766–72	राजा जगन्नाथ
भील	कृषि में कठिनाई	1817	सेवाराम
हो	सिंहभूम पर अंग्रेजों का अधिकार	1820	––
रामोसी	ब्रिटिश शासन	1822	चित्तूर सिंह, प्रताप सिंह, दत्ताराय पाटकर
कोली	वनोन्मूलन	1824	–
अहोम	ब्रिटिश आधिपत्य	1828–33	गोमाधर कुंवर
खासी	ब्रिटिश आधिपत्य	1829–32	तिरूथ सिंह
कोल	बाहरी लोगों को भूमि हस्तांतरण	1831–32	बुद्धू भगत
संथाल	ब्रिटिश शासन	1855–56	सिद्धू और कान्हू
नायकदा	धर्म राज के लिए जोरिया भगत के चारे और लकड़ी पर प्रतिबंध के खिलाफ	1858	रूप सिंह

जनजाति	कारण	वर्ष	नेता
भुइयां व जुआंग	सिंहासन पर ब्रिटिश आश्रित की स्थापना	1867–68	रत्ना नायक तथा धरनी नायक
कच्छ नागा	ब्रिटिश हस्तक्षेप	1882	संभूदेन
मुंडा (उलगुलान)	भूमि प्रणाली, मिशनरी गतिविधि और मजबूर श्रम	1899	बिरसा मुंडा
भील	एक संयम और शुद्धि आंदोलन	1913	गोविंद गुरु
उरांव (ताना भगत)	धार्मिक कारण	1914	जात्रा भगत और अन्य भगत
चेंचु	वनों पर अंग्रेजों का नियंत्रण	1921–22	––
कोया/रम्पा	ब्रिटिश शासन	1922–24	अल्लूरी सीताराम राजू
नागा	एक सुधारवादी आंदोलन जिसे बाद में ब्रिटिश शासन की अधिकता के खिलाफ निर्देशित किया गया	1932	जादुनांग (1905–31) और रानी गाइदिन्ल्यू

- **1857 का विद्रोह:** 1857 का विद्रोह 10 मई को शुरू हुआ जब मेरठ में कंपनी के भारतीय सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। अंग्रेजों द्वारा सिपाही विद्रोह कहा गयाए अब इसे ब्रिटिश शासकों के खिलाफ प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में मान्यता प्राप्त है। भारतीय सैनिकों ने अपने यूरोपीय अधिकारियों को मार डाला और दिल्ली की ओर मार्च किया।
- उन्होंने लाल किले में प्रवेश किया और वृद्ध और शक्तिहीन मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर को भारत का सम्राट घोषित किया। यह विद्रोह अंग्रेजों की आक्रामक साम्राज्यवादी नीतियों के विरुद्ध एक प्रमुख उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन था। वस्तुतः यह ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक संघर्ष था।
- बहादुर शाह जफर ने देश के विभिन्न प्रमुखों और शासकों को आगे आकर अंग्रेजों से लड़ने के लिए भारतीय राज्यों का एक संघ संगठित करने के लिए पत्र लिखे। बहादुर शाह द्वारा उठाए गए इस एक कदम के बड़े निहितार्थ थे। विद्रोह को आशीर्वाद देने के उनके निर्णय ने पूरी स्थिति को नाटकीय रूप से बदल दिया। लोगों को एक वैकल्पिक संभावना दिख रही थी, वे प्रेरित और उत्साहित महसूस कर रहे थे। इससे उन्हें कार्य करने का साहस, आशा और आत्मविश्वास मिला।
- क्रोध और असंतोष के इस भीषण विस्फोट ने भारत के बड़े हिस्से में औपनिवेशिक शासन की नींव हिला दी। अब हम भारतीय जनता के असंतोष के उन कारणों का अध्ययन करेंगे जिनके कारण वे ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह करने लगे।
- **विद्रोह के कारण:**
  - **राजनीतिक कारण–** राजनीतिक कारणों में लॉर्ड वैलेजली सहायक संधि, लॉर्ड डलहौजी की व्यपगत की नीति, झांसी के उत्तराधिकार

पर रोक, नाना साहब की पेंशन बंद करना, सतारा और नागपुर पर ब्रिटिश का कब्जा, जमींदारो तथा किसानों से उनकी जमीन छिनना आदि 1857 की क्रांति के प्रमुख राजनीतिक कारण थे।

- **आर्थिक कारण–** भारतीय कारीगरों से उनकी रोजी–रोटी छिनना, अंग्रेज़ो की व्यापारिक नीति और ब्रिटिश साम्राज्य की स्थायी बंदोबस्त की नीति, अत्यधिक कर लगाना आदि 1857 की क्रांति के प्रमुख आर्थिक कारण थे।
- **सामाजिक तथा धार्मिक कारण–** 1856 का धार्मिक निर्योग्यता अधिनियम, सती प्रथा को समाप्त करना, अंग्रेजी शिक्षा और ईसाई प्रचारकों द्वारा अन्य धर्मो की निंदा करना आदि जैसे 1857 की क्रांति के प्रमुख सामाजिक तथा धार्मिक कारण शामिल थे।
- **सैन्य कारण–** भारतीय सैनिकों को समुद्र पार लड़ने के लिए भेजना, भारतीय सैनिकों के साथ अभद्र व्यवहार, चर्बी वाले कारतूस का जबरन उपयोग करना और वेतन, पदोन्नति व तैनाती में भारतीयों के साथ भेदभाव आदि 1857 की क्रांति प्रमुख सैनिक कारण थे।

- **1857 के विद्रोह के दौरान नेता और ब्रिटिश कमांडर:**
  - **दिल्ली**
    - नेता: बहादुर शाह द्वितीय
    - ब्रिटिश अधिकारी: जॉन निकोलसन
  - **लखनऊ**
    - नेता: बेगम हज़रत महल
    - ब्रिटिश अधिकारी: हेनरी लॉरेंस
  - **कानपुर**
    - नेता: नाना साहब
    - ब्रिटिश अधिकारी: सर कॉलिन कैम्पबेल
  - **झाँसी और ग्वालियर**
    - नेता: लक्ष्मी बाई और तांत्या टोपे
    - ब्रिटिश अधिकारी: जनरल ह्यू रोज़
  - **बरेली**
    - नेता: खान बहादुर खान
    - ब्रिटिश अधिकारी: सर कॉलिन कैम्पबेल
  - **बिहार**
    - नेता: कुँवर सिंह
    - ब्रिटिश अधिकारी: विलियम टेलर
- 1857 का महान विद्रोह आधुनिक भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था। विद्रोह ने भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के अंत को चिह्नित किया।
- भारत अब ब्रिटिश क्राउन के प्रत्यक्ष शासन के अधीन आ गया। इसकी घोषणा लॉर्ड कैनिंग ने 1 नवंबर 1858 को रानी के नाम पर जारी एक उद्घोषणा में इलाहाबाद के एक दरबार में की थी। भारतीय प्रशासन रानी विक्टोरिया द्वारा अपने हाथ में ले लिया गया, जिसका अर्थ वास्तव में ब्रिटिश संसद था। भारत कार्यालय देश के शासन और प्रशासन को संभालने के लिए बनाया गया था।

क्या आप जानते हैं?

- ★ भारत का राष्ट्रीय गीत (वंदे मातरम्) "आनंद मठ" पुस्तक से लिया गया है जो बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा लिखी गई थी। इस पुस्तक में "संन्यासी विद्रोह" का उल्लेख है।
- ★ व्यपगत के सिद्धांत की शुरुआत और सतारा का विलय लॉर्ड डलहौजी के समय में हुआ था।
- ★ ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना के समय अकबर भारत का शासक था।
- ★ 1857 के दौरान लिखी गई "माझा प्रवास" के लेखक विष्णुभट्ट गोडसे थे।

17. सामाजिक एवं जातिगत सुधार

- **राजा राममोहन राय:** राममोहन राय (1772–1833) पश्चिमी विचारों से प्रभावित होकर सुधारों की शुरुआत करने वाले शुरुआती सुधारकों में से एक थे। राजा की उपाधि उन्हें मुगल सम्राट अकबर–द्वितीय द्वारा दी गई थी। उन्होंने हिंदू धर्म को शुद्ध करने और एकेश्वरवाद का प्रचार करने के लिए 1828 में ब्रह्म समाज (प्रारंभ में आत्मीय सभा) की स्थापना की।
- **दयानंद सरस्वती:** वह आर्य समाज के संस्थापक थे। उनका मानना था कि वेद सच्चे ज्ञान का स्रोत हैं। उन्होंने "वेदों की ओर वापसी" की वकालत की।
- उन्होंने जातिवाद, मूर्ति पूजा और बाल विवाह पर प्रहार किया। उन्होंने अंतरजातीय विवाह और विधवा पुनर्विवाह पर प्रहार किया।
- वह 'स्वदेशी' और 'भारत भारतीयों के लिए' जैसे विचारों को सामने रखने वाले पहले व्यक्ति थे और इसलिए उन्हें 'हिंदू धर्म का मार्टिन लूथर' कहा जाता था।
- उन्होंने तीन पुस्तकें लिखीं– सत्यार्थ प्रकाश, वेद–भाष्य भूमिका और वेद भाष्य। उनकी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश का व्यापक प्रसार हुआ।
- उन्होंने 1875 में बंबई में आर्य समाज की स्थापना की। इस समाज ने मूर्तिपूजा, बहुदेववाद, कर्मकांड, पुरोहितवाद, पशु बलि, बाल विवाह और जाति व्यवस्था के खिलाफ प्रयास किया।
- समाज ने कई दयानंद एंग्लो–वैदिक (डीएवी) स्कूल और कॉलेज शुरू किए।
- **महर्षि देबेंद्रनाथ टैगोर:** राममोहन रॉय (1833) की मृत्यु के बाद, कवि रवींद्रनाथ टैगोर के पिता महर्षि देबेंद्रनाथ टैगोर (1817–1905) ने इस काम को आगे बढ़ाया।
- **केशव चंद्र सेन:** केशव चंद्र सेन, (1838–84) 1857 में आंदोलन में शामिल हुए। लेकिन 1866 में ब्रह्म समाज में विभाजन हो गया।
- केशव ने समाज छोड़ दिया और एक नये संगठन की स्थापना की। इसके बाद देबेंद्रनाथ के संगठन को आदि ब्रह्म समाज के नाम से जाना जाने लगा।
- जब केशव ने अपनी चौदह वर्षीय बेटी की शादी एक भारतीय राजकुमार से कर दी, तो समाज द्वारा बाल विवाह की निंदा के विपरीत, बाल विवाह के विरोधियों ने भारत के ब्रह्म समाज को छोड़ दिया और साधारण समाज की शुरुआत की।
- **ईश्वर चंद्र विद्यासागर:** बंगाल में एक और उत्कृष्ट सुधारक ईश्वर चंद्र विद्यासागर (1820–1891) थे। वह शास्त्र ज्ञान पर पुरोहितों के एकाधिकार को तोड़ने के लिए कृतसंकल्प थे और इसके लिए उन्होंने

गैर–ब्राह्मणों के लिए संस्कृत महाविद्यालय खोल दिया। विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह के समर्थन में एक आंदोलन चलाया जिसके परिणामस्वरूप विधवा पुनर्विवाह का कानून बना। वह बाल विवाह और बहुविवाह के खिलाफ भी एक योद्धा थे। विद्यासागर के नेतृत्व में चलाए गए आंदोलन के परिणामस्वरूप 1856 का विधवा पुनर्विवाह सुधार अधिनियम आया। इस अधिनियम का उद्देश्य बहुत सी बाल विधवाओं को सुधारना और उन्हें स्थायी विवाह से बचाना था।

- **एम.जी. रानाडे और बी.एम. मालाबारी:** बॉम्बे प्रेसीडेंसी में एम.जी. रानाडे और बी.एम. मालाबारी ने महिलाओं के उत्थान के लिए आंदोलन चलाया। 1869 में, रानाडे विधवा पुनर्विवाह संघ में शामिल हुए और विधवा पुनर्विवाह और महिला शिक्षा को प्रोत्साहित किया और बाल विवाह का विरोध किया।
- 1887 में, उन्होंने राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन की शुरुआत की, जो सामाजिक सुधार के लिए एक प्रमुख संस्था बन गई। 1884 में बी.एम. पत्रकार मालाबारी ने बाल विवाह उन्मूलन के लिए एक आंदोलन शुरू किया। उन्होंने इस विषय पर पर्चे प्रकाशित किये और सरकार से कार्रवाई करने की अपील की।
- **गोपाल कृष्ण गोखले:** 1905 में, गोपाल कृष्ण गोखले ने सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी (भारत सेवक संघ) की शुरुआत की, जिसने प्राथमिक शिक्षा, महिला शिक्षा और दलित वर्गों के उत्थान जैसे सामाजिक सुधार के उपाय किए। महिला शिक्षा के प्रसार से स्वतंत्रता में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई
- **डेरोजियो और यंग बंगाल:** 1820 के दशक में हिंदू कॉलेज, कलकत्ता के शिक्षक हेनरी लुईस विवियन डेरोजियो ने कट्टरपंथी विचारों को बढ़ावा दिया और अपने विद्यार्थियों को सभी अधिकारियों पर सवाल उठाने के लिए प्रोत्साहित किया। यंग बंगाल आंदोलन के रूप में संदर्भित, उनके छात्रों ने परंपरा और रीति–रिवाज पर हमला किया, महिलाओं के लिए शिक्षा की मांग की और विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए अभियान चलाया।
- **रामकृष्ण परमहंस:** रामकृष्ण, कोलकाता के पास दक्षिणेश्वर के एक साधारण पुजारी, ने भजन गाने जैसी परमानंद प्रथाओं के माध्यम से भगवान के साथ आध्यात्मिक मिलन पर जोर दिया।
- **रामकृष्ण मिशन और स्वामी विवेकानन्द:** स्वामी विवेकानन्द के गुरु रामकृष्ण परमहंस के नाम पर, रामकृष्ण मिशन ने सामाजिक सेवा और निःस्वार्थ कार्य के माध्यम से मुक्ति के आदर्श पर जोर दिया। स्वामी विवेकानन्द (1863–1902), जिनका मूल नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था, ने श्री रामकृष्ण की सरल शिक्षाओं को संयोजित किया। उन्होंने 1893 में न्यूयॉर्क में शिकागो की धर्म संसद में भाग लिया।
- **पेरियार ई.वी.आर.:** वे तमिलनाडु के महानतम समाज सुधारकों में से एक थे। उन्होंने महिला शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह और अंतरजातीय विवाह की वकालत की और बाल विवाह का विरोध किया।
- **ज्योतिबाराव फुले:** उन्होंने 1852 में पूना में "अछूतों" के लिए पहला स्कूल खोला। उन्होंने गैर–ब्राह्मण जनता को आत्म–सम्मान के लिए प्रेरित करने के लिए 1873 में सत्यशोधक समाज (सत्य–शोधक समाज) की स्थापना की। 1873 में फुले ने गुलामगिरी नामक पुस्तक लिखी, जिसका अर्थ गुलामी था। प्रसिद्ध पुस्तक "जूठन" के लेखक ज्योतिराव फुले हैं।

जाति आंदोलन और संगठन

आंदोलन	स्थान	नेता	घटना क्रम
सत्यशोधक समाज	महाराष्ट्र	ज्योतिबा फुले	ब्राह्मणवादी वर्चस्व के खिलाफ लड़ना और समाज (1873) ने निम्न जाति के लोगों को शिक्षित करके उन्हें मुक्त कराया। अछूतों के लिए एक स्कूल स्थापित किया। उनकी पुस्तकें गुलामगिरी और सार्वजनिक सत्यधर्म पुस्तक ने समाज के पारंपरिक रीति–रिवाजों और मान्यताओं पर सवाल उठाए।
बहुजन समाज (1910)	सतारा, महाराष्ट्र	मुकुंदराव पाटिल	उच्च जाति के ब्राह्मण व्यापारियों और जमींदारों द्वारा निम्न जातियों के शोषण का विरोध किया।
जस्टिस पार्टी आंदोलन (1915–16)	चेन्नई, तमिलनाडु	टी.एम. नायर, पी. त्यागराज और सी.एन. मुदलियार	सरकारी सेवा, शिक्षा और राजनीतिक क्षेत्र में ब्राह्मियों के वर्चस्व का विरोध। समाचार पत्र विचार और राय व्यक्त करने का मुख्य माध्यम था।
दलित वर्ग कल्याण संस्थान	बंबई	बी.आर. अम्बेडकर	जातियों के बीच सामाजिक समानता का प्रचार करना।
बहिष्कृत हितकारिणी सभा	मद्रास	ई.वी. रामस्वामी	दलित वर्गों के लिए संवैधानिक सुरक्षा गार्ड की मांग की गई, ब्राह्मण विरोधी ने पुजारी के बिना जबरन मंदिर में प्रवेश की शादियों की वकालत की।
हरिजन सेवक संघ (1932) द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (1949)	पुणे मद्रास	महात्मा गांधी सी.एन. अन्नादुरई	अस्पृश्यता और अस्पृश्यों के प्रति सामाजिक भेदभाव को दूर करने के लिए।

क्या आप जानते हैं?

- पंडिता रमाबाई संस्कृत के एक महान विद्वान ने महसूस किया कि हिंदू धर्म महिलाओं के प्रति दमनकारी था।
- महात्मा गाँधी ने कहा था कि "अंग्रेजी शिक्षा गुलामी की शिक्षा है"।
- 1854 का वुड्स डिस्पैच शैक्षिक सुधार को संदर्भित करता है।
- मुहम्मदन लिटरेरी सोसाइटी की स्थापना 1863 में नवाब अब्दुल लतीफ ने कलकत्ता में की थी।
- वेद समाज की स्थापना 1864 में केशव चंद्र सेन और चेम्बेती श्रीधरलु नायडू ने मद्रास में की थी। इसने जाति भेद को त्यागने और विधवा पुनर्विवाह को बढ़ावा देने की वकालत की। इसने रूढ़िवादी हिंदू धर्म के अंधविश्वासों और अनुष्ठानों की निंदा की और एक सर्वोच्च ईश्वर में विश्वास का प्रचार किया। चेम्बेती श्रीधरलु नायडू वेद समाज के सबसे लोकप्रिय नेता थे।
- रहनुमाई मजदायसन सभा की स्थापना नौरोजी फुरदोनजी, दादाभाई नोरोजी, एसएस बनर्जी और अन्य ने की थी।
- सिखों के बीच धार्मिक सुधार 19वीं सदी के अंत में शुरू हुआ जब 1892 में अमृतसर में खालसा कॉलेज की शुरुआत हुई।
- लॉर्ड विलियम बैंटिक भारत के गवर्नर–जनरल थे, जिन्होंने दिसंबर, 1829 में बंगाल रेगुलेशन (रेगुलेशन XVII) पारित किया था। इसने सती प्रथा को अवैध और दंडनीय अपराध बना दिया।
- भारतीय ईसाई विवाह अधिनियम 1872 में पारित किया गया था। इस अधिनियम के अनुसार दूल्हे की आयु कम से कम 21 वर्ष और दुल्हन की कम से कम 18 वर्ष होनी चाहिए।
- बाल विवाह निरोधक अधिनियम या शारदा अधिनियम 28 सितंबर 1929 को भारतीय शाही विधान परिषद् द्वारा पारित किया गया था। इसमें 14 वर्ष से कम उम्र की लड़कियों और 18 वर्ष से कम उम्र के लड़कों के विवाह पर रोक लगा दी गई।
- भारत के तत्कालीन गवर्नर–जनरल लॉर्ड विलियम बेंटिक के प्रयासों के कारण, दिसंबर, 1829 में बंगाल रेगुलेशन (रेगुलेशन XVII) पारित किया गया। इसने सती प्रथा को अवैध और दंडनीय अपराध बना दिया।
- प्रार्थना समाज की स्थापना तब हुई जब केशव चंद्र सेन ने महाराष्ट्र का दौरा किया। इसका उद्देश्य लोगों को एक ईश्वर में विश्वास करना और केवल एक ईश्वर की पूजा करना था।
- 1856 का वर्ष भारतीय समाज के इतिहास में महत्वपूर्ण था क्योंकि उस वर्ष हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित किया गया था।
- स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि "धर्म मनुष्य में निहित देवत्व का विकास है, धर्म न तो पुस्तकों में है और न ही धार्मिक सिद्धांतों में है।"
- मिर्ज़ा गुलाम अहमद ने 1889 में अहमदिया आंदोलन शुरू किया। यह आंदोलन चरित्र में सुधारवादी था। यह इस्लाम में उदारवाद लाने की कोशिश करता है।
- 1878 में, वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम को स्थानीय प्रेस पर "बेहतर नियंत्रण" और देशद्रोही लेखन को प्रभावी ढंग से दंडित करने और दबाने के लिए अधिनियमित किया गया था।
- विरेशलिंगम पंतुलु ने मद्रास प्रेसीडेंसी में विधवा पुनर्विवाह के समर्थन में एक संगठन बनाया।
- जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस ने महिलाओं की मांगों और अधिक स्वतंत्रता का समर्थन किया।
- पं. रमाबाई ने उच्च वर्गों में महिलाओं की स्थिति में सुधार के प्रयास किये।
- ताराबाई शिंदे ने "वुमन–मैन कम्पेरिजन" पुस्तक प्रकाशित करके महिलाओं के संबंध में रूढ़िवादी मान्यताओं की आलोचना की।

18. भारत में राष्ट्रीय आंदोलन तथा स्वतंत्रता के बाद भारत

- **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1870 – 1885):** 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन का उद्देश्य एक अखिल भारतीय संगठन की स्थापना करना था। यह तीन प्रेसीडेंसी: बॉम्बे, मद्रास और कलकत्ता में राजनीतिक रूप से सक्रिय शिक्षित भारतीयों के समूहों के प्रयासों की परिणति थी। ए.ओ. ह्यूम ने कांग्रेस के गठन को सुविधाजनक बनाने के लिए अपनी सेवाएँ दीं।
- **बंगाल का विभाजन (1905):** विभाजन का विचार लॉर्ड कर्जन द्वारा हिंदू–मुस्लिम विभाजन पैदा करके बंगाल में ब्रिटिश शासन के खिलाफ राजनीतिक गतिविधियों को दबाने के लिए तैयार किया गया था।
- यह खुले तौर पर कहा गया था कि विभाजन का उद्देश्य बंगाली प्रभाव को कम करना और राष्ट्रवादी आंदोलन को कमजोर करना था। बंगाल को दो प्रशासनिक इकाइयों के अधीन रखकर कर्ज़न ने विभाजित बंगाल में बंगाली भाषी लोगों को भाषाई अल्पसंख्यक बना दिया।
- जिस दिन (16 अक्टूबर 1905) बंगाल का आधिकारिक तौर पर विभाजन हुआ, उसको शोक दिवस के रूप में घोषित किया गया। हजारों लोगों ने गंगा में स्नान किया और बंदे मातरम् गाते हुए कलकत्ता की सड़कों पर मार्च किया।
- **बंगाल में बहिष्कार और स्वदेशी आंदोलन (1905–1911):** बहिष्कार और स्वदेशी हमेशा एक–दूसरे से जुड़े हुए थे और भारत को आत्मनिर्भर बनाने की व्यापक योजना का हिस्सा थे। बंगाल में स्वदेशी आंदोलन के दौरान चार प्रमुख प्रवृत्तियाँ देखी जा सकती हैं।
  - मध्यम प्रवृत्ति
  - रचनात्मक स्वदेशी
  - उग्रवादी राष्ट्रवाद
  - क्रांतिकारी आतंकवाद
- **मुस्लिम लीग का गठन:** दिसंबर, 1906 में, ढाका में मुहम्मदन शैक्षिक सम्मेलन के दौरान, नवाब सलीम उल्लाह खान ने मुस्लिम हितों की देखभाल के लिए एक केंद्रीय मुहम्मदन एसोसिएशन की स्थापना का विचार उठाया। तदनुसार, 30 दिसम्बर, 1906 को अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। एक अन्य प्रमुख व्यक्ति, आगा खान को इसका अध्यक्ष चुना गया।
- लीग का मुख्य उद्देश्य भारत में मुसलमानों के अधिकारों की रक्षा करना और उन्हें आगे बढ़ाना और सरकार के सामने उनकी जरूरतों का प्रतिनिधित्व करना था। मुस्लिम लीग का गठन 'फूट डालो और राज करो' की ब्रिटिश मास्टर रणनीति का पहला फल माना जाता है। मोहम्मद अली जिन्ना बाद में लीग में शामिल हो गए।

- **प्रथम विश्व युद्ध के दौरान राष्ट्रीय आंदोलन:** प्रथम विश्व युद्ध 1914 में शुरू हुआ और औपनिवेशिक एकाधिकार प्राप्त करने के लिए यूरोप के देशों के बीच लड़ा गया।
- युद्ध के समय ब्रिटिश सरकार ने भारतीय नेताओं से संकट के समय में उनके साथ आने की अपील की। भारतीय नेता सहमत हुए लेकिन उन्होंने अपने नियम और शर्तें रखीं यानी युद्ध समाप्त होने के बाद, ब्रिटिश सरकार भारतीय लोगों को संवैधानिक (विधायी और प्रशासनिक) शक्तियां देगी।
- दुर्भाग्य से, प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार द्वारा उठाए गए कदमों ने भारतीय लोगों में अशांति पैदा कर दी। चंपारण, बारडोली, खेड़ा और अहमदाबाद के किसानों और श्रमिकों ने ब्रिटिश सरकार की शोषणकारी नीतियों के खिलाफ सक्रिय रूप से विरोध किया। लाखों विद्यार्थियों ने स्कूल–कॉलेज छोड़ दिये। सैकड़ों वकीलों ने अपनी प्रैक्टिस छोड़ दी।
- होम रूल आंदोलन (1916–1918): लोकमान्य तिलक और एनी बेसेंट के नेतृत्व में होम रूल आंदोलन (1916–1918) के दौरान भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पुनर्जीवित हुआ और कट्टरपंथी भी बना।
- लखनऊ समझौता (1916): होम रूल आंदोलन और उसके बाद उदारवादी और उग्रवादी राष्ट्रवादियों के पुनर्मिलन ने मुसलमानों के साथ नए सिरे से बातचीत की संभावना खोली। लखनऊ समझौते (1916) के तहत कांग्रेस और मुस्लिम लीग इस बात पर सहमत हुए कि भारत में जल्द से जल्द स्वशासन होना चाहिए। बदले में, कांग्रेस नेतृत्व ने मुसलमानों के लिए एक अलग निर्वाचन क्षेत्र की अवीाारणा को स्वीकार कर लिया।
- **राष्ट्रवाद–गांधीवादी चरण:** महात्मा गांधी एक जन नेता के रूप में उभरे। वह 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत आये। गांधीजी ने नस्लवादी प्रतिबंधों के खिलाफ अहिंसक मार्च में भारतीयों का नेतृत्व किया। उन्होंने सत्याग्रह की शुरुआत की, जिसे उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में सिद्ध किया था, जिसका अभ्यास पुरुष और महिलाएं, युवा और बूढ़े सभी कर सकते थे। सबसे गरीब लोगों के हित के लिए समर्पित एक व्यक्ति के रूप में, उन्होंने तुरंत जनता की सद्भावना प्राप्त कर ली।
- **गांधी का उद्भव:** मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को हुआ था। मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, गांधी कानून की पढ़ाई करने के लिए 1888 में इंग्लैंड चले गए। जून 1891 में बैरिस्टर बनने के बाद गांधीजी भारत लौट आये। तब दक्षिण अफ्रीका में एक गुजराती फर्म ने एक मुकदमे में सहायता के लिए गांधीजी की सेवाएं मांगी।
- गांधी ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और अप्रैल 1893 में दक्षिण अफ्रीका के लिए रवाना हो गए। गांधी को पहली बार दक्षिण अफ्रीका में नस्लीय भेदभाव का सामना करना पड़ा। डरबन से प्रिटोरिया की यात्रा के दौरान पीटरमैरिट्सबर्ग रेलवे स्टेशन पर उन्हें शारीरिक रूप से प्रथम श्रेणी के डिब्बे से बाहर फेंक दिया गया। गांधी जी लड़ने के लिए कृतसंकल्प थे।
- रस्किन से प्रेरित होकर गांधीजी ने फीनिक्स आश्रम (1905) और टॉल्स्टॉय फार्म (1910) की स्थापना की।
- **भारत में गांधीजी के प्रारंभिक सत्याग्रह:** गांधी गोपाल कृष्ण गोखले को अपना राजनीतिक गुरु मानते थे, जिनसे वे पिछली भारत यात्रा पर मिले थे। उनकी सलाह पर, गांधीजी ने राजनीति में उतरने से पहले देश भर की यात्रा की।
- **चंपारण सत्याग्रह:** बिहार के चम्पारण में तिनकठिया प्रथा प्रचलित थी। इस शोषणकारी व्यवस्था के तहत यूरोपीय बागान मालिकों द्वारा किसानों को उनकी भूमि के तीन–बीसवें हिस्से पर नील की खेती करने के लिए मजबूर किया जाता था।
- चंपारण के एक कृषक राजकुमार शुक्ल ने गांधीजी से चंपारण आने का अनुरोध किया। उनके प्रयास से तिनकठिया प्रथा समाप्त हो गयी।
- चंपारण सत्याग्रह की सफलता, उसके बाद अहमदाबाद मिल हड़ताल (1918) और खेड़ा सत्याग्रह (1918) में उनके सार्थक हस्तक्षेप ने गांधीजी को खुद को जन संघर्ष के नेता के रूप में स्थापित करने में मदद की। पहले के नेताओं के विपरीत, गांधी ने देश भर में आम लोगों को संगठित करने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया।
- **रौलट सत्याग्रह और जलियांवाला बाग नरसंहार:** हालाँकि, भारत सरकार अधिनियम 1919 से निराशा हुई, क्योंकि इसने भारतीयों को वास्तविक शक्ति हस्तांतरित नहीं की। इसके अलावा, सरकार ने युद्धकालीन प्रतिबंधों के स्थायी विस्तार को लागू करना शुरू कर दिया।
- रौलेट एक्ट लागू किया गया जिसमें अत्यधिक पुलिस शक्तियाँ, बिना वारंट के गिरफ्तारी और बिना मुकदमे के हिरासत में लेने का प्रावधान था।
- गांधी जी ने इसे 'काला कानून' कहा और इसके विरोध में 6 अप्रैल 1919 को देशव्यापी सत्याग्रह का आह्वान किया।
- 9 अप्रैल को अमृतसर में दो प्रमुख स्थानीय नेताओं डॉ. सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल को गिरफ्तार कर लिया गया।
- जनरल डायर की क्रूरता: 13 अप्रैल 1919 (बैसाखी) को अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक सार्वजनिक बैठक आयोजित की गई थी।
- जनरल रेजिनाल्ड डायर ने जमावड़े की खबर सुनकर अपने सैनिकों और एक बख्तरबंद वाहन के साथ उस जगह को घेर लिया और सैनिकों को गोलियां चलाने का आदेश दिया।
- गोलीबारी दस मिनट तक चली जब तक कि सैनिकों का गोला–बारूद खत्म नहीं हो गया। एक आधिकारिक रिपोर्ट के अनुसार 379 लोग मारे गए और एक हजार से अधिक घायल हुए।
- रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी नाइटहुड की उपाधि लौटा दी। गाँधीजी ने अपना कैसर–ए–हिन्द पदक लौटा दिया।
- **खिलाफत आंदोलन:** प्रथम विश्व युद्ध 1918 में खत्म हुआ। तुर्की के खलीफा, जो दुनिया के मुसलमानों के मुखिया माने जाते थे, के साथ कठोर व्यवहार किया गया। अली बंधुओं, मौलाना मोहम्मद अली और मौलाना शौकत अली के नेतृत्व में खिलाफत आंदोलन नामक एक आंदोलन शुरू किया गया था।
- गांधीजी ने आंदोलन का समर्थन किया और इसमें लहदुओं और मुसलमानों को एकजुट करने का अवसर देखा। उन्होंने नवंबर 1919 में दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय खिलाफत सम्मेलन की अध्यक्षता की। गांधीजी ने शौकत अली के तीन राष्ट्रीय नारों, अल्लाहो अकबर, वंदे मातरम और हिंदू–मुसलमान की जय के प्रस्ताव का समर्थन किया।
- 9 जून 1920 को इलाहाबाद में खिलाफत समिति की बैठक में गांधीजी के अहिंसक असहयोग कार्यक्रम को अपनाया गया। असहयोग 1 अगस्त 1920 को शुरू होना निश्चित किया गया।

- असहयोग आंदोलन और उसके परिणामः भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने सितंबर 1920 में कलकत्ता में आयोजित एक विशेष सत्र में असहयोग आंदोलन को मंजूरी दे दी।
- बाद में इसे दिसंबर 1920 में सलेम सी.विजयराघवाचार्य की अध्यक्षता में आयोजित नागपुर सत्र में पारित किया गया।
- **नो–टैक्स अभियान और चौरी चौरा घटनाः** गांधीजी ने फरवरी 1922 में बारदोली में कर–मुक्त अभियान की घोषणा की। वे जहां भी गए, वहां विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। हज़ारों लोगों ने सरकारी नौकरियाँ छोड़ दीं, बड़ी संख्या में छात्रों ने अपनी पढ़ाई छोड़ दी और वकीलों ने अपनी अच्छी प्रैक्टिस छोड़ दी।
- ब्रिटिश वस्तुओं और संस्थाओं का बहिष्कार प्रभावी था। प्रिंस ऑफ वेल्स की भारत यात्रा का बहिष्कार सफल रहा। 5 फरवरी 1922 को वर्तमान उत्तर प्रदेश में गोरखपुर के पास एक गाँव चौरी चौरा में पुलिस द्वारा उकसाया गया राष्ट्रवादियों का जुलूस हिंसक हो गया।
- पुलिस ने खुद को संख्या में कम पाकर खुद को थाने के अंदर बंद कर लिया। भीड़ ने पुलिस स्टेशन जला दिया और 22 पुलिसकर्मियों की जान चली गई। गांधीजी ने तुरंत आंदोलन वापस ले लिया।
- **स्वराज पार्टीः** सी.आर.दास और मोतीलाल नेहरू ने 1 जनवरी 1923 को स्वराज पार्टी का गठन किया, जिसे बाद में कांग्रेस के एक विशेष सत्र द्वारा अनुमोदित किया गया। हालाँकि, 1925 में अपने नेता सी.आर. दास की मृत्यु के बाद स्वराज पार्टी का पतन शुरू हो गया।
- **साइमन कमीशन का बहिष्कारः** 8 नवंबर 1927 को ब्रिटिश सरकार ने भारतीय वैधानिक आयोग की नियुक्ति की घोषणा की। सर जॉन साइमन की अध्यक्षता में सात सदस्यों से बना यह व्यापक रूप से साइमन कमीशन के रूप में जाना जाने लगा।
- यह श्वेत सदस्यों का एक आयोग था, जिसमें कोई भारतीय सदस्य नहीं था। भारतीय इस बात से नाराज़ थे कि उन्हें अपना संविधान तय करने के अधिकार से वंचित कर दिया गया है। कांग्रेस और मुस्लिम लीग सहित भारत के सभी वर्गों ने आयोग का बहिष्कार करने का निर्णय लिया।
- जहां भी आयोग गया वहां विरोध प्रदर्शन हुए और 'साइमन वापस जाओ' के नारे के साथ काले झंडे मार्च निकाले गए। पुलिस द्वारा प्रदर्शनकारियों पर बेरहमी से हमला किया गया। लाहौर में ऐसे ही एक हमले में लाल लाजपत राय गंभीर रूप से घायल हो गए और कुछ दिनों बाद उनकी मृत्यु हो गई।
- **नेहरू रिपोर्टः** साइमन बहिष्कार ने भारत में विभिन्न राजनीतिक दलों को एकजुट किया। साइमन कमीशन के प्रस्तावों के विकल्प के रूप में भारत के लिए एक संविधान बनाने के उद्देश्य से 1928 में एक सर्वदलीय सम्मेलन आयोजित किया गया था।
- उन सिद्धांतों की रूपरेखा तैयार करने के लिए मोतीलाल नेहरू के नेतृत्व में एक समिति का गठन किया गया था जिनके आधार पर संविधान का मसौदा तैयार किया जाना था। समिति की रिपोर्ट को नेहरू रिपोर्ट के नाम से जाना जाता है।
- **भारत के लिए डोमिनियन स्थितिः** संयुक्त और मिश्रित निर्वाचन क्षेत्रों के आधार पर केंद्रीय विधानमंडल और प्रांतीय विधानमंडलों के चुनाव।
- केंद्रीय विधानमंडल और उन प्रांतों में मुसलमानों के लिए सीटें आरक्षित करना जहां वे अल्पसंख्यक हैं और उत्तर–पश्चिम सीमा प्रांत में हिंदुओं के लिए जहां वे अल्पसंख्यक थे।
- **मौलिक अधिकारों का प्रावधान, और सार्वभौमिक वयस्क मताधिकारः** जिन्ना ने केंद्रीय विधानमंडल में सीटों के आरक्षण में संशोधन का प्रस्ताव रखा। उन्होंने मांग की कि एक तिहाई सीटें मुसलमानों के लिए आरक्षित की जाएं। तेज बहादुर सप्रू ने उनका समर्थन किया और निवेदन किया कि इससे कोई बड़ा फर्क नहीं पड़ेगा। हालाँकि, सर्वदलीय सम्मेलन में इसकी हार हुई।
- बाद में उन्होंने एक प्रस्ताव रखा जिसे जिन्ना के चौदह सूत्र के नाम से जाना गया। हालाँकि, इसे भी खारिज कर दिया गया था। जिन्ना, जिन्हें हिंदू–मुस्लिम एकता के राजदूत के रूप में सम्मानित किया गया था, ने इसके बाद अपना रुख बदल दिया और मुसलमानों के लिए एक अलग राष्ट्र का समर्थन करना शुरू कर दिया।
- **1922–1929 की घटनाएँः** महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन वापस ले लिया। जब असहयोग आंदोलन समाप्त हो गया, तो गांधी के अनुयायियों ने इस बात पर जोर दिया कि कांग्रेस को ग्रामीण क्षेत्रों में रचनात्मक कार्य करना चाहिए। अन्य नेताओं ने तर्क दिया कि पार्टी को परिषदों का चुनाव लड़ना चाहिए। 1930 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ किया गया।
- 1920 के दशक के मध्य में दो महत्वपूर्ण घटनाक्रम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस), एक हिंदू संगठन और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का गठन था। दशक के अंत तक, कांग्रेस ने जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में 1929 में पूर्ण स्वराज के लिए लड़ने का संकल्प लिया। परिणामस्वरूप, 26 जनवरी, 1930 को पूरे देश में "स्वतंत्रता दिवस" मनाया गया।
- **सविनय अवज्ञा की दिशा मेंः** फरवरी 1922 में, असहयोग आंदोलन वापस ले लिया गया क्योंकि महात्मा गांधी को लगा कि यह हिंसक हो रहा है।
- **नमक मार्च और सविनय अवज्ञा आंदोलनः** प्रसिद्ध नमक मार्च की शुरुआत महात्मा गांधी ने अपने 78 भरोसेमंद स्वयंसेवकों के साथ की थी। यह यात्रा साबरमती में गांधीजी के आश्रम से लेकर गुजराती तटीय शहर दांडी तक 240 मील से अधिक लंबी थी।
- 6 अप्रैल को वह दांडी पहुंचे और औपचारिक रूप से कानून का उल्लंघन करते हुए समुद्री जल को उबालकर नमक बनाया। इससे सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत हुई।
- अप्रैल 1930 में, महात्मा गांधी के एक समर्पित शिष्य अब्दुल गफ्फार खान को गिरफ्तार कर लिया गया। एक महीने बाद महात्मा गांधी को गिरफ्तार कर लिया गया जिसके कारण ब्रिटिश शासन का प्रतीक सभी संरचनाओं पर हमले हुए।
- इस भयावह स्थिति को देखकर महात्मा गांधी ने आंदोलन बंद करने का फैसला किया और 5 मार्च 1931 को इरविन के साथ एक समझौता किया।
- **सविनय अवज्ञा की सीमाएँः** अछूत कहे जाने वाले दलित स्वराज की अवधारणा से प्रभावित नहीं थे। डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, जिन्होंने 1930 में दलितों को दलित वर्ग संघ में संगठित किया, दलितों के

लिए अलग निर्वाचन क्षेत्रों की मांग करके दूसरे गोलमेज सम्मेलन में महात्मा गांधी से भिड़ गये।

- गांधीजी ने अल्पसंख्यकों के लिए पृथक निर्वाचिका स्वीकार करने से इनकार कर दिया। नतीजा यह हुआ कि दूसरा सम्मेलन बिना किसी नतीजे के खत्म हो गया.
- भारत लौटकर गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को पुनर्जीवित किया। इस बार सरकार प्रतिरोध से निपटने के लिए तैयार थी।
- मार्शल लॉ लागू किया गया और 4 जनवरी 1932 को गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया। जल्द ही सभी कांग्रेस नेताओं को भी गिरफ्तार कर लिया गया। जनता के विरोध और धरना को बलपूर्वक दबा दिया गया।
- इस बीच, तीसरा गोलमेज सम्मेलन 17 नवंबर से 24 दिसंबर 1932 तक आयोजित किया गया। कांग्रेस ने सम्मेलन में भाग नहीं लिया क्योंकि इसने सविनय अवज्ञा आंदोलन को पुनर्जीवित किया था।
- सांप्रदायिक पुरस्कार और पूना समझौता: 16 अगस्त 1932 को रैमसे मैकडोनाल्ड ने सांप्रदायिक पुरस्कार की घोषणा की। इसने अल्पसंख्यकों, अर्थात् मुसलमानों, सिखों और भारतीय ईसाइयों, एंग्लो–इंडियनों और महिलाओं और "दलित वर्गों" को अलग निर्वाचन क्षेत्र प्रदान किया।
- दलित वर्गों के नेता, बी.आर. अम्बेडकर ने अलग निर्वाचन क्षेत्र के लिए दृढ़ता से तर्क दिया, क्योंकि उनके अनुसार, इससे उन्हें राजनीतिक प्रतिनिधित्व और शक्ति मिलेगी।
- 20 सितंबर 1932 को, गांधीजी दलित वर्गों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्रों के खिलाफ आमरण अनशन पर बैठ गए। मदन मोहन मालवीय, राजेंद्र प्रसाद और अन्य लोगों ने अंबेडकर से बातचीत की। राजा दलित वर्ग के नेता थे। गहन बातचीत के बाद गांधी और अम्बेडकर के बीच एक समझौता हुआ। इसे पूना पैक्ट के नाम से जाना गया।
- **अस्पृश्यता के विरुद्ध अभियान:** गांधीजी ने भेदभाव को दूर करने के लिए हरिजन सेवक संघ की स्थापना की। उन्होंने दलित वर्ग के बीच शिक्षा, साफ–सफाई और स्वच्छता तथा शराब छोड़ने को बढ़ावा देने के लिए काम किया। अभियान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मंदिर प्रवेश आंदोलन था। 8 जनवरी 1933 को 'मंदिर प्रवेश दिवस' के रूप में मनाया गया।
- **समाजवादी आंदोलनों की शुरुआत:** 1917 की रूसी क्रांति से प्रेरित होकर अक्टूबर 1920 में ताशकंद, उज़्बेकिस्तान में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई) की स्थापना की गई। एम.एन. रॉय, अबनी मुखर्जी, और एम.पी.टी. आचार्य इसके कुछ संस्थापक सदस्य थे।
- एक पार्टी बनाने के प्रयास में 1925 में कानपुर में एक अखिल भारतीय कम्युनिस्ट सम्मेलन आयोजित किया गया। बाद में 1928 में अखिल भारतीय श्रमिक और किसान पार्टी की स्थापना की गई।
- **क्रांतिकारी गतिविधियाँ:** 1924 में सशस्त्र विद्रोह द्वारा औपनिवेशिक शासन को उखाड़ फेंकने के लिए कानपुर में हिंदुस्तान रिपब्लिकन आर्मी (एचआरए) का गठन किया गया था।
- भगत सिंह, सुखदेव और उनके साथियों ने पंजाब में HRA का पुनर्गठन किया। समाजवादी विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने 1928 में इसका नाम बदलकर हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन कर दिया। लाला लाजपत राय की मौत के कारण हुए लाठीचार्ज के लिए जिम्मेदार ब्रिटिश पुलिस अधिकारी सांडर्स की हत्या कर दी गई।
- भगत सिंह के साथ बी.के. दत्त ने 1929 में सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली के अंदर एक धुआं बम फेंका। उन्होंने 'इंकलाब जिंदाबाद' और 'सर्वहारा जिंदाबाद' के नारे लगाए।
- उन्हें राजगुरु के साथ गिरफ्तार कर लिया गया और मौत की सजा दी गई। भगत सिंह के साहस और साहस ने पूरे भारत में युवाओं की कल्पना को जगा दिया और वह पूरे भारत में लोकप्रिय हो गए।
- अप्रैल 1930 में, सूर्य सेन और उनके सहयोगियों द्वारा चटगांव शस्त्रागार पर छापा मारा गया था। उन्होंने चटगाँव में शस्त्रागारों पर कब्ज़ा कर लिया और एक अस्थायी क्रांतिकारी सरकार की घोषणा की।
- वे सरकारी संस्थानों पर छापा मारते हुए तीन साल तक जीवित रहे। 1933 में सूर्य सेन को पकड़ लिया गया और एक साल बाद फाँसी पर लटका दिया गया।
- **1930 के दशक में वामपंथी आंदोलन:** 1930 के दशक तक विश्वव्यापी महामंदी के कारण उत्पन्न आर्थिक संकट को देखते हुए भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने ताकत हासिल कर ली थी। आय में कमी और वेतन में कमी और बेरोजगारी की समस्याओं से प्रभावित किसानों और औद्योगिक श्रमिकों के हित के लिए लड़ने वाली कम्युनिस्ट पार्टी ने प्रभाव प्राप्त किया और इसलिए 1934 में उस पर प्रतिबंध लगा दिया गया।
- 1934 में जयप्रकाश नारायण, आचार्य नरेंद्र देव और मीनू मसानी ने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन किया।
- **भारत सरकार अधिनियम, 1935 के तहत प्रथम कांग्रेस मंत्रालय:** 1937 में चुनावों की घोषणा के साथ ही भारत सरकार अधिनियम 1935 लागू किया गया।
- ग्यारह प्रांतों में से सात में कांग्रेस विजयी हुई। इसने 8 प्रांतों में मंत्रालयों का गठन किया – मद्रास, बॉम्बे, मध्य प्रांत, उड़ीसा, बिहार, संयुक्त प्रांत, उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत। असम में इसने सर मुहम्मद सादुल्ला के नेतृत्व वाली असम वैली मुस्लिम पार्टी के साथ गठबंधन सरकार बनाई।
- 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ गया। भारत की औपनिवेशिक सरकार ने कांग्रेस मंत्रिमंडलों से परामर्श किए बिना मित्र राष्ट्रों की ओर से युद्ध में प्रवेश किया। विरोध में कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने इस्तीफा दे दिया। 1940 तक वह मुसलमानों के लिए एक अलग राज्य की मांग कर रहे थे।
- **द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान राष्ट्रीय आंदोलन (1939–45):** 1939 में गांधीजी के उम्मीदवार पट्टाभि सीतारमैया को हराकर सुभाष चंद्र बोस कांग्रेस के अध्यक्ष बने। जब गांधीजी ने सहयोग करने से इनकार कर दिया, तो सुभाष चंद्र बोस ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया और फॉरवर्ड ब्लॉक की शुरुआत की।

- **व्यक्तिगत सत्याग्रहः** अगस्त 1940 में वायसराय लिनलिथगो ने युद्ध प्रयासों के लिए कांग्रेस के समर्थन के बदले में एक प्रस्ताव रखा। इसलिए, गांधीजी ने सीमित सत्याग्रह की घोषणा की जो कुछ व्यक्तियों द्वारा किया जाएगा। 17 अक्टूबर 1940 को विनोभा भावे ने सबसे पहले सत्याग्रह किया। यह सत्याग्रह वर्ष के अंत तक जारी रहा।
- **क्रिप्स मिशनः** 22 मार्च 1942 को ब्रिटिश सरकार ने कैबिनेट मंत्री सर स्ट्रैफोर्ड क्रिप्स के नेतृत्व में एक मिशन भेजा। क्रिप्स मिशन और कांग्रेस के बीच बातचीत विफल रही क्योंकि ब्रिटेन तुरंत प्रभावी सत्ता हस्तांतरित करने को तैयार नहीं था। क्रिप्स मिशन ने युद्ध के बाद डोमिनियन स्टेटस देने की पेशकश की। कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ने प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। गांधी ने प्रस्तावों को डूबते बैंक का उत्तरदिनांकित चेक बताया।
- **गांधी जी का "करो या मरो" आह्वानः** 8 अगस्त 1942 को बंबई में हुई अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में भारत में ब्रिटिश शासन को तत्काल समाप्त करने की मांग करते हुए प्रसिद्ध भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित किया गया। गांधी जी ने करो या मरो का आह्वान किया। गांधी ने कहा, 'हम या तो भारत को आज़ाद कराएंगे या इस प्रयास में मर जाएंगे, हम अपनी गुलामी को कायम रहने को देखने के लिए जीवित नहीं रहेंगे।"
- सुभाष चंद्र बोस और आई.एन.ए.: कांग्रेस छोड़ चुके सुभाष चंद्र बोस अब नजरबंद थे। वह अपने शत्रुओं को मिलाकर अंग्रेजों पर कड़ा प्रहार करना चाहते थे। मार्च 1941 में, वह भेष बदलकर नाटकीय ढंग से अपने घर से भाग निकले।
- फरवरी 1943 में, उन्होंने जापान की ओर रुख किया और भारतीय राष्ट्रीय सेना पर नियंत्रण कर लिया। इंडियन नेशनल आर्मी कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने इसका (आजाद हिंद फौज) नेतृत्व किया। पहले इसका आयोजन जनरल मोहन सिंह ने मलाया और बर्मा में जापानियों के सहयोग से भारतीय युद्धबंदियों के साथ किया था।
- बोस ने इसे तीन ब्रिगेडों में पुनर्गठित किया: गांधी ब्रिगेड, नेहरू ब्रिगेड और झाँसी की रानी के नाम पर एक महिला ब्रिगेड। सुभाष चंद्र बोस ने लसगापुर में स्वतंत्र भारत की अनंतिम सरकार का गठन किया।
- उन्होंने 'दिल्ली चलो' का नारा दियाA आई.एन.ए. को जापानी सेना के हिस्से के रूप में तैनात किया गया था। हालाँकि, जापान की हार ने आई.एन.ए. के आगे बढ़ने पर रोक लगा दी। सुभाष चंद्र बोस को ले जा रहा हवाई जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिससे स्वतंत्रता के लिए उनका अभियान समाप्त हो गया।
- ब्रिटिश सरकार ने आई.एन.ए. अधिकारियों को गिरफ्तार कर लिया और उन पर लाल किले में मुकदमा चलाया। यह मुकदमा राष्ट्रवादी प्रचार का एक मंच बन गया।
- कांग्रेस ने एक रक्षा समिति की स्थापना की जिसमें नेहरू, तेज बहादुर सप्रू, भूलाभाई देसाई और आसफ अली शामिल थे। हालाँकि आई.एन.ए. अधिकारियों को दोषी ठहराया गया था, लेकिन जनता के दबाव के कारण उन्हें रिहा कर दिया गया। आई.एन.ए. के कारनामों और उसके बाद के परीक्षणों ने भारतीयों को प्रेरित किया।
- **रॉयल इंडियन नेवी विद्रोहः** रॉयल इंडियन नेवी रेटिंग्स (नौसैनिकों) ने फरवरी 1946 में बॉम्बे में विद्रोह कर दिया। यह जल्द ही 20,000 से अधिक रेटिंग वाले अन्य स्टेशनों में फैल गया। इसी तरह के हमले भारतीय वायु सेना और जबलपुर में भारतीय सिग्नल कोर में भी हुए। इस प्रकार सशस्त्र बलों पर भी ब्रिटिश आधिपत्य नियंत्रण समाप्त हो गया।
- **शिमला सम्मेलनः** वेवेल योजना की घोषणा 14 जून 1945 को की गई थी। इसमें एक अंतरिम सरकार का प्रावधान किया गया था, जिसमें वायसराय की कार्यकारी परिषद में हिंदुओं और मुसलमानों की समान संख्या थी। शिमला सम्मेलन में कांग्रेस और मुस्लिम लीग एक समझौते पर नहीं आ सके क्योंकि जिन्ना ने एक अलग राष्ट्र की मांग की थी लेकिन कांग्रेस ने इसका समर्थन नहीं किया।
- **कैबिनेट मिशनः** ब्रिटेन में लेबर पार्टी को भारी जीत मिली और क्लेमेंट एटली प्रधानमंत्री बने। उन्होंने घोषणा की कि वह जल्द से जल्द सत्ता का हस्तांतरण करना चाहते हैं. उन्होंने पेथिक लॉरेंस, सर स्ट्रैफ़ोर्ड क्रिप्स और ए.वी.अलेक्जेंडर की सदस्यता वाला एक कैबिनेट मिशन भेजा।
- पाकिस्तान की मांग को अस्वीकार करते हुए, इसने एक संघीय सरकार का प्राविधान किया। एक संविधान सभा का चुनाव किया जाना था और सभी समुदायों के प्रतिनिधित्व के साथ एक अंतरिम सरकार की स्थापना की जानी थी। कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने योजना स्वीकार कर ली। हालाँकि, दोनों ने इसकी अलग–अलग व्याख्या की।
- **मुस्लिम लीग द्वारा प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस का आह्वानः** जब कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने एक मुस्लिम सदस्य को नामांकित किया तो कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच मतभेद पैदा हो गया। लीग ने तर्क दिया कि उसे मुसलमानों का एकमात्र प्रतिनिधि होना था और उसने अपनी मंजूरी वापस ले ली। जिन्ना ने 16 अगस्त 1946 को 'सीधी कार्रवाई दिवस' घोषित किया। हड़तालें और प्रदर्शन हुए जो जल्द ही हिंदू–मुस्लिम संघर्ष में बदल गए। यह बंगाल के अन्य जिलों में फैल गया। इससे नोआखाली जिला सबसे अधिक प्रभावित हुआ।
- **माउंटबेटन योजनाः** सितंबर 1946 में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में अंतरिम सरकार का गठन किया गया। कुछ हिचकिचाहट के बाद अक्टूबर 1946 में मुस्लिम लीग इसमें शामिल हो गई। इसके प्रतिनिधि लियाकत अली खान को वित्त सदस्य बनाया गया।
- फरवरी 1947 में, क्लेमेंट एटली ने घोषणा की कि जून 1948 तक सत्ता हस्तांतरित कर दी जाएगी। लॉर्ड माउंटबेटन को सत्ता हस्तांतरण के विशिष्ट कार्य के साथ भारत में वायसराय के रूप में भेजा गया था। 3 जून 1947 को माउंटबेटन योजना की घोषणा की गई। इसने भारत के विभाजन की नींव रखी और इस प्रकार दो अलग राष्ट्रों अर्थात भारत और पाकिस्तान का निर्माण हुआ।
- **स्वतंत्रता और विभाजनः** माउंटबेटन योजना को 18 जुलाई 1947 को ब्रिटिश संसद द्वारा भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम के अधिनियमन द्वारा प्रभावी बनाया गया था। इस अधिनियम ने भारत पर ब्रिटिश संसद की संप्रभुता को समाप्त कर दिया। भारत को दो अधिराज्यों में विभाजित किया गया – भारत और पाकिस्तान। 15 अगस्त 1947 को भारत को आजादी मिली।

क्या आप जानते हैं?

- लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय के वायसराय काल के दौरान भारत की राजधानी को कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित किया गया था।
- लाला लाजपत राय को "पंजाब केसरी" के नाम से भी जाना जाता है। वह एक राष्ट्रवादी थे जो उस कट्टरपंथी समूह के अग्रणी सदस्यों में से एक थे जो याचिकाओं की राजनीति के आलोचक थे। वे आर्य समाज के भी सक्रिय सदस्य थे।
- वह गरम दल का हिस्सा थे, जिसमें लाल, बाल, पाल यानी लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चंद्र पाल शामिल थे।
- वह "द स्टोरी ऑफ़ माई डिपोर्टेशन", "अनहैप्पी इंडिया" और "आर्य समाज" के लेखक थे।
- महात्मा गांधी ने गुजराती में "सत्य के साथ मेरे प्रयोग" लिखी।
- गांधीजी 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत आये थे और उस समय उनकी उम्र 46 वर्ष थी। इसके बाद उन्होंने नस्लवादी प्रतिबंधों के खिलाफ अहिंसक मार्च में भारतीयों का नेतृत्व किया।
- गोपाल कृष्ण गोखले की सलाह पर उन्होंने देश और भारत के लोगों को समझने के लिए पूरे एक साल तक पूरे भारत की यात्रा करने का फैसला किया।
- "सत्य के साथ मेरे प्रयोग" उनकी आत्मकथा है।
- उन्होंने "तिनकठिया व्यवस्था", खेड़ा सत्याग्रह (1918) और अहमदाबाद मिल हड़ताल (1918) के खिलाफ चंपारण सत्याग्रह (1917) जैसे कई सत्याग्रहों का नेतृत्व किया।
- चंपारण पहली सविनय अवज्ञा थी और अहमदाबाद मिल हड़ताल पहली भूख हड़ताल थी। खेड़ा सत्याग्रह भारत का पहला असहयोग आंदोलन था। गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से वर्ष 1915 में भारत आये थे।
- **काकोरी षड्यंत्र:** यह HSRA (हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी) के सदस्यों द्वारा की गई एक सशस्त्र डकैती थी और 9 अगस्त, 1925 को हुई थी। डकैती लखनऊ से लगभग 16 किमी दूर काकोरी शहर में हुई थी, जहां ट्रेन थी नेतृत्व किया।
- इसे राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान, चन्द्रशेखर आज़ाद, राजेंद्र लाहिड़ी, शचींद्र बख्शी, केशव चक्रवर्ती, मुरारी लाल खन्ना (गुप्ता), बनवारी लाल, मुकुंदी लाल गुप्ता और मन्मथनाथ गुप्ता ने अंजाम दिया था।
- घटना के बाद क्रांतिकारी लखनऊ भाग गये। 21 मई 1926 को ए. हैमिल्टन के सेशन कोर्ट में काकोरी मुकदमा शुरू हुआ।
- गोबिंद बल्लभ पंत, चंद्र भानु गुप्ता, गोपी नाथ श्रीवास्तव, आर. एम. बहादुरजी, कृपा शंकर हजेला, बी. के. चौधरी, मोहन लाल सक्सेना और अजीत प्रसाद जैन ऐसे वकील थे जिन्होंने क्रांतिकारियों का बचाव किया था। राम प्रसाद बिस्मिल ने प्रसिद्ध रूप से अपने मामले का बचाव किया। पंडित जगत नारायण मुल्ला ने क्रांतिकारियों का बचाव करने से इनकार कर दिया था और इस तरह वह ब्रिटिश क्राउन के लिए सरकारी वकील बन गए।
- मुकदमे के दौरान कुल 40 लोगों को गिरफ्तार किया गया। चन्द्रशेखर आज़ाद पकड़े नहीं जा सके। 27 फरवरी 1931 को पुलिस के साथ मुठभेड़ में चन्द्रशेखर आजाद पार्क (तत्कालीन अल्फ्रेड पार्क), प्रयागराज में गंभीर रूप से घायल होने और आखिरी गोली लगने तक उन्होंने खुद को गोली मार ली।
- श्यामजी कृष्ण वर्मा ने वीर विनायक दामोदर सावरकर के लिए लंदन में उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था की थी।
- राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान, चन्द्रशेखर आज़ाद, राजेंद्र लाहिड़ी, शचीन्द्र बख्शी, केशव चक्रवर्ती, मुरारी लाल खन्ना (गुप्ता), बनवारी लाल, मुकुंदी लाल गुप्ता और मन्मथनाथ गुप्ता काकोरी षडयंत्र केस (09 अगस्त, 1925) से जुड़े थे।
- यह HSRA (हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी) के सदस्यों द्वारा की गई एक सशस्त्र ट्रेन डकैती थी। इस अधिनियम को महात्मा गांधी द्वारा "काला अधिनियम" घोषित किया गया था।
- गांधीजी ने 01 अगस्त, 1920 को असहयोग आंदोलन शुरू किया।
- लाला लाजपत राय की मृत्यु के बाद, भगत सिंह और राजगुरु ने उनकी मौत का बदला लेने के लिए जेम्स स्कॉट को मारने की कसम खाई। उन्होंने दिसंबर 17, 1927 में उनकी हत्या कर दी।
- अप्रैल 1929 में, भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने एक अन्यायपूर्ण विधेयक का विरोध करने के लिए दिल्ली में केंद्रीय विधान सभा में दो बम फेंके। उनका इरादा किसी को नुकसान पहुंचाना नहीं बल्कि सिर्फ अपने संघर्ष का प्रचार करना था। इन दोनों को आजीवन कारावास की सजा दी गई। राजगुरु और कुछ अन्य क्रांतिकारियों को भी एक बम फैक्ट्री से गिरफ्तार किया गया था।
- 07 अक्टूबर 1930 को, सिंह, राजगुरु और सुखदेव को मौत की सजा सुनाई गई, जबकि अन्य को कारावास और निर्वासन की सजा सुनाई गई।
- तीनों को 24 मार्च 1931 को फाँसी देने का आदेश दिया गया था लेकिन सजा एक दिन पहले लाहौर जेल में दी गई थी। फाँसी के बाद उनके पार्थिव शरीर का गुप्त रूप से अंतिम संस्कार कर दिया गया। हमारे स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, स्वतंत्रता आंदोलन के नेताओं ने मांग की कि ब्रिटिश शासकों को लोगों के अधिकारों का सम्मान करना चाहिए। मोतीलाल नेहरू समिति ने 1928 में ही अधिकारों के विधेयक की मांग की थी।
- ये 14 बिंदु मुस्लिम लीग के सभी भविष्य के प्रचार का आधार बने।
- भारतीय प्रेस (आपातकालीन शक्तियाँ) अधिनियम, 1931 ने प्रांतीय सरकारों को सविनय अवज्ञा आंदोलन से संबंधित प्रचार को दबाने के लिए व्यापक शक्तियाँ प्रदान कीं।
- "नमक मार्च" शुरू करने से पहले गांधी जी ने लॉर्ड इरविन को इसकी पूर्व सूचना दे दी थी।
- 1930 में सी. राजगोपालाचारी ने वेदारण्यम में नमक कानून तोड़ा।
- महान नागा महिला नेता गेडिन्ल्यू को "रानी" की उपाधि जवाहरलाल नेहरू ने दी थी। उन्होंने उसे "पहाड़ियों की बेटी" भी कहा। उसने साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह किया और करों का भुगतान करने से इनकार कर दिया और लोगों से भी ऐसा करने के लिए कहा। अंग्रेजों ने उनकी तलाश शुरू कर दी, लेकिन वह गिरफ्तारी से बचती रहीं और एक गांव से दूसरे गांव घूमती रहीं। गेडिन्ल्यू को आखरिकार 1932 में गिरफ्तार कर लिया गया जब वह महज़ 16 साल की थीं और बाद में उन्हें आजीवन कारावास की सज़ा सुनाई गई। उन्हें 1947 में रिहा कर दिया गया। क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद भारत छोड़ो आंदोलन ब्रिटिश शासन के खिलाफ महात्मा गांधी का प्रमुख आंदोलन था। 1945 में लाल किले में आजाद हिन्द फौज के सैनिकों (एस.एन. खान, पी.के. सहगल और जी.एस.

ढिल्लों) पर मुकदमा चलाया गया। इस केस में जवाहरलाल नेहरू, टीबी सप्रू, काटजू जैसे वकील शामिल थेA वकीलों के इस पैनल की अध्यक्षता भूलाभाई देसाई ने की थी।

- ★ भारतीय सिविल सेवा अधिनियम 1861 में लॉर्ड कैनिंग के वायसराय काल में पारित किया गया था। इसने संविदा सेवाओं के सदस्यों के लिए कुछ प्रमुख पदों के आरक्षण का प्रावधान किया। इस प्रकार, प्रधान पद अंग्रेजों के लिए आरक्षित कर दिये गये।
- ★ 1872 में शेर अली अफरीदी ने पोर्ट ब्लेयर में लॉर्ड मेयो की हत्या कर दी थी।
- ★ कर्नल जेम्स टॉड ने अपना यात्रा वृतांत ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इंडिया लॉर्ड विलियम बेंटिक को समर्पित किया।
- ★ बंगाल गजट (1780) पहला भारतीय समाचार पत्र था। जेम्स ऑगस्टस हिक्की इसके संपादक थे। यह एक अंग्रेजी समाचार पत्र था।

19. कला एवं संस्कृति

- **भारतीय नृत्य :** ब्राह्मणों में जैमिनीय और कौषीतकी नृत्य और संगीत का एक साथ उल्लेख किया गया है। भारत में, नृत्य की कला हड़प्पा संस्कृति में देखी जा सकती है। एक नर्तकी की कांस्य प्रतिमा की खोज इस तथ्य का प्रमाण देती है कि हड़प्पा में कुछ महिलाओं द्वारा नृत्य किया जाता था।
- नटराज के रूप में भगवान शिव की मूर्ति ब्रह्मांडीय चक्र के निर्माण और विनाश का प्रतिनिधित्व करती है। नटराज के रूप में शिव की लोकप्रिय मूर्ति भारतीय लोगों के बीच नृत्य रूप की लोकप्रियता को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।
- वास्तव में कथकली, भरतनाट्यम, कथक, मणिपुरी, कुचीपुड़ी और ओडिसी जैसे शास्त्रीय नृत्य हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। धीरे-धीरे नृत्यों को लोक और शास्त्रीय के रूप में विभाजित किया जाने लगा। शास्त्रीय नृत्य मंदिरों के साथ-साथ शाही दरबारों में भी किया जाता था। लोकनृत्य आम लोगों के जीवन से विकसित हुए और एक स्वर में प्रस्तुत किए गए।
- असम में लोग ज्यादातर कटाई के मौसम को बिहू त्योहार के रूप मनाते हैं। इसी तरह गुजरात का गरबा, पंजाब का भांगड़ा और गिद्दा, मिजोरम का बाँस नृत्य, कोली, महाराष्ट्र का मछुआरा नृत्य, कश्मीर का धूमल और बंगाल का छाऊ प्रदर्शन कलाओं के अनूठे उदाहरण हैं जिन्होंने जनता के सुख-दुःख को अभिव्यक्ति दी है।
- **नृत्य के प्रकार :**
  - ❖ **शास्त्रीय नृत्य :** भारत में संगीत नाट्य अकादमी नौ शास्त्रीय नृत्य रूपों को मान्यता देती है - भरतनाट्यम (तमिलनाडु), कथक (उत्तर भारत), कुचिपुड़ी (आंध्र प्रदेश और तेलंगाना), ओडिसी (ओडिशा), कथकली (केरल), सत्रिया (असम)। मणिपुरी (मणिपुर), छाऊ (झारखंड) और मोहिनीअट्टम (केरल)।
  - ❖ **लोक नृत्य :** इनका उल्लेख नीचे किया गया है :

राज्य	लोक नृत्य
आंध्र प्रदेश	भामाकलपम और कोलाट्टम
अरुणाचल प्रदेश	वांचो
असम	बिहू, नागा नृत्य
बिहार	जट-जटिन
छत्तीसगढ़	गौर मारिया, कापालिक
गुजरात	गरबा, डांडिया रास और भवई
गोवा	तरंगमेल, कोली
हरियाणा	झूमर, फाग
हिमाचल प्रदेश	झोरा, धामन
जम्मू और कश्मीर	कुद दंडी नाच
झारखंड	अग्नि, झूमर
कर्नाटक	यक्षगान, कारगा
केरल	ओट्टम थुलाल
महाराष्ट्र	लावणी, कोली
मध्य प्रदेश	जवारा, मटकी
मणिपुर	थांग टा, लाई हरोबा, पुंग चोलोम
मेघालय	नोंगक्रेम
मिजोरम	मंगलम, चैलम, चेराव
नागालैंड	बाँस नृत्य, रंगमा
ओडिशा	सावरी, घुमारा
पंजाब	भांगड़ा, गिद्दा
राजस्थान	घूमर, कालबेलिया
तमिलनाडु	कुमी, कोलट्टम, कवाड़ी
उत्तर प्रदेश	नौटंकी, रासलीला
उत्तराखंड	गढ़वाली, कुमाऊँनी

- **संगीत वाद्ययंत्र :** संगीत वाद्ययंत्रों को उनके प्रकार के आधार पर निम्न चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है–
  - ❖ **तत् वाद्य यंत्र :** ये तार युक्त वाद्य यंत्र होते हैं। उदाहरण– सितार, इकतारा, वीणा, कमायचा, सांगरी, इत्यादि।
  - ❖ **सुषिर वाद्य यंत्र :** ये वायु द्वारा बजने वाले यंत्र हैं। उदाहरण– बांसुरी, शहनाई, पुंगी आदि।
  - ❖ **अवनद्ध वाद्य यंत्र :** ये चमड़े से मढ़े हुए वाद्य यंत्र हैं। उदाहरण– ढोल, नगाडा, चंग ढफ इत्यादि।
  - ❖ **घन वाद्य यंत्र :** ये धातू से निर्मित वाद्य यंत्र हैं, जो टकराने से ध्वनि देते है। उदाहरण–चिमटा, खड़ताल, मंजिरा इत्यादि।

वाद्ययंत्र	विवरण/वादक
हारमोनियम	हारमोनियम एक कुंजीपटल वाद्य यंत्र है जो रीड के माध्यम से ध्वनि उत्पन्न करता है। **प्रमुख वादक :** श्री पुरुषोत्तम वालावलकर, अप्पा जलगांवकर, ज्ञान प्रकाश घोष।

वाद्ययंत्र	विवरण/वादक
बाँसुरी	बांसुरी एक वायु वाद्य यंत्र है और वायु कंपन के माध्यम से ध्वनि उत्पन्न करता है। **प्रमुख वादक :** टी.आर. महालिंगम, हरिप्रसाद चौरसिया, एन रमानी, पन्नालाल घोष।
तबला	ड्रम के समान, तबला एशिया में बजाया जाने वाला एक सामान्य ताल वाद्य है। **प्रमुख वादक :** जाकिर हुसैन, साबिर खान, अल्लाह रक्खा, पं. किशन महाराज, संदीप दास, उस्ताद शफात अहमद खान, पं. ज्ञान प्रकाश घोष।

वाद्ययंत्र	विवरण/वादक
सितार	हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त सितार एक तार से बजाया जाने वाला वाद्य यंत्र है। **प्रमुख वादक :** उस्ताद विलायत खान, पंडित रविशंकर, शुजात हुसैन खान, शाहिद परवेज खान, अनुष्का शंकर, निखिल बनर्जी, मुस्ताक अली खान, बुधादित्य मुखर्जी।
गिटार	यह छः तारों वाला कंपन वाद्ययंत्र है। **प्रमुख वादक :** ब्रजभूषण काबरा।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. प्राचीन भारतीय पांडुलिपियाँ आमतौर पर ताड़ पत्रों या हिमालय में उगने वाले ..... के पेड़ की छाल पर लिखी जाती थीं।
(A) कामिनी (B) चिनार
(C) भोज वृक्ष (D) देवदार

2. निम्नलिखित में से कौन–सी लिपि, सभी आधुनिक भारतीय लिपियों की जननी मानी जाती है ?
(A) हड़प्पा (B) ब्राह्मी
(C) देवनागरी (D) बंगाली–असमिया

3. ईरानियों और यूनानियों द्वारा लगभग 2500 वर्ष पहले सिंधु नदी को .....नाम से जाना जाता था।
(A) वितस्ता (B) करनाली
(C) विपासा (D) हिंदोस

4. निम्नलिखित में से किस विदेशी यात्री ने भारत का दौरा सबसे पहले किया था ?
(A) ह्वेनसांग (B) मेगस्थनीज
(C) ईर्तिसंग (D) फाह्यान

5. किस प्रकार की महापाषाण संरचना (कब्र/स्मारक) में कब्र के चारों ओर पत्थर के टुकड़ों को गोलाकार आकृति में स्थापित किया जाता था?
(A) मेनहिर
(B) संगोरा वृत्त
(C) शैलकृत गुफाएं
(D) महापाषाण तुंब (डोलमेन)

6. हस्तिनापुर का लौह कार्यान्वयन स्थल भारत के इनमें से किस वर्तमान राज्य में पाया गया था?
(A) बिहार (B) मध्य प्रदेश
(C) हरियाणा (D) उत्तर प्रदेश

7. महापाषाणों को खड़ा करने की प्रथा लगभग .....वर्ष पहले शुरू हुई थी।
(A) 1000 (B) 2500
(C) 1500 (D) 3000

8. सिंधु घाटी सभ्यता के निम्नलिखित में से किस स्थल में 'द ग्रेट बाथ' (विशाल स्नानागार) पाया गया था?
(A) मोहनजोदड़ो (B) लोथल
(C) धौलावीरा (D) कालीबंगा

9. मोहनजोदड़ो के विशाल स्नानागार की आकृति कैसी थी?
(A) दीर्घवृत्ताकार (B) वर्गाकार
(C) वृत्ताकार (D) आयताकार

10. हड़प्पा की अधिकांश मुहरें.....से बनी हैं।
(A) ईंटों (B) सेलखड़ी
(C) पीतल (D) ग्रेनाइट

11. प्राचीन हड़प्पा स्थल धोलावीरा को.....भागों में विभाजित किया गया था।
(A) चार (B) दो
(C) पाँच (D) तीन

12. हड़प्पा सभ्यता का निम्नलिखित में से कौन–सा स्थल अफगानिस्तान में स्थित है ?
(A) शोरतुगई (B) बालाकोट
(C) नागेश्वर (D) कालीबंगन

13. भारतीय संगीत का आदिग्रंथ कहा जाता है ..... ।
(A) ऋग्वेद (B) उपनिषद
(C) यजुर्वेद (D) सामवेद

14. उत्तर वैदिक काल के वेद विरोधी और ब्राह्मण विरोधी धार्मिक अध्यापकों को किस नाम से जाना था ?
(A) यजमान (B) श्रमण
(C) अथर्वन् (D) श्रेष्ठिन्

15. महावीर जयंती.....माह में बनाई जाती है–
(A) मई (B) दिसम्बर
(C) अप्रैल (D) सितम्बर

16. रामभर स्तूप, वह स्थान जहाँ भगवान बुद्ध का अंतिम संस्कार किया गया था, भारत के किस राज्य में स्थित है?
(A) मध्य प्रदेश (B) हिमाचल प्रदेश
(C) बिहार (D) उत्तर प्रदेश

17. निम्नलिखित में से कौन भारत में एक शक शासक (130-150 ई.) था ?
(A) रुद्रदमन (B) बिन्दुसार
(C) मिनांडर (D) अशोक

18. धर्मसूत्रों में.....शामिल हैं–
(A) साम्राज्य पर कब्जा करने की तरकीबें
(B) केवल महिलाओं के कर्तव्य
(C) शासकों के कर्तव्य
(D) श्लोकों का पाठ करने की तकनीकें

19. निम्नलिखित में से 326 ईसा पूर्व में किस युद्ध में सिकंदर महान ने पौरव के पोरस को हराया था?
(A) कलिंग का युद्ध
(B) सकला का युद्ध
(C) प्लासी का युद्ध
(D) हाइडस्पेस का युद्ध

20. गौतमीपुत्र श्री सातकर्णी किस राजवंश के शासक थे?
(A) राष्ट्रकूट (B) सातवाहन
(C) चोल (D) चेर

21. वर्ष 1192 में तराइन के दूसरे युद्ध में मुहम्मद गौरी ने निम्नलिखित में से किसकी हत्या की थी?
(A) जयचंद गढ़वाल
(B) भोज परमार
(C) नागभट्ट प्रथम
(D) पृथ्वीराज चौहान

22. किसने गुजरात के सोमनाथ मन्दिर पर आक्रमण किया था?
(A) जलालुद्दीन खिलजी
(B) इब्राहिम लोदी
(C) अहमदशाह दुर्रानी
(D) महमूद गजनी

23. महमूद गजनवी के सभी आक्रमणों (1000 ई. से 1026 ई. के बीच) में सर्वाधिक महत्त्पूर्ण आक्रमण कौन-सा था ?
(A) मुल्तान भटिंडा पर आक्रमण (1004)
(B) नारायणपुर पर आक्रमण (1002)
(C) सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण (1025-26)
(D) कालिंजर पर आक्रमण (1019-23)

24. गुलाम वंश के शासक गयासुद्दीन बलबन (1265-1286 ई.) ने.....की उपाधि धारण की।
(A) नूर-अल-दीन (विश्वास का प्रकाश)
(B) नूरमहल (महल की रोशनी)
(C) जिल-ए-इलाही (भगवान की छाया)
(D) जहाँपनाह (विश्व के रक्षक)

25. निम्नलिखित में से कौन-सा कालक्रमानुसार तुगलक वंश के शासकों का सही क्रम है, जिन्होंने वर्ष 1320 से 1414 तक दिल्ली पर शासन किया था?
(A) मुहम्मद तुगलक, फिरोज शाह तुगलक, गयासुद्दीन तुगलक
(B) गयासुद्दीपन तुगलक, फिरोज शाह तुगलक, मुहम्मद तुगलक
(C) फिरोज शाह तुगलक, मुहम्मद तुगलक, गयासुद्दीन तुगलक
(D) गयासुद्दीन तुगलक, मुहम्मद तुगलक, फिरोज शाह तुगलक

26. 1206 से 1290 तक दिल्ली पर शासन करने वाले प्रारम्भिक तुर्की शासकों का सही कालक्रम निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) शम्सुद्दीन इल्तुतमिश, रजिया, कुतुबुद्दीन ऐबक
(B) कुतुबुद्दीन ऐबक, रजिया, शम्सुद्दीन इल्तुतमिश
(C) कुतुबुद्दीन ऐबक, शम्सुद्दीन इल्तुतमिश, रजिया
(D) रजिया, शम्सुद्दीन इल्तुतमिश, कुतुबुद्दीन ऐबक

27. कुतुबुद्दीन ऐबक ने.....तक दिल्ली पर शासन किया था–
(A) 1236 से 1240 (B) 1266 से 1287
(C) 1206 से 1210 (D) 1210 से 1236

28. रजिया सुल्तान के बाद दिल्ली का शासक कौन बना?
(A) कुतुबुद्दीन ऐबक
(B) गयासुद्दीन बलबन
(C) शम्सुद्दीन इल्तुतमिश
(D) पृथ्वीराज चौहान

29. निम्नलिखित में से कौन अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.) का गुलाम–सेनापति था?
(A) नसीरुद्दीन शाह (B) मलिक काफूर
(C) उलुग खान (D) जोना खान

30. मुगल प्रांतीय प्रशासन में, आमतौर पर, दीवानी का अर्थ क्या होता था ?
(A) कानून व्यवस्था और आपराधिक न्याय का प्रशासन
(B) आपराधिक न्यायशास्त्र और जेल का प्रशासन
(C) राजस्व प्रशासन
(D) आपराधिक न्याय प्रणाली

31. प्राचीन शहर हम्पी, ... साम्राज्य की राजधानी था।
(A) राष्ट्रकूट (B) नायक
(C) मराठा (D) विजयनगर

32. निम्नलिखित में से किस राजा के शासनकाल में कोणार्क का सूर्य मंदिर बना था ?
(A) अनंत पद्मनाभन
(B) समुद्रगुप्त
(C) नरसिंह देव 1
(D) अनंतवर्मन चोडगंगा

33. मुर्शिद कुली खान ..... के नवाब थे।
(A) अवध (B) लखनऊ
(C) बंगाल (D) हैदराबाद

34. अकबरनामा और आइने अकबरी किसके द्वारा रचित हैं?
(A) अकबर
(B) जिआउद्दीन बरनी
(C) अबुल फजल
(D) अब्दुल कादिर बदायूँनी

35. कंदरिया महादेव मन्दिर किसके द्वारा बनवाया गया?
(A) चंदेल वंश द्वारा
(B) चोल वंश द्वारा
(C) पल्लव वंश द्वारा
(D) होयसल वंश द्वारा

36. अकबर का राजस्व मंत्री निम्नलिखिम में से कौन था?
(A) तानसेन (B) टोडरमल
(C) बीरबल (D) राजा मान सिंह

37. शेर खान ने कन्नौज में हुमायूँ को किस वर्ष हराया था?
(A) 1540 (B) 1543
(C) 1541 (D) 1542

38. पुरंदर की संधि किस–किस के बीच हुई?
(A) शिवाजी तथा जयसिंह
(B) शाह आलम द्वितीय तथा रॉबर्ट क्लाइव
(C) टीपू सुल्तान तथा लॉर्ड कॉर्नवालिस
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

39. निम्नलिखित में से सिक्खों का वह कौन–सा धार्मिक स्थल है जो भारत में नहीं है?
(A) नांदेड़ (B) केशगढ़ साहिब
(C) पोंटा साहिब (D) ननकाना साहिब

40. निम्नलिखित में से कौन, महाराष्ट्र के एक संत थे ?
(A) दादू दयाल (B) चोखामेला
(C) भाखन (D) सुंदर दास

41. टीपू सुल्तान की मृत्यु किस वर्ष अपनी राजधानी सेरिंगपट्टम (मतपदहंचंजंउ) की रक्षा करते हुए हुई थी?
(A) 1802 (B) 1794
(C) 1799 (D) 1792

42. नीचे दिए गए कथनों में से कौन-सा कथन सही है?
I. टीपू सुल्तान को मैसूर का टाइगर (टाइगर ऑफ मैसूर) भी कहा जाता है।
II. टीपू सुल्तान ने 1782 से 1799 तक मैसूर पर शासन किया।
(A) केवल I
(B) I और II दोनों
(C) केवल II
(D) न तो I और न ही II

43. युद्ध के नाम और वर्ष के निम्नलिखित युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?
I. बक्सर का युद्ध–1764
II. प्लासी का युद्ध–1757
(A) न तो I और न ही II
(B) I और II दोनों
(C) केवल II
(D) केवल I

44. 18 वीं शताब्दी में, अंग्रेजों ने मैसूर शासकों के साथ.....युद्ध लड़े।
(A) छः (B) तीन
(C) चार (D) दो

45. नीचे दिए गए कथनों में से कौन-सा कथन सही है?
I. रॉबर्ट क्लाइव 18 साल की उम्र में 1743 में इंग्लैण्ड से मद्रास आए थे।
II. बक्सर की लड़ाई के बाद, ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारतीय राज्यों में रेसिडेंट्स को नियुक्त किया।
(A) केवल II
(B) I और II दोनों
(C) न तो I और न ही II
(D) केवल I

46. प्लासी के युद्ध में सिराजुद्दौला की हार का मुख्य कारण था?
(A) सेनापति मीर जाफर के नेतृत्व वाली सेना ने युद्ध में भाग नहीं लिया।
(B) सिराजुद्दौला के प्रधानमंत्री ने अंग्रेजों के स्थान की गलत सूचना दी।

(C) अंग्रेजों ने सिराजुद्दौला की सेना की खाद्य आपूर्ति बंद कर दी और उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर किया।

(D) अंग्रेजों को सिराजुद्दौला के महल में प्रवेश करने का गुप्त रास्ता पता था।

47. भारत में सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना किस अधिनियम के तहत् की गई थी?

(A) 1853 का चार्टर अधिनियम

(B) 1773 का विनियमन अधिनियम

(C) 1784 का पिट्स इण्डिया अधिनियम

(D) 1793 का चार्टर अधिनियम

48. सहायक संधि के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?

(A) अवध का नवाब पहला शासक था जिसने अंग्रेजों पर एक सहायक संधि थोपी थी।

(B) यदि भारतीय शासक भुगतान करने में विफल रहे, तो उनके क्षेत्र का एक हिस्सा दण्ड के रूप में छीन लिया गया।

(C) भारतीय शासकों को अपनी स्वतंत्र सशस्त्र सेना रखने की अनुमति नहीं थी।

(D) भारतीय शासकों को 'सहायक बलों' के लिए भुगतान करना पड़ा।

49. 1853 में भारत में पहली रेलवे लाइन.....से .....तक थी।

(A) मद्रास (अब चेन्नई) से नागपुर

(B) बॉम्बे (अब मुम्बई) से ठाणे

(C) बॉम्बे (अब मुम्बई) से दिल्ली

(D) दिल्ली से कन्याकुमारी

50. निम्नलिखित में से किस अधिनियम ने भारत के साथ व्यापार के मामले में ईस्ट इंडिया कंपनी के एकाधिकार को समाप्त कर दिया ?

(A) 1793 का रेग्यूलेटिंग अधिनियम

(B) 1813 का चार्टर अधिनियम

(C) 1833 का चार्टर अधिनियम

(D) 1773 का रेग्यूलेटिंग अधिनियम

51. 1773 में भारत के प्रथम गवर्नर जनरल कौन बने?

(A) वारेन हेस्टिंग्स

(B) रॉबर्ट क्लाइव

(C) चार्ल्स कॉर्नवालिस

(D) थॉमस मुनरौ

52. 1857 के विद्रोह के बाद अंग्रेजों द्वारा किस मुगल शासक को देश छोड़ने के लिए मजबूर किया गया था?

(A) बहादुर शाह जफर

(B) अहमद शाह बहादुर

(C) फर्रुख सियर

(D) मुहम्मद शाह

53. मंगल पांडे को बैरकपुर में.....को ब्रिटिश अधिकारियों पर हमला करने के लिए फाँसी दी गई थी।

(A) 29 मार्च, 1857 (B) 21 मार्च, 1857

(C) 23 मार्च, 1857 (D) 31 मार्च, 1857

54. .....ने सत्यशोधक समाज की स्थापना की, जिसने मूर्तिपूजा और जाति व्यवस्था के विरुद्ध मुहिम चलाई।

(A) देबेन्द्रनाथ टैगोर

(B) केशव चंद्र सेन

(C) ज्योतिराव गोविंदराज फुले

(D) राजा राम मोहन राय

55. निम्नलिखित में से 1913 में भारत के बाहर स्थापित एक क्रांतिकारी संगठन कौन-सा था?

(A) भारतीय जनता पार्टी

(B) गदर पार्टी

(C) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

(D) साइमन कमीशन

56. ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन किस वर्ष में किया था ?

(A) 1905 (B) 1901

(C) 1907 (D) 1911

57. महात्मा गांधी ने अहमदाबाद में मिल मजदूरों की सफल हड़ताल का नेतृत्व किस वर्ष किया था?

(A) 1916 (B) 1918

(C) 1919 (D) 1917

58. भगत सिंह और बी.के. दत्त ने किस वर्ष केन्द्रीय विधान सभा में बम फेंका था?

(A) 1930 (B) 1931

(C) 1928 (D) 1929

59. भारत के निम्नलिखित स्वतंत्रता सेनानियों में से किसने वर्ष 1943 में भारतीय राष्ट्रीय सेना 'आजाद हिन्द फौज' (जिसे 1942 में रास बिहारी बोस और कैप्टन–जनरल मोहन सिंह ने बनाया था) को पुनजीर्वित किया?

(A) महत्मा गांधी (B) सुभाष चंद्र बोस

(C) भगत सिंह (D) जवाहरलाल नेहरू

60. मॉर्ले-मिंटो सुधारों की शुरुआत के समय भारत का वायसरॉय कौन था?

(A) लॉर्ड वेवेल (B) लॉर्ड एटली

(C) लॉर्ड मिंटो (D) लॉर्ड लिनलिथगो

उत्तरमाला

1. (C)	**2.** (B)	**3.** (D)	**4.** (B)	**5.** (B)
6. (D)	**7.** (D)	**8.** (A)	**9.** (D)	**10.** (B)
11. (D)	**12.** (A)	**13.** (D)	**14.** (B)	**15.** (C)
16. (D)	**17.** (A)	**18.** (C)	**19.** (D)	**20.** (B)
21. (D)	**22.** (D)	**23.** (C)	**24.** (C)	**25.** (D)
26. (C)	**27.** (C)	**28.** (B)	**29.** (B)	**30.** (C)
31. (D)	**32.** (C)	**33.** (C)	**34.** (C)	**35.** (A)
36. (B)	**37.** (A)	**38.** (A)	**39.** (D)	**40.** (B)
41. (C)	**42.** (B)	**43.** (B)	**44.** (C)	**45.** (B)
46. (A)	**47.** (B)	**48.** (A)	**49.** (B)	**50.** (B)
51. (A)	**52.** (A)	**53.** (A)	**54.** (C)	**55.** (B)
56. (A)	**57.** (B)	**58.** (D)	**59.** (B)	**60.** (C)

❑❑

अध्याय 1 संख्या पद्धति

1. संख्याएँ (Numbers)

I. अंक (Digits)–0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, तथा 9 को गणित में अंकों की परिभाषा दी गई है। इन अंकों के द्वारा विभिन्न संख्याओं का निर्माण किया जाता है। जैसे–10, 123, 456, 789 इत्यादि।

II. संख्यांक प्रणाली (Number System)–संख्यांक प्रणाली में मुख्यतः दो प्रकार की प्रणाली निहित होती है–(i) दाशमिक अंकन प्रणाली, (ii) रोमन अंकन प्रणाली।

(i) दाशमिक अंकन प्रणाली (Decimal Number System)–0 से 9 अर्थात् दस अंकों के होने के कारण इसे दाशमिक अंकन प्रणाली कहा जाता है। इस प्रणाली में संख्याओं को दो प्रकार से लिखा और पढ़ा जाता है–(a) भारतीय संख्या प्रणाली, (b) अन्तर्राष्ट्रीय संख्या प्रणाली।

(a) भारतीय संख्या प्रणाली के अन्तर्गत संख्याओं को उनके स्थानीय मानों के अनुरूप पढ़ा और लिखा जाता है। इन संख्याओं को नीचे दी गई तालिका के अनुसार पढ़ा जाता है:

दस करोड़	करोड़	दस लाख	लाख	दस हजार	हजार	सैकड़ा	दहाई	इकाई
10^8	10^7	10^6	10^5	10^4	10^3	10^2	10^1	$10^0=1$

उदाहरणार्थ: संख्या 51, 45, 42, 786 को इकयावन करोड़, पैंतालीस लाख, बयालीस हजार सात सौ छियासी पढ़ा जाता है।

1 दहाई = 10 इकाइयाँ
1 सैकड़ा = 10 दहाइयाँ
= 100 इकाइयाँ
1 हजार = 10 सैकड़ा
= 100 दहाइयाँ
1 लाख = 100 हजार
= 1000 सैकड़ा
1 करोड़ = 100 लाख
= 10,000 हजार

(b) अन्तर्राष्ट्रीय संख्या प्रणाली के अन्तर्गत सभी संख्याओं को निम्नलिखित तालिका के अनुसार पढ़ा और लिखा जाता है:

दस मिलियन	एक मिलियन	सौ हजार	दस हजार	हजार	सैकड़ा	दहाई	इकाई
10^7	10^6	10^5	10^4	10^3	10^2	10^1	$10^0=1$

उदाहरणार्थ : संख्या 14, 542, 786 को अन्तर्राष्ट्रीय संख्या प्रणाली में चौदह मिलियन पाँच सौ बयालीस हजार सात सौ छियासी पढ़ा जाता है।

(ii) रोमन अंकन प्रणाली (Roman Number System)–इस प्रणाली में संख्या लैटिन वर्णमाला के अक्षरों के संयोजन द्वारा दर्शायी जाती है। वर्तमान में उपयोग किये जाने वाले रोमन अंक, सात प्रतीकों पर आधारित हैं।

रोमन प्रणाली	I	V	X	L	C	D	M
हिन्दू अरेबिक प्रणाली	1	5	10	50	100	500	1000

उदाहरणार्थ : 25 को XXV तथा 101 को CI लिखा जाता है।

नोट :–

- किसी भी संकेत की पुनरावृत्ति होने पर वह जितनी बार आता है उसका मान उतनी ही बार जोड़ दिया जाता है।
- किसी भी संकेत की पुनरावृत्ति तीन से अधिक बार नहीं की जाती है। संकेत V, L व D की कभी पुनरावृत्ति नहीं होती है।
- यदि छोटे मान वाला कोई संकेत एक बड़े मान वाले संकेत के दाईं ओर लग जाता है तो बड़े मान में छोटे मान को जोड़ दिया जाता है।
- यदि छोटे मान वाला कोई संकेत एक बड़े मान वाले संकेत के बाईं ओर लग जाता है तो बड़े मान में छोटे मान को घटा दिया जाता है।
- संकेत V, L और D के मानों को कभी भी घटाया नहीं जाता है। संकेत I को केवल V और X में से घटाया जा सकता है। संकेत X को केवल L, M व C में से ही घटाया जा सकता है।

III. सबसे बड़ी संख्याएँ एवं छोटी संख्याएँ–

(i) इकाई–अंक 0 से 9 तक इकाई अंक होते हैं। सबसे छोटी तथा सबसे बड़ी 1–अंक की संख्या क्रमशः 0 तथा 9 है।

(ii) दहाई–10 से 99 तक की संख्याएँ दहाई वाली संख्याएँ होती हैं। संख्या 10, 2–अंकों की सबसे छोटी तथा 99, 2–अंकों की सबसे बड़ी संख्या है।

(iii) सैकड़ा–100 से 999 तक की संख्याएँ सैकड़े वाली संख्याएँ होती हैं। 3–अंकों की सबसे छोटी एवं सबसे बड़ी संख्या क्रमशः 100 तथा 999 है।

(iv) हजार–1,000 से 9999 तक की संख्याएँ हजार वाली संख्याएँ होती हैं जहाँ, 1000 सबसे छोटी 4-अंकों की संख्या तथा 9,999, 4-अंकों की सबसे बड़ी संख्या है।

(v) दस हजार–10,000 से 99,999 तक की संख्याओं में 10,000 सबसे छोटी 5-अंकों की संख्या तथा 99,999, 5-अंकों की सबसे बड़ी संख्या है।

(vi) लाख–1,00,000 से 9,99,999 तक की संख्याएँ लाख वाली संख्याएँ होती हैं। 6 अंकों की सबसे छोटी तथा सबसे बड़ी संख्या क्रमशः 1,00,000 तथा 9,99,999 है।

(vii) दस लाख—10,00,000 से 99,99,999 तक की संख्याएँ दस लाख वाली संख्याएँ हैं। 7-अंकों की सबसे बड़ी तथा सबसे छोटी संख्या क्रमशः 99,99,999 तथा 10,00,000 है।

(viii) 1 करोड़—8 अंकों की सबसे बड़ी संख्या 9,99,99,999 तथा सबसे छोटी संख्या 1,00,00,000 है।

IV. अंकों के मान

(i) स्थानीय मान—दी गई संख्या में किसी अंक का मान उसके स्थानीय मान तथा स्वयं के गुणनफल से प्राप्त मान होता है। जैसे—संख्या 4,89,765 में 6 का स्थानीय मान $6 \times 10 = 60$ होगा, जहाँ 6 को उसके स्थानीय मान अर्थात् दहाई स्थान (10) से गुणा किया गया है। इसी प्रकार उपरोक्त संख्या में 8 का स्थानीय मान 80,000 तथा 4 का स्थानीय मान 4,00,000 होता है।

(ii) वास्तविक मान—किसी संख्या में अंक का वास्तविक मान स्वयं संख्या होती है। जैसे—संख्या 59,438 में 9 का वास्तविक मान 9 ही होता है।

नोट— यदि दो अंकों x तथा y से बनी एक संख्या $10x + y$ है, तो x दहाई का अंक तथा y इकाई का अंक होता है।

2. संख्याओं का वर्गीकरण (Classification of Numbers)

दशमलव संख्या पद्धति (Decimal System) में संख्याओं को 0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 आदि अंकों के प्रयोग द्वारा निरूपित किया जाता है। संख्याओं को उनके गुणों के आधार पर अलग-अलग समूह में वर्गीकृत किया गया है।

I. प्राकृत संख्याएँ (Natural Numbers)— ये संख्याएँ 1 से प्रारम्भ होती हैं और अनन्त तक जाती हैं। इनके समूह को N से दर्शाते हैं।

$$N = \{1, 2, 3, 4, 5...\}$$

II. पूर्ण संख्याएँ (Whole Numbers)—जब प्राकृत संख्याओं में शून्य को शामिल किया जाता है तो पूर्ण संख्याएँ बन जाती हैं।

$$W = \{0, 1, 2, 3, 4...\}$$

III. सम संख्याएँ (Even Numbers)—वे संख्याएँ जो 2 से भाज्य होती हैं, सम संख्याएँ कहलाती हैं।

$$E = \{2, 4, 6, 8, ...\}$$

IV. विषम संख्याएँ (Odd Numbers)—वे संख्याएँ जो 2 से भाज्य नहीं होती हैं, विषम संख्याएँ कहलाती हैं।

$$O = \{1, 3, 5, 7, ...\}$$

V. पूर्णांक संख्याएँ (Integers)—धनात्मक व ऋणात्मक चिह्न वाली संख्याओं को पूर्णांक संख्याएँ कहते हैं।

$$I = \{...-3, -2, -1, 0, 1, 2, 3...\}$$

VI. अभाज्य संख्याएँ (Prime Numbers)—1 से बड़ी उन सभी प्राकृत संख्याओं का समूह जिसमें उस संख्या तथा 1 को छोड़कर अन्य किसी भी संख्या से भाग देने पर वह पूर्णतः विभाजित न हो सके। '2' एक मात्र ऐसी संख्या है जो सम भी है और रूढ़ भी है।

$$P = \{2, 3, 5, 7, 11, ...\}$$

VII. परिमेय संख्याएँ (Rational Numbers)—वे संख्याएँ जिनको p/q के रूप में लिखा जा सकता है जहाँ p और q कोई ऐसी संख्याएँ हैं जो कि अभाज्य हैं तथा $q \neq 0$ है। इनके समूह को परिमेय संख्या (Rational Number) कहा जाता है।

$$R = \left\{.....\frac{2}{5}, \frac{1}{5}, -4, 0, 4, \frac{7}{5}\right\}$$

VIII. अपरिमेय संख्याएँ (Irrational Numbers)—वे संख्याएँ जिनको p/q के रूप में लिखना सम्भव न हो, ऐसी संख्याओं के समूह को अपरिमेय संख्या कहते हैं। यहाँ भी p व q परस्पर अभाज्य संख्याएँ होंगी तथा $q \neq 0$ होगा।

$$L = \{.....\sqrt{2}, \sqrt{3}, \sqrt{7}.....\}$$

IX. सहअभाज्य संख्याएँ (Co-prime Numbers)—ऐसी दो संख्याएँ जिनका उभयनिष्ठ गुणनखंड 1 हो सह-अभाज्य संख्याएँ कहलाती हैं।
उदा. 4 या 5

X. पूर्ववर्ती संख्या (Preceding Numbers)—किसी प्राकृत संख्या से ठीक पहले की प्राकृत संख्या उसकी पूर्ववर्ती होती है।
उदा. : संख्या 65 की पूर्ववर्ती संख्या = 65 – 1 = 64
संख्या 127 की पूर्ववर्ती संख्या = 127 – 1 = 126

XI. अनुवर्ती संख्या (Successive Numbers)—किसी प्राकृत संख्या से ठीक अगली प्राकृत संख्या उसकी अनुवर्ती (परवर्ती) संख्या होती है।
उदा. : संख्या 785 की अनुवर्ती संख्या = 785 + 1 = 786
संख्या 109 की अनुवर्ती संख्या = 109 + 1 = 110

3. पूर्णांक (Integers)

संख्या रेखा पर अंकित शून्य के दोनों ओर की समस्त ऋणात्मक संख्याओं तथा धनात्मक संख्याओं के समुच्चय को पूर्णांक कहते हैं।

उदाहरण : –5, – 4, – 3, –2, –1, 0, 1, 2, 3, 4 तथा 5 सभी पूर्णांक संख्याएँ हैं। संख्या रेखा पर पूर्णांक संख्याओं को निम्नलिखित भाँति दर्शाया जाता है :

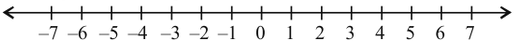

I. पूर्णांक संख्याओं के गुणधर्म

(i) संवृत गुणधर्म (योग, घटाव और गुणा के लिए)—किन्ही दो पूर्ण संख्याओं का योगफल सदैव एक पूर्ण संख्या ही होती है और हम कहते हैं कि पूर्ण संख्याएँ योग के लिए संवृत होती हैं।

यदि a और b दो पूर्णांक हैं, तब $(a + b)$ और $(a * b)$ भी पूर्णांक होंगे।

उदा. :

$4 + 5 = 9$	पूर्णांक
$4 \times 5 = 20$	पूर्णांक
$4 - 5 = -1$	पूर्णांक
$4 \div 5 = \frac{4}{5}$	पूर्णांक नहीं है

स्पष्ट है कि पूर्णांक का संवृत्त नियम, भाग की संक्रिया का अनुसरण नहीं करता है।

(ii) क्रमविनिमय गुणधर्म (योग और गुणा के लिए)—यदि a और b दो पूर्णांक हैं, तब

$(a + b) = b + a$ $\qquad$ $a * b = b * a$

उदा. : $4 + 5 = 9 = 5 + 4$
$4 \times 5 = 20 = 5 \times 4$
$4 - 5 = -1 \neq 5 - 4$
$4 \div 5 = \frac{4}{5} \neq 5 \div 4$

स्पष्ट है कि पूर्णांक का क्रमविनियम गुणधर्म व्यवकलन तथा भाग की संक्रिया का अनुसरण नहीं करता है।

(iii) साहचर्य गुणधर्म (योग व गुणा के लिए)—यदि a, b और c तीन पूर्णांक हैं, तब

$(a + b) + c = a + (b + c)$

$(a * b) * c = a * (b * c)$

उदा. : $4 + (5 + 6) = 15 = (4 + 5) + 6$

$4 * (5 * 6) = 120 = (4 * 5) * 6$

(iv) वितरण या बंटन गुणधर्म (योग पर गुणा के लिए)—यदि a, b और c तीन पूर्णांक हैं, तब

$(a + b) * c = (a * c) + (b * c)$

उदा. : $(4 + 5) * 6 = (4 * 6) + (5 * 6)$

$9 * 6 = 24 + 30$

$54 = 54$

(v) तत्समक अवयव (योग व गुणा के लिए)—

योज्य तत्समक—पूर्णांकों के लिए '0' (शून्य) को योज्य तत्समक कहा जाता है, क्योंकि किसी भी संख्या में शून्य जोड़ने पर वही संख्या प्राप्त होती है।

उदा.: $4 + 0 = 4$, पूर्णांक

$5 + 0 = 5$, पूर्णांक

गुणानात्मक तत्समक–'1' को गुणनात्मक तत्समक कहा जाता है।

उदा.: $4 \times 1 = 4$, पूर्णांक

$5 \times 1 = 5$, पूर्णांक

II. पूर्णांकों का गुणन

(i) धनात्मक पूर्णांक का ऋणात्मक पूर्णांक से गुणन–

$3 \times 4 = 4 + 4 + 4 = 12$

$3 \times (-4) = (-4) + (-4) + (-4) = -12$

इस विधि का उपयोग करते हुए हमने पाया कि धनात्मक पूर्णांक को ऋणात्मक पूर्णांक से गुणा करने पर ऋणात्मक पूर्णांक प्राप्त होता है, परन्तु क्या होता है जब ऋणात्मक पूर्णांक को धनात्मक पूर्णांक से गुणा करते हैं ?

$(-3) \times 4 = -12 = 3 \times (-4)$ इसी प्रकार हम $(-5) \times 3 = -15 = 3 \times (-5)$ भी प्राप्त कर सकते हैं।

(ii) दो ऋणात्मक पूर्णांकों का गुणन–दो ऋणात्मक पूर्णांकों का गुणनफल एक धनात्मक पूर्णांक होता है। हम दो ऋणात्मक पूर्णांकों को पूर्ण संख्याओं के रूप में गुणा करते हैं तथा गुणनफल के पूर्व में (+) का चिह्न लगाते हैं।

उदाहरणत: $(-10) \times (-14) = 140, (-5) \times (-6) = 30$

व्यापक रूप में दो धनात्मक पूर्णांकों a तथा b के लिए $(-a) \times (-b) = a \times b$

(iii) शून्य से गुणन–किसी भी पूर्णांक को शून्य से गुणा करने पर शून्य प्राप्त होता है। व्यापक रूप में हम कह सकते हैं कि किसी भी पूर्णांक a के लिए

$$\boxed{a \times 0 = 0 = 0 \times a}$$

4. संख्याओं का विभाजकता नियम (Divisibility Rule of Numbers)

I. 2 से विभाजकता : यदि किसी संख्या का इकाई अंक 0, 2, 4, 6, 8 में से हो, तो वह संख्या 2 से विभाज्य होती है।

II. 3 से विभाजकता : यदि किसी संख्या के सभी अंकों का योग, 3 से विभाज्य है, तो वह संख्या भी 3 से विभाजित होती है।

III. 4 से विभाजकता : यदि किसी संख्या के अन्तिम दो अंकों का युग्म, 4 से विभाज्य है, तो वह संख्या भी 4 से विभाजित होती है।

IV. 5 से विभाजकता : यदि संख्या का इकाई अंक 0 अथवा 5 है, तो वह संख्या 5 से पूर्णतया विभाजित होती है।

V. 6 से विभाजकता : यदि संख्या 2 तथा 3 से पूर्णतया विभाज्य है, तो वह संख्या 6 से भी पूर्णतया विभाजित होती है।

VI. 7 से विभाजकता : संख्या का इकाई अंक लेकर उसका दोगुना करें। प्राप्त संख्या को मूल संख्या के शेष अंकों में से घटायें। यदि प्राप्त नयी संख्या शून्य (0) अथवा 7 से विभाजित होने वाली संख्या है, तो मूल संख्या भी 7 से विभाजित होगी।

VII. 8 से विभाजकता : संख्या के अन्तिम तीन अंकों का युग्म, यदि 8 से विभाज्य है, तो वह संख्या भी 8 से विभाजित होगी।

VIII. 9 से विभाजकता : यदि संख्या के सभी अंकों को योग, 9 से विभाजित है, तो वह संख्या भी 9 से विभाजित होगी।

IX. 11 से विभाजकता : यदि संख्या में सम स्थानों पर अंकों के योग तथा विषम स्थानों पर अंकों के योग का अन्तर, 11 से विभाज्य है, तो संख्या भी 11 से विभाज्य होगी।

5. गुणात्मक प्रतिलोम (Multiplicative Inverse)

किसी भी संख्या का गुणात्मक प्रतिलोम वह संख्या होती है, जिसका दिए गए संख्या में गुणा करने पर 1 प्राप्त हो।

उदा. -7 का गुणात्मक प्रतिलोम $= \frac{-1}{7}$

6 का गुणात्मक प्रतिलोम $= \frac{1}{6}$

6. महत्वपूर्ण सूत्र (Important Formulae)

- $(a + b)^2 = a^2 + 2ab + b^2$
- $(a - b)^2 = a^2 - 2ab + b^2$
- $a^2 - b^2 = (a + b)(a - b)$
- $(a + b + c)^2 = a^2 + b^2 + c^2 + 2(ab + bc + ca)$
- $(a + b)^2 + (a - b)^2 = 2(a^2 + b^2)$
- $(a + b)^2 - (a - b)^2 = 4ab$
- $a^3 - b^3 = (a - b)(a^2 + ab + b^2)$
- $a^3 + b^3 = (a + b)(a^2 - ab + b^2)$
- $(a - b)^3 = a^3 - b^3 - 3ab(a - b)$
- $(a + b)^3 = a^3 + b^3 + 3ab(a + b)$
- $a^3 + b^3 = (a + b)^3 - 3ab(a + b)$
- $a^3 - b^3 = (a - b)^3 + 3ab(a - b)$
- $a^3 + b^3 + c^3 - 3abc = (a + b + c)(a^2 + b^2 + c^2 - ab - bc - ca)$

  यदि $a + b + c = 0$ हो, तब $a^3 + b^3 + c^3 = 3abc$
- $(a + b + c)^3 = a^3 + b^3 + c^3 + 3(a + b)(b + c)(c + a)$

7. संख्याओं में भाग संक्रिया (Division Operations in Numbers)

- भाज्य = भाजक × भागफल + शेषफल, जहाँ 0 ≤ शेषफल < भाजक
- शेषफल = भाज्य – भाजक × भागफल
- भाजक = (भाज्य – शेषफल)/भागफल
- भागफल = (भाज्य – शेषफल)/भाजक

उदा. : 808 को किसी संख्या से भाग देने पर भागफल 15 तथा शेषफल 13 प्राप्त होता है। भाजक ज्ञात कीजिए।

हल : भाजक $= \frac{\text{भाज्य} - \text{शेषफल}}{\text{भागफल}} = \frac{808 - 13}{15} = \frac{795}{15} = 53$

8. इकाई का अंक ज्ञात करना (To Find Unit's Digit)

संख्याओं के गुणनफल में तथा संख्या के घातांकीय रूप में इकाई का अंक ज्ञात करने की निम्नलिखित विधि हैं–

I. संख्याओं के गुणनफल में–संख्याओं के गुणनफल में इकाई का अंक ज्ञात करने के लिए सभी संख्याओं के इकाई अंकों का गुणनफल ज्ञात करते हैं। प्राप्त गुणनफल का इकाई अंक, दी गई संख्याओं के गुणनफल में प्राप्त इकाई के अंक के बराबर होता है।

उदा. : 786 × 78 × 687 के गुणनफल में इकाई का अंक ज्ञात करो।

(A) 4 (B) 5 (C) 6 (D) 2

हल (C) **:** यहाँ 786 × 78 × 687 में सभी संख्याओं के इकाई अंकों का गुणनफल करते हैं।

= 6 × 8 × 7 में इकाई का अंक

= 336 में इकाई का अंक = 6

अतः दिए गए गुणनफल में इकाई का अंक 6 होगा।

II. घातांकीय संख्याओं में–

(i) विषम संख्याओं के लिए–

5 को छोड़कर जब इकाई का अंक एक विषम संख्या हो तब,

$(\times\times\times\ 1)^n = (\times\times\times\ 1)$

$(\times\times\times\ 3)^{4n} = (\times\times\times\ 1)$

$(\times\times\times\ 7)^{4n} = (\times\times\times\ 1)$

भाजक) भाज्य (भागफल
शेषफल

$(\times\times\times\ 9)^n = (\times\times\times\ 1)$, यदि n एक सम संख्या है।

$= (\times\times\times\ 9)$, यदि n एक विषम संख्या है।

उदा. : $(27)^{43}$ में इकाई का अंक ज्ञात कीजिए।

(A) 3 (B) 4 (C) 5 (D) 6

हल (A) **:** $(27)^{43}$ में इकाई का अंक

= $(7)^{43}$ में इकाई का अंक

= $(7)^{4 \times 10 + 3}$ में इकाई का अंक

= $(7)^3$ में इकाई का अंक

= 3

(ii) सम संख्याओं के लिए–

$(\times\times\times\ 2)^{4n} = (\times\times\times\ 6)$

$(\times\times\times\ 4)^{2n} = (\times\times\times\ 6)$

$(\times\times\times\ 6)^n = (\times\times\times\ 6)$

$(\times\times\times\ 8)^{4n} = (\times\times\times\ 6)$

उदा. : $(44)^{69}$ में इकाई अंक ज्ञात कीजिए।

(A) 5 (B) 4 (C) 6 (D) 2

हल (B) **:** $(44)^{69}$ में इकाई का अंक

= $(4)^{69}$ में इकाई का अंक

= $(4)^{2 \times 34 + 1}$ में इकाई का अंक

= (6 × 4) में इकाई का अंक = 4

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. यदि संख्या 715*42324, 3 से पूर्णतः विभाज्य है, तो * के स्थान पर सबसे बड़ी पूर्ण संख्या ज्ञात करें।

(A) 3 (B) 2

(C) 5 (D) 8

2. यदि संख्या 'a' और 'b' अभाज्य संख्याएँ हैं, तो निम्नलिखित में से क्या 'a' और 'b' का योग नहीं हो सकता है ? (जहाँ a तथा b भिन्न अभाज्य संख्याएँ हैं।)

(A) 28 (B) 10

(C) 14 (D) 6

3. कौन-सी संख्या, 2310 के सभी अभाज्य गुणनखंडों के योग से एक कम है ?

(A) 33 (B) 25

(C) 29 (D) 27

4. $\frac{3126^{20^{21^{22^{23}\ldots\ldots}}}}{5}$ का शेषफल ज्ञात कीजिए

(A) 0 (B) 1

(C) 4 (D) 2

5. 104, 78 और 260 से पूरी तरह से विभाज्य सबसे छोटी संख्या P है। यदि $P + 40 = Q^2$ है,है, तो Q का धनात्मक मान क्या है ?

(A) 40 (B) 80

(C) 39 (D) 26

6. दो संख्याओं के बीच का अंतर 1086 है। जब हम बड़ी संख्या को छोटी संख्या से विभाजित करते हैं, तो हमें भागफल के रूप में छः और शेषफल के रूप में छः प्राप्त होते हैं। बड़ी संख्या ज्ञात करें।

(A) 1402 (B) 1202

(C) 1502 (D) 1302

7. यदि $2^{305} + 303$ को 9 से विभाजित किया जाता है, तो शेषफल ..... होता है।

(A) 2 (B) 1

(C) 6 (D) 4

8. यदि 9-अंकीय संख्या $5y97405x2$, 72 से विभाज्य है, तो x के सबसे बड़े मान के लिए $(x - 2y)$ का मान ज्ञात करें।

(A) 1 (B) 9

(C) 8 (D) 4

9. दिए गए समीकरण में X का उच्चतम मान कितना होगा ?

5X1 + 6Y8 + 3Z3 = 1472

(A) 3 (B) 4

(C) 6 (D) 8

10. मान लीजिए कि y, 20 और 36 के बीच की एक पूर्ण संख्या है। यदि y दो विशिष्ट अभाज्य संख्याओं (distinct prime numbers) का गुणनफल है, तो y के मान की संख्या है।

(A) 5 (B) 4

(C) 6 (D) 3

11. एक विभाजन क्रिया में, भाजक भागफल का 14 गुना और शेषफल का 7 गुना है। यदि शेषफल 34 है, तो भाज्य क्या होगा ?

(A) 4063 (B) 4080

(C) 4114 (D) 4097

12. एक विभाजन क्रिया में, भाजक भागफल का 32 गुना और शेषफल का 12 गुना है। यदि शेषफल 56 है, तो भाज्य क्या होगा ?

(A) 13,496 (B) 14,168

(C) 14,112 (D) 13,446

व्याख्यात्मक हल

1. (D) 3 की विभाजिता का नियम ⇒ संख्या के अंकों का योग अगर 3 से विभाजित है तो संख्या भी 3 से विभाजित होगी।

$715 * 42324 \Rightarrow \frac{27+1+*}{3}$

$= 1 * \text{शेष}$

* के स्थान पर सबसे बड़ी संख्या = 8

$\Rightarrow \frac{1+8}{3} = 3$

अतः * के स्थान पर सबसे बड़ी पूर्ण संख्या 8 है।

2. (D) a तथा b एक भिन्न–भिन्न अभाज्य संख्याएँ हैं

अभाज्य संख्याएँ = 2, 3, 5, 7, 11..... आदि

$28 = 23 + 5$

$10 = 7 + 3$

$14 = 13 + 2$

अतः 6, 9 और b का योग नहीं हो सकता है।

3. (D) 2310 के अभाज्य गुणनखण्ड

$= 2 \times 3 \times 5 \times 7 \times 11$

गुणनखण्डों का योग

$= 2 + 3 + 5 + 7 + 11$

$= 28$

अभीष्ट संख्या $= 28 - 1 = 27$

4. (B) $\frac{3126^{20^{21^{22^{23}}}.....}}{5}$ का शेषफल

∵ 3126 के इकाई का अंक = 6

तथा 6 के ऊपर जितनी भी घात है उसमें इकाई का मान 6 ही होगा।

अतः शेषफल = $\frac{6}{5}$ का शेषफल

$= \boxed{1}$

5. (A) 104, 78 और 260 से पूरी तरह विभाज्य संख्या इनका LCM होगा

104, 78, 260 का LCM = 1560

अतः $P = 1560$

प्रश्नानुसार,

$P + 40 = Q^2$

$1560 + 40 = Q^2$

$1600 = Q^2$

$Q = 40$

अतः Q का धनात्मक मान 40 है।

6. (D) माना बड़ी संख्या $= x$

छोटी संख्या $= y$

प्रश्नानुसार,

$x - y = 1086$

$x = 6y + 6$

तब

$x - y = 1086$ ...(i)

$x - 6y = 6$ ...(ii)

समी. (1) से

$5y = 1086 - 6$

$5y = 1080$

$y = 216$

$x = 1086 + 216 = 1302$

अतः बड़ी संख्या 1302 होगी।

7. (A) $2^{305} + 303$

यहाँ $\frac{303}{9} = 33\frac{6}{9}$

= शेषफल = 6

तथा $\frac{2^{305}}{9} = \frac{2^2 \times 2^{303}}{9}$

$= \frac{4(2^3)^{101}}{9}$

$= \frac{4(8)^{101}}{9}$

$= \frac{4(9-1)^{101}}{9}$

$= \frac{36m}{9} + \frac{4(-1)^{101}}{9}$

$= 4m - \frac{4}{9}$

यहाँ शेषफल $= -4$

अभीष्ट शेषफल $= 6 - 4 = \boxed{2}$

8. (A) $5y97405x2$

$72 = 8 \times 9$

8 से विभाज्य $\rightarrow 8) 5x2 ($

$x = 1, 5, 9$

x के बड़े मान के लिए $x = 9$

$5y9740592 \rightarrow 9$ से विभाज्य

$y+5+9+7+4+0+5+9+2 = 41+y$

$\frac{41}{9} = 5$ शेष

$y + 5 = 9$

$y = 4$

$(x - 2y) = (9 - 8) = 1$

9. (C)

$$\begin{array}{r} 5\ X\ 1 \\ +\ 6\ Y\ 8 \\ +\ 3\ Z\ 3 \\ \hline 1\ 4\ 7\ 2 \end{array}$$

माना Y तथा Z का मान शून्य है। तब X का अधिकतम मान 6 होगा।

10. (C) प्रश्नानुसार, 20 और 36 के बीच की पूर्ण संख्याएँ = 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35

20 और 36 के बीच की विशिष्ट अभाज्य संख्याओं के गुणनफल वाली पूर्ण संख्याएँ 21, 22, 26, 33, 34, 35

∴ y के मान की संख्या = 6

अतः विकल्प (C) सही है।

11. (B) दिया है,

शेषफल = 34

प्रश्नानुसार

भाजक = 7 × शेषफल

$= 7 \times 34$

$= 238$

भाजक = 14 × भागफल

$238 = 14 \times$ भागफल

भागफल = $\frac{238}{14} = 17$

भाज्य = भाजक × भागफल + शेषफल

$= 238 \times 17 + 34$

$= 4046 + 34$

$= 4080$

अतः विकल्प (B) सही है।

12. (B) दिया है, शेषफल = 56

प्रश्नानुसार,

भाजक = 12 × शेषफल

भाजक = 12 × 56

∴ भाजक = 672 ....(i)

और, भाजक = 32 × भागफल

$672 = 32 \times$ भागफल

∴ 21 = भागफल

{समी. (i) से}

तो, भाज्य = भाजक × भागफल + शेषफल

भाज्य = 672 × 21 + 56

भाज्य = 14,168

अतः विकल्प (B) सही है।

❑❑

अध्याय
1

अंग्रेजी वर्णमाला परीक्षण

इस अध्याय के अन्तर्गत अंग्रेजी वर्णमाला (A-Z) पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं तथा अभ्यर्थी को अंग्रेजी वर्णमाला के सभी 26 अक्षरों के स्थानिक मान तथा इससे सम्बन्धित तथ्य याद होने चाहिए।

अंग्रेजी वर्णमाला से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु–

- वर्ण दो प्रकार के होते हैं–
  - **स्वर**—A E I O U (अंग्रेजी वर्णमाला में स्वरों की संख्या 5 है।)
  - **व्यंजन**—B C D F G H J K L M N P Q R S T V W X Y Z (अंग्रेजी वर्णमाला में व्यंजनों की संख्या 21 है।)
- अर्द्धांश

  अर्द्धांश दो प्रकार के होते हैं–
  - **प्रथम अर्द्धांश**—A B C D E F G H I J K L M (प्रथम अर्द्धांश में कुल 13 अक्षर होते हैं। अतः 1 से 13 तक के अक्षर प्रथम अर्द्धांश में होते हैं।)
  - **द्वितीय अर्द्धांश**— N O P Q R S T U V W X Y Z (द्वितीय अर्द्धांश में कुल 13 अक्षर होते हैं। अतः 14 से 26 तक के अक्षर द्वितीय अर्द्धांश में होते हैं।)
- स्थान

  अंग्रेजी वर्णमाला में, प्रत्येक अक्षर का अपना स्थान होता है। यह स्थान दो क्रमों पर निर्भर करता है।
  - **सीधा क्रम**—इसमें A का स्थान पहला तथा Z का स्थान अन्तिम होता है।

A	B	C	D	E	F	G	H	I	J	K	L	M	N	O	P	Q	R	S	T	U	V	W	X	Y	Z
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26

  - **विपरीत क्रम**—इसमें Z का स्थान पहला तथा A का स्थान अन्तिम होता है।

Z	Y	X	W	V	U	T	S	R	Q	P	O	N	M	L	K	J	I	H	G	F	E	D	C	B	A
26	25	24	23	22	21	20	19	18	17	16	15	14	13	12	11	10	9	8	7	6	5	4	3	2	1

  अंग्रेजी वर्णमाला में प्रत्येक अक्षर एक–दूसरे का विपरीत होता है;
  जैसे–A का विपरीत अक्षर Z, B का Y, C का X, D का W..
  आदि विपरीत अक्षरों का योग हमेशा 27 होता है।
  जैसे–E का विपरीत अक्षर ज्ञात करना है और E का वर्णमाला में 5वाँ स्थान है।
  विपरीत वर्ण = (27 – 5) = 22 (V)

1. अक्षरों के स्थान से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बिन्दु

- यदि दोनों अक्षरों की स्थिति समान दिशा में हो, तब दोनों अक्षरों के क्रमांकों को घटा देते हैं और अक्षर का स्थान प्रारम्भिक स्थिति के अनुसार ज्ञात कर लेते हैं, जैसे–दाएँ से 12वें अक्षर के दाएँ 7वाँ अक्षर, दाएँ से 5वाँ अक्षर होगा।
- यदि दोनों अक्षरों की स्थिति असमान दिशा में हो, तब दोनों अक्षरों के क्रमांकों को जोड़ देते हैं और अक्षर का स्थान प्रारम्भिक स्थिति के अनुसार ज्ञात कर लेते हैं। जैसे–दाएँ से 9वें अक्षर के बाएँ 7वाँ अक्षर, दाएँ से 16वाँ अक्षर होगा।

2. अंग्रेजी शब्दों का व्यवस्थीकरण

अंग्रेजी के शब्दों को वर्णमाला या शब्दकोश (dictionary) के अनुसार क्रम से व्यवस्थित करना ही शब्दों का व्यवस्थीकरण कहलाता है।

उदा. शब्दकोश के अनुसार कौन–सा शब्द चौथे स्थान पर आयेगा?

(A) Propense (B) Prophet
(C) Prong (D) Propine

हल (D) : Pro[p]ense
Pro[p]het
Pro[n]g
Pro[p]ine

'Pro' सभी शब्दों में समान है। 'Pro' के बाद सभी में अक्षर अलग हैं। इन अक्षरों को अंग्रेजी वर्णमाला के अनुसार क्रम में लगाने पर 'n' अक्षर पहले आयेगा। उसके बाद p आयेगा, लेकिन p तीन शब्दों में समान है। अक्षरों को वर्णमाला के अनुसार लगाने पर,

1 2 3 4
Pro[n]g,>Pro[pe]nse,>Pro[ph]et,>Pro[pi]ne

शब्दकोश के अनुसार चौथे स्थान पर Propine आयेगा।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. उस विकल्प का चयन कीजिए जो नीचे दिए गए शब्दों के उस क्रम को निरूपित करता है जिस क्रम में वे अंग्रेजी शब्दकोष में आते हैं।

1. PRISM 2. PRINT
3. PRIOR 4. PRISE
5. PROBE 6. PRIZE

(A) 1, 3, 2, 4, 6, 5
(B) 5, 6, 4, 1, 2, 3
(C) 3, 2, 4, 1, 6, 5
(D) 2, 3, 4, 1, 6, 5

2. किस विकल्प में निम्नलिखित शब्दों का वह क्रम दिया गया है, जिस क्रम में वे अंग्रेजी शब्दकोश में आते हैं ?

1. drain 2. dried
3. dreamt 4. drown
5. drunk

(A) 1, 2, 3, 4, 5 (B) 2, 3, 1, 4, 5
(C) 1, 4, 3, 5, 2 (D) 1, 3, 2, 4, 5

3. किस विकल्प में निम्नलिखित शब्दों का वह क्रम दिया गया है, जिस क्रम में वे अंग्रेजी शब्दकोश में आते हैं ?

1. lastly 2. latex
3. large 4. laminate
5. ladle

(A) 5, 4, 3, 2, 1 (B) 5, 4, 3, 1, 2
(C) 5, 2, 3, 1, 4 (D) 5, 1, 3, 4, 2

4. किस विकल्प में निम्नलिखित शब्दों का वह क्रम दिया गया है, जिस क्रम में वे अंग्रेजी शब्दकोश में आते हैं।

1. micro 2. minute
3. miles 4. mimic
5. miniature

(A) 1, 3, 4, 5, 2 (B) 1, 4, 5, 3, 2
(C) 1, 4, 3, 5, 2 (D) 1, 5, 2, 4, 3

5. किस विकल्प में निम्नलिखित शब्दों का वह क्रम दिया गया है, जिस क्रम में वे अंग्रेजी शब्दकोश में आते हैं।

1. power 2. pour
3. powder 4. pointed
5. polite

(A) 4, 2, 5, 3, 1 (B) 4, 2, 3, 1, 5
(C) 4, 3, 5, 2, 1 (D) 4, 5, 2, 3, 1

6. किस विकल्प में निम्नलिखित शब्दों का वह क्रम दिया गया है, जिस क्रम में वे अंग्रेजी शब्दकोष में आते हैं ?

1. gather 2. garbage
3. gamble 4. garnish
5. gastronomy

(A) 3, 2, 4, 5, 1 (B) 3, 4, 1, 2, 5
(C) 3, 5, 2, 1, 3 (D) 3, 4, 2, 5, 1

7. निम्नलिखित में से कौन–सा विकल्प नीचे दिए गए शब्दों के उस क्रम को निरूपित करता है जिस क्रम में वे अंग्रेजी शब्दकोश में आते हैं ?

1. Breeze 2. Breech
3. Breather 4. Breed
5. Breathe

(A) 5, 2, 3, 4, 1 (B) 5, 3, 2, 1, 4
(C) 3, 5, 2, 4, 1 (D) 5, 3, 2, 4, 1

8. किस विकल्प में निम्नलिखित शब्दों का वह क्रम दिया गया है, जिस क्रम में वे अंग्रेजी शब्दकोश में आते हैं ?

1. Peanut
2. Peasant
3. Peacock
4. Peach
5. Pencil

(A) 4, 3, 1, 2, 5 (B) 4, 3, 5, 1, 2
(C) 3, 4, 5, 1, 2 (D) 3, 4, 1, 2, 5

9. उस सही विकल्प का चयन कीजिए, जो निम्न शब्दों के उस क्रम को दर्शाता है जिस क्रम में वे अंग्रेजी शब्दकोश में मौजूद होते हैं।

I. Thought II. Throating
III. Throttlehold IV. Thorough
V. Thrombocyte

(A) I, IV, II, III, V (B) I, IV, II, V, III
(C) IV, I, II, III, V (D) IV, I, II, V, III

10. उस सही विकल्प का चयन करें, जो दिए गए शब्दों को उस क्रम में दर्शाता है जिस क्रम में वे अंग्रेजी शब्दकोश में दिखाई पड़ते हैं।

I. Tamale
II. Tamagotchi
III. Tamarind
IV. Tamarack
V. Tamable

(A) I, V, II, IV, III (B) II, I, III, IV, V
(C) I, III, IV, V, II (D) V, II, I, IV, III

निर्देश (प्रश्न संख्या 11 से 13 तक)

प्रश्न में एक शब्द दिया गया है। उसके बाद दिये गए वैकल्पिक शब्दों में से उस शब्द को चुनिए, जो दिये गये मूल शब्द के अक्षरों से नहीं बनाया जा सकता।

11. STUPENDOUS

(A) PEN (B) TAPE
(C) STOP (D) DONT

12. ORGANISATION

(A) STATION (B) GAIN
(C) NATION (D) RATION

13. CORRESPONDING

(A) GRINDER (B) CODING
(C) DROPPER (D) DISCERN

निर्देश (प्रश्न संख्या 14 एवं 15 के लिए)

नीचे के प्रत्येक प्रश्न में एक शब्द तथा उसके बाद चार विकल्प दिये गये हैं। चार विकल्पों में से केवल एक ही विकल्प ऐसा है, जो दिये गये अक्षर से बनाया जा सकता है। उस विकल्प को ज्ञात कीजिए।

14. RATIONALISATION

(A) NATIONALIST (B) SITUATION
(C) ASSURE (D) NOTE

15. RECRUITMENT

(A) CROWD (B) UNITE
(C) TIRED (D) RETIRED

व्याख्यात्मक हल

1. (D) दिये गये शब्द अंग्रेजी शब्द कोश में (2, 3, 4, 1, 6, 5) के क्रम में आते हैं।

2. (D) drain → dreamt → dried → drown → drunk

अतः दिये गये शब्द अंग्रेजी शब्दकोश में (1, 3, 2, 4, 5) के क्रम में आते हैं।

3. (B) दिये गये शब्दों को अंग्रेजी शब्दकोष के क्रम में (5, 4, 3, 1, 2) लिखा जायेगा।

4. (A) दिये गये शब्दों को अंग्रेजी शब्दकोश में (1, 3, 4, 5, 2) के क्रम में आते हैं।

5. (D) 1. power
2. pour
3. powder
4. pointed
5. polite

दिये हुए शब्दों में वर्णमाला शब्दकोश के अनुसार व्यवस्थित करने

Pointed, Polite, Pour, Powder, Power
4, 5, 2, 3, 1

अतः विकल्प (D) सही है।

6. (A) gamble → 3
garbage → 2
garnish → 4
gastronomy → 5
gather → 1

7. (C) 1. Breeze
2. Breech
3. Breather
4. Breed
5. Breathe

दिये शब्दों को अंग्रेजी शब्दकोश में व्यवस्थित करने पर,

Breather, Breathe, Breech, Breed, Breeze
5 3 2 4 1

अतः विकल्प (D) सही है।

8. (A) दिये गये शब्द अंग्रेजी शब्दकोश में (4, 3, 1, 2, 5) के क्रम में आते हैं।

9. (D) अंग्रेजी शब्दकोश के अनुसार Thorough पहले उसके बाद Thought फिर Throating उसके बाद Thrombocyte तथा अन्त में Throttlehold आयेगा अतः सही क्रम इस प्रकार है।

Thorough, Thought, Throating, Thrombocyte Throttlehold

10. (D) दिये गये शब्दों को अंग्रेजी शब्दकोश में लगाने पर निम्नलिखित क्रम होगा।

Tamable, Tamagotchi, Tamale, Tamarack, Tamarind

11. (B) 'TAPE' का 'A' मूल शब्द में नहीं है।

12. (A) 'STATION' में दो 'T' हैं, जबकि मूल शब्द में एक ही 'T' है।

13. (C) 'DROPPER' में दो 'P' हैं, जबकि मूल शब्द में एक ही 'P' है।

14. (A) 'SITUATION' का 'U', 'ASSURE' का 'U' और E, 'NOTE' का 'E' मूल शब्द में नहीं है।

15. (B) 'CROWD' का 'O', 'W' और 'D' 'TIRED' का 'D', 'RETIRED' का 'D' मूल शब्द में नहीं है।

❑❑

Chapter 1 Comprehension

Important Questions

Direction (Q. No. 1 to 5)

In the following questions, you have a brief passage with 5 questions following the passage. Read the passage carefully and choose the best answer to each question out of the four alternatives.

Earth is the only planet so far known with the suitable environment for sustaining life. Land, water, air, plants and animals are the major components of the global environment. Population, food and energy are the three fundamental problems facing mankind. Unemployment, inflation, crowding, dwindling resources and pollution are all due to the factors like increasing population, high standard of living, deforestation, etc.

Man has been tampering with the Ecosphere for a very long time and is forced to recognize that environmental resources are scarce. Environmental problems are really social problems. They begin with people as cause and end with people as victims. Unplanned use of resources has resulted in the depletion of fossils, fuels, pollution of air and water, deforestation, which has resulted in ecological imbalance and draining away of national wealth through heavy expenditure on oil and power generation.

1. Increasing population causes :
- (A) unemployment and crowding
- (B) inflation and pollution
- (C) dwindling resources
- (D) unemployment,inflation, crow-ding, dwindling resources and pollution

2. National wealth is drained away by spending heavily on :
- (A) power generation
- (B) fuels
- (C) water and power generation
- (D) oil and power generation

3. The three major components of the global environment are :
- (A) food, energy and population
- (B) high standard of living, crowding and inflation
- (C) land, water and air
- (D) plants, animals and mankind

4. Depletion of fossils and fuels, pollution of air and water and deforestation will never occur in case of :
- (A) improper use of resources
- (B) planned use of resources
- (C) unplanned use of resources
- (D) over use of resources

5. We face the three fundamental problems that are :
- (A) inflation, deforestation and unemp-loyment
- (B) population, deforestation and energy
- (C) population, inflation and food
- (D) population, food and energy

Direction (Q. No. 6 to 10)

Read the passage carefully and choose the best answer to each question out of the four alternatives.

John had never thought much about the origin of wealth or inequalities in life. It was his firm belief that if this world was not good, the next would be good, and this faith sustained him. He was not like some others whom he knew, who would sell their souls to the devil. He always thought of God before doing anything. He lived the life of an honest man. He had not married but did not desire another man's wife. He believed that women weakened men as was described in the story of Samson and Delilah.

6. 'To sell one's soul to the devil' means :
- (A) suppressing one's conscience
- (B) giving up goodness in exchange for evil
- (C) giving up one's honesty for the sake of monetary benefits
- (D) to sell oneself to earn livelihood

7. John thought that women weakened men because :
- (A) he thought that women were evil
- (B) he believed that a woman was a fancy devil
- (C) he thought that a woman would spoil his life
- (D) he was convinced that what the story of Samson and Delilah illustrates is correct

8. It was John's belief that :
- (A) one can be happy only by remaining a bachelor
- (B) the world is a happy place
- (C) there is no other world
- (D) one must lead an honest life

9. By not desiring another man's wife John showed that :
- (A) he wanted to get married
- (B) he was a man of principles
- (C) he felt sorry for other men
- (D) he had no desire for another's wealth

10. From the above passage we understand that John was :
- (A) not highly educated
- (B) a man of simple faith
- (C) a deeply pessimistic man
- (D) a scholar of scriptures

Direction (Q. No. 11 to 15)

Read the following passage carefully and answer that follow

It is not luck but labour that makes men. Luck, says an American writer, is ever waiting for something to turn up "labour with keen eyes and strong will always turns up" something. Luck lies in bed and wishes the postman would bring him news of a legacy; labour turns out at six and with busy pen and ringing hammer lays the foundation of competence. Luck whines, labour watches. Luck relies on chance, labour on character. Luck slips downwards to self-indulgence; labour strides upwards and aspires to independence. The conviction, therefore, is extending that diligence is the mother of good luck; in other words, that a man's success in life will be proportionate to his efforts, to his industry, to his attention to small things.

11. What is the meaning of the word 'legacy'?
- (A) A sad or disappointing news.
- (B) Bankruptcy or misfortune.
- (C) Money or property left to someone in a will.
- (D) None of the above.

12. What would be the synonym of the word 'stride' ?
- (A) Retreat (B) March
- (C) Delay (D) Wait

13. What is the meaning of the proverb 'dilligence is the mother of good luck' ?
- (A) If a person is born in a rich and aristocratic family, he is considered lucky.
- (B) If one works carefully and constantly, one's chances of being successful will be much greater.

(C) Bravery brings good luck.
(D) None of the above.

14. According to the passage what is the most important thing for success ?
(A) Hard work
(B) Only luck
(C) Noble parentage
(D) All of the above

15. Which word in the passage means 'to complain or express disappointment or unhappiness repeatedly' ?
(A) Whine (B) Keen
(C) Aspire (D) Hammer

Direction (Q. No. 16 to 20)

Read the following passage carefully. Answer the questions given below the passage. Choose the appropriate alternatives out of (A), (B), (C) and (D).

One of the most famous monuments in the world, the Statue of Liberty was presented to the United States of America by the people of France. The great statue which was designed by the sculptor Auguste Bartholdi, took ten years to complete. The actual figure was made of copper supported by a metal framework which had been specially constructed by Eiffel. Before it could be transported to the United States, a site had to be found for it and a pedestal had to be built. The site chosen was an island at the entrance of the New York harbour. By 1884, a statue which was 151 feet tall had been erected in Paris. The following year, it was taken to pieces and sent to America. By the end of October 1886, the statue had been put together again and it was officially presented to the American people by Bartholdi. Ever since then, the great monument had been a symbol of liberty for the millions of people who have passed through New York harbour to make their homes in America.

16. The Statue of Liberty was presented to America by :
(A) Eiffel
(B) the people of England
(C) the people of France
(D) the people who made their homes in America

17. The great statue which took ten years to complete was designed by :
(A) Bartholdi
(B) Lutian
(C) Eiffel
(D) A group of sculptors

18. The great statue was taken to pieces because :
(A) it needed a pedestal
(B) it was not complete
(C) it was 151 feet tall
(D) it was a monument

19. What was the site for the great monument to be installed ?
(A) At Atlanta
(B) At the bank of Amazon
(C) Washington D.C.
(D) New York harbour

20. Since October, 1886 it had been a symbol of :
(A) sculptor (B) liberty
(C) fraternity (D) honesty

Direction (Q. No. 21 to 24)

Read the following passage and answer the questions given below:

Beni Ram found Gannu sitting close to her mother's body. Her leathery face was stained with tears. Beni Ram walked up to her slowly, not wanting to scare her. Then he stopped and held out a hand.

'Aa, aa ..... come' he whispered.

The baby elephant looked at him and then turned away. So Beni Ram quietly went home. The next morning, he returned. Now Gannu's head was resting close to her mother's still body. She was looking at her mother out of the corner of her eyes. Beni Ram had brought bananas from his orchard. He held one out to Gannu, but she ignored him.

Beni Ram had no luck with Gannu for two whole days. Each day when he came to collect firewood from the forest, he offered her food. But she wouldn't look at him. Then, on the third day, she raised her head and sniffed his hand with her trunk. Beni Ram felt her soft breath blowing on his palm.

Slowly she got up and followed him. She turned one last time to look at her mother, as if to say good bye.

21. Gannu was a
(A) baby cow (B) baby dog
(C) baby elephant (D) baby sheep

22. Which fruit had Beni Ram brought from his orchard?
(A) bananas (B) guavas
(C) apples (D) pomegranates

23. Beni Ram came to the forest each day to collect.
(A) Fruits (B) Vegetables
(C) Firewood (D) leaves

24. Gannu's leathery face was stained with tears because:
(A) She was ill
(B) Her mother had died
(C) her brother was lost
(D) None of the above

Direction (Q. No. 25 to 28)

Read the following passage and answer the question given below :

Hadoti is comprised of four districts of Rajasthan - namely Baran, Bundi, Jhalawar and Kota. It is said that Hadi Rani, a legendary character was married to Chundawat chieftain of Salumber. The chieftain loved her so much that he felt reluctant to go the battlefield. The Hadi Rani persuaded him to comply with his duty towards his motherland. But for her\love he would not agree. Somehow he agreed. Before leaving the house, he sent a man to his beloved to given him a memento. Out of sheer disgust the Rani Hadi cut her head off the neck and sent it to him.

25. Hadoti is situated in the state :
(A) Rajasthan (B) MadhyaPradesh
(C) maharashtra (D) Utter Pradesh

26. Hadoti is not comprised with district :
(A) Kota (B) Jhalawar
(C) Bundi (D) Jodhpur

27. Who was a legendary character ?
(A) Chundawat chieftain
(B) Hadi Rani
(C) King
(D) Hodoti

28. Hadi Rani sent a memento, it was :
(A) Her head (B) Her ring
(C) Her hand (D) Her thumb

Direction (Q. No. 29 to 32)

Read the following passage and answer the questions that follow.

Vehicles do not move about the roads for mysterious reasons of their own. They move only because people want them to move in connection with the activities which the people are engaged in. Traffic is therefore a 'function of activities' and because, in towns, activities mainly take place in buildings, in towns, activities mainly take place in buildings, traffic in towns is a 'function of buildings'. The implications of this line of reasoning are inescapable.

29. Line 1 of the passage means that the vehicles move on the roads
(A) for reasons difficult to explain
(B) to serve specific purposes of people
(C) in a haphazard fashion
(D) in ways beyond our control.

30. The author says that traffic is a 'function of activities'. He means that :
(A) human activities are taking place.
(B) human activities are dependent on traffic.
(C) traffic is not dependent on human activities.
(D) traffic is connected with human activities.

31. The author suggests by his argument that–
(A) to regulate traffic, more policemen have to be employed
(B) to regulate activities, traffic has to be controlled

(C) to regulate traffic, buildings have to taken into consideration

(D) to understand the traffic problem, we must examine the social context in which it is found

32. By this line of reasoning, the author means :

(A) idea contained is this line

(B) idea contained in anyone line of his argument

(C) the manner of arguing

(D) this row of printed characters

Direction (Q. No. 33 to 36)

Read the following passage and answer the questions that follow :

Books are by far, the most lasting product of human effort. Temples crumble into ruins. Pictures and statues decay, but books survive. Time does not destroy the great thoughts which are as fresh today as when they first passed through the author's mind ages ago. The only effect of time has been to throw out the bad products, for nothing in literature can survive long unless it is really good and of lasting value. Books introduce us to the best society, they bring us into the presence of the greatest minds that have ever lived, we hear what they said and did; we see them as if they were really alive, we sympathise with them, enjoy with them and grieve with them :

33. According to the passage, books like forever because :

(A) They have productive value.

(B) Time does not destroy great thoughts.

(C) They are in printed form.

(D) They have the power to influence people.

34. According to the passage, temples, pictures and statues belong to the same category because :

(A) All of them are beautiful

(B) All of them are substantial.

(C) All of them are likely to decay.

(D) All of them are fashioned by men.

35. Books introduce us into the best society as :

(A) They give us a glimpse of the greatest minds.

(B) They take us to the world of imagination.

(C) They instill in us the qualities of the greatest minds.

(D) They introduce us to elite class of the society.

36. Radha, 'I won't buy a new car'. (Choose the correct word to fill in the blank).

Radha said that she .... buy a new car.

(A) Won't (B) will

(C) wouldn't (D) would

Direction (Q. No. 37 to 41)

Read the following passage and answer the questions that follow :

The moon's role in causing tides is much more high and important than that of the Sun. The reason is that the moon enjoys more proximity to the earth than the sun. As such its force is greater than that of the sun in attracting the surface water. Tides are of immense importance. In trade, navigation and fishing, tides are very useful. During the high tide, the water depth near the coast goes up and helps big ships to reach the ports. Kandla port in Gujarat and Diamond Harbour in West Bengal owe their very existence to the tides only. The significance of both London and Kolkata also depends on the tides. Tides also keep the harbours clear of refuse and mud brought down by rivers and thus they do not allow the harbours to be silted. Commonly, the tidal rivers are navigable. For the purpose of generating electricity, tidal waves are harnessed. Tides do not allow the sea water to be frozen by keeping the sea water in motion. Tides are also made use by the fishermen for sailing into the sea and returning to the harbour. In countries like Canada, U. K., France and Japan, tidal power stations are set up.

37. Why does the moon play a greater role than the sun in causing tides ?

(A) The moon is closer to the earth as compared to the sun.

(B) The moon has greater gravitational pull.

(C) The moon shines in night.

(D) None of the above.

38. How are tides useful for the economy of the country ?

(A) Tides bring treasure of sea with them.

(B) During high tides, big ships can reach the ports thus opening new vistas for business.

(C) Tides destroy enemies of the country.

(D) None of the above.

39. How are tides useful in cold countries ?

(A) They bring fish for eating

(B) They bring water for drinking

(C) They don't allow sea water to be frozen

(D) They keep the port silted.

40. How can tides solve the power problem of the world ?

(A) Electricity is being produced through tidal waves.

(B) Tidal waves keep the steamers in motion.

(C) Tidal waves melt the ice and save power.

(D) None of the above.

41. Which word in the passage means 'to bring under control' ?

(A) Proximity (B) Silted

(C) Immense (D) Harness

Answer Key

1. (D)	**2.** (D)	**3.** (C)	**4.** (B)	**5.** (D)
6. (C)	**7.** (D)	**8.** (D)	**9.** (B)	**10.** (B)
11. (C)	**12.** (B)	**13.** (B)	**14.** (A)	**15.** (A)
16. (C)	**17.** (A)	**18.** (C)	**19.** (D)	**20.** (B)
21. (C)	**22.** (A)	**23.** (C)	**24.** (B)	**25.** (A)
26. (D)	**27.** (A)	**28.** (A)	**29.** (B)	**30.** (D)
31. (D)	**32.** (C)	**33.** (B)	**34.** (C)	**35.** (A)
36. (C)	**37.** (A)	**38.** (B)	**39.** (C)	**40.** (A)
41. (D)				

❑❑

अध्याय 1

संज्ञा

परिभाषा

संज्ञा का शाब्दिक अर्थ है–'सम् + ज्ञा' अर्थात् सम्यक् ज्ञान कराने वाला। संज्ञा का पर्याय है– नाम। अतः किसी भी व्यक्ति, वस्तु, गुण, भाव, स्थिति के नाम को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा को पाँच भागों में वर्गीकृत किया गया है–

- **व्यक्तिवाचक संज्ञा**–जिन संज्ञा शब्दों द्वारा किसी एक व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान का बोध होता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।
  जैसे–ताजमहल, राम, काशी, रामायण आदि।

  विशेष–
  व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग एकवचन के रूप में ही किया जाता है।

- **जातिवाचक संज्ञा**–जिस शब्द से एक ही जाति के समस्त पदार्थों अथवा प्राणियों का बोध हो, वह जातिवाचक संज्ञा के अन्तर्गत आता है।
  जैसे–मनुष्य, डॉक्टर, गाँव, लड़का, अध्यापक आदि।

- **भाववाचक संज्ञा**–जिन संज्ञा शब्दों के द्वारा गुण, दशा, व्यापार या भाव का बोध हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।
  भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण चार प्रकार के शब्दों से किया जा सकता है–

  जातिवाचक से निर्मित भाववाचक संज्ञा–जातिवाचक संज्ञा का भाववाचक संज्ञा में परिवर्तित रूप के उदाहरण निम्नांकित हैं–

जातिवाचक	भाववाचक संज्ञा
पशु	पशुता
प्रभु	प्रभुता
लड़का	लड़कपन

  सर्वनाम से निर्मित भाववाचक संज्ञाएँ–सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा के परिवर्तन के निम्नांकित उदाहरण हैं–

सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा
पराया	परायापन
सर्व	सर्वस्व
अहं	अहंकार

  विशेषण से निर्मित भाववाचक संज्ञाएँ–विशेषण के भाववाचक संज्ञा में परिवर्तित स्वरूप के उदाहरण निम्नांकित हैं–

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
मधुर	मधुरता
ऊँचा	ऊँचाई
सफल	सफलता

  क्रिया से निर्मित भाववाचक संज्ञाएँ–उदाहरण निम्नांकित हैं–

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
खेलना	खेल
सुनना	सुनाई
बुनना	बुनाई
चकमना	चकमा
कमाना	कमाई
मिलना	मिलावट

  अव्यय से निर्मित भाववाचक संज्ञाएँ–उदाहरण निम्नांकित हैं–

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
दूर	दूरी
ऊपर	ऊपरी
धिक्	धिक्कार
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही
निकट	निकटता
नीचे	निचाई
समीप	सामीप्य

- **समुदायवाचक/समूहवाचक संज्ञा**–जिन संज्ञा शब्दों के द्वारा अनेक प्राणियों, पदार्थों आदि के समूह का बोध हो, उन्हें समूहवाचक अथवा समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं।
  जैसे–सेना, कक्षा, भीड़, मेला, पुस्तकालय आदि।

  विशेष–
  यद्यपि समूहवाचक संज्ञा में अनेक प्राणियों या पदार्थों के समूह की कल्पना की जाती है, लेकिन इनका उच्चारण एक ही शब्द में किया जाता है।

- **द्रव्यवाचक संज्ञा**–जिन संज्ञा शब्दों से किसी धातु का बोध हो, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा के अन्दर रखा जाता है।

  विशेष–
  कभी-कभी व्यक्तिवाचक संज्ञा किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं तो उनकी संज्ञा जातिवाचक हो जाती है।
  जैसे–वह लुकमान था अर्थात् अपने समय का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. कौन-सी संज्ञा एकवचन और बहुवचन दोनों में प्रयुक्त होती है?
(A) व्यक्तिवाचक (B) समूहवाचक
(C) जातिवाचक (D) द्रव्यवाचक

2. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) हिंदी में संज्ञा तीन प्रकार की होती हैं– व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक।
(B) जिन शब्दों में लिंग, वचन, पुरुष, कारक, काल के अनुसार परिवर्तन होता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं।
(C) जो किसी मनुष्य की जाति विशेष का परिचय दे, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
(D) जातिवाचक संज्ञा के दो उपभाग हैं– समूहवाचक एवं द्रव्यवाचक।

3. किस विकल्प के सभी शब्द विशेषण से बनी भाववाचक संज्ञाएँ हैं?
(A) महत्त्व, सौंदर्य, प्राथमिकता
(B) मनुजत्व, स्वास्थ्य, नैतिकता
(C) छुटपन, लड़कपन धार्मिकता
(D) धैर्य, गौरव, पशुता

4. निम्नलिखित में से किस संवर्ग में एक शब्द भाववाचक संज्ञा नहीं है?
(A) दोस्ती, व्यक्तित्व, इंसानियत, मर्दानगी
(B) चोरी, बपौती, औचित्य, गहराई
(C) प्रयोग, लालिमा, स्वास्थ्य, विनम्र
(D) प्रताप, भूख, सफेदी, कौशल

5. इनमें सर्वनाम से बनी भाववाचक संज्ञा है–
(A) लिखावट (B) अपनापन
(C) छुटपन (D) लड़कपन

6. इनमें क्रिया से बनी भाववाचक संज्ञा नहीं है–
(A) कमाई (B) लड़ाई
(C) पढ़ाई (D) भलाई

7. इनमें सर्वनाम से बनी भाववाचक संज्ञा है–
(A) समता (B) ममता
(C) बड़प्पन (D) लड़कपन

8. किस विकल्प में सभी संज्ञा-शब्द क्रिया–शब्दों से निर्मित हैं?
(A) शिक्षा, अच्छाई (B) पूजा, जवानी
(C) भूल, हँसी (D) मिठास, चुनाव

9. कौन-सा प्रत्यय लगाने से 'मधुर' विशेषण भाववाचक संज्ञा में परिवर्तित हो जाएगा?
(A) त्व (B) ता
(C) तम (D) पन

10. इनमें से कौन-सा विशेषण संज्ञा से नहीं बना है?
(A) पढ़ाकू (B) रंगीला
(C) प्यारा (D) जोधपुरी

11. इनमें जातिवाचक संज्ञा से बनी भाववाचक संज्ञा कौन-सी है?
(A) लघुता (B) नम्रता
(C) भ्रातृत्व (D) महत्व

12. इनमें विशेषण से बनी भाववाचक संज्ञा कौन-सी है?
(A) मातृत्व (B) शिशुता
(C) छुटपन (D) बचपन

13. निम्नलिखित में से किस विकल्प में सभी शब्द भाववाचक संज्ञा नहीं हैं?
(A) मिठास, शिष्टता, माहात्म्य
(B) राष्ट्रीयता, देवत्व, माधुर्य
(C) नम्रता, दासता, व्यावहारिकता
(D) दानव, मनुष्य, ब्राह्मण

14. निम्नलिखित में से किस विकल्प में सभी जातिवाचक संज्ञाएँ हैं?
(A) भारत, रामायण, मोहन
(B) पुस्तक, पहाड़, नदी
(C) जयपुर, लड़की, बुढ़ापा
(D) गंगा, हिमालय, मनुष्य

15. निम्नांकित में से भाववाचक संज्ञा का उदाहरण है?
(A) भारत (B) भारतीय
(C) भारतीयता (D) भारतवर्ष

16. इनमें क्रियाविशेषण से बनी भाववाचक संज्ञा है–
(A) विशालता (B) क्षमता
(C) ममता (D) शीघ्रता

17. एक ही प्रकार की वस्तुओं का बोध कराने वाले शब्दों को कहा जाता है।
(A) व्यक्तिवाचक संज्ञा (B) भाववाचक संज्ञा
(C) जातिवाचक संज्ञा (D) समानवाचक संज्ञा

18. इनमें कौन-सा विशेषण–शब्द संज्ञा से निर्मित नहीं है?
(A) मानवीय (B) वार्षिक
(C) अधिकाधिक (D) ग्रामीण

19. निम्नलिखित में से किस विकल्प में सभी शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ हैं ?
(A) ममता, बैल, अंकुर
(B) साहित्य, पन्नालाल, हिमालय
(C) आम, साधना, ऊँचाई
(D) गाय, मूर्खता, चालाकी

20. 'तुम्हें धोखा नहीं देना चाहिए था।' वाक्य में 'धोखा' संज्ञा है–
(A) भाववाचक (B) समुदाय वाचक
(C) जातिवाचक (D) व्यक्ति वाचक

21. केवल एकवचन का प्रयोग किस समुदायवाचक संज्ञा में किया जाएगा?
(A) झुंड (B) बादल
(C) शिक्षक (D) अध्यापक

22. इनमें से कौन-सा शब्द जातिवाचक संज्ञा से बना भाववाचक संज्ञा नहीं है?
(A) मजदूरी (B) खुशहाली
(C) दलाली (D) चोरी

23. 'आजकल हर जगह रावण पैदा हो रहे हैं।' रेखांकित शब्द में संज्ञा है–
(A) जातिवाचक (B) व्यक्तिवाचक
(C) वस्तुवाचक (D) भाववाचक

24. जिन भाववाचक संज्ञाओं के अंत में 'हट' होता है, उनका लिंग होता है–
(A) पुल्लिंग (B) स्त्रीलिंग
(C) नपुंसकलिंग (D) उभयलिंग

25. भाववाचक संज्ञा कितने प्रकार के शब्दों से बनती है?
(A) चार प्रकार के (B) तीन प्रकार के
(C) पाँच प्रकार के (D) छः प्रकार के

26. इनमें से कौन-सा शब्द भाववाचक संज्ञा नहीं है ?
(A) मनाही (B) विद्वता
(C) सोना (D) खुशी

27. निम्नलिखित विकल्पों में से किस विकल्प में सभी शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ हैं ?
(A) राम, रामचरितमानस, गंगा
(B) कृष्ण, कामायनी, मिठास
(C) लखनऊ, आम, बुढ़ापा
(D) ममता, वकील, पुस्तक

28. निम्नलिखित में से किस विकल्प में सभी शब्द भाववाचक संज्ञा शब्द हैं ?
(A) अमीर, गरीब, समूह, मिठास
(B) जवानी, खट्टास, पुस्तक, गंगा
(C) रसीला, कड़वाहट, बुढ़ापा, उन्नति
(D) धैर्य, चालाकी, उदासी, सूर्य

29. 'स्वतंत्रता सबको प्यारी होती है।' वाक्य के रेखांकित शब्द का संज्ञा भेद है–
(A) जातिवाचक संज्ञा
(B) भाववाचक संज्ञा
(C) गुणवाचक संज्ञा
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

30. 'शैशव' शब्द कौन-सा संज्ञा पद है ?
(A) भाववाचक (B) जातिवाचक
(C) व्यक्तिवाचक (D) इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला

1. (C)	**2.** (C)	**3.** (A)	**4.** (C)	**5.** (B)
6. (D)	**7.** (B)	**8.** (C)	**9.** (B)	**10.** (A)
11. (C)	**12.** (C)	**13.** (D)	**14.** (B)	**15.** (C)
16. (D)	**17.** (C)	**18.** (C)	**19.** (B)	**20.** (A)
21. (A)	**22.** (B)	**23.** (A)	**24.** (B)	**25.** (C)
26. (C)	**27.** (A)	**28.** (C)	**29.** (B)	**30.** (A)

❑❑